साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

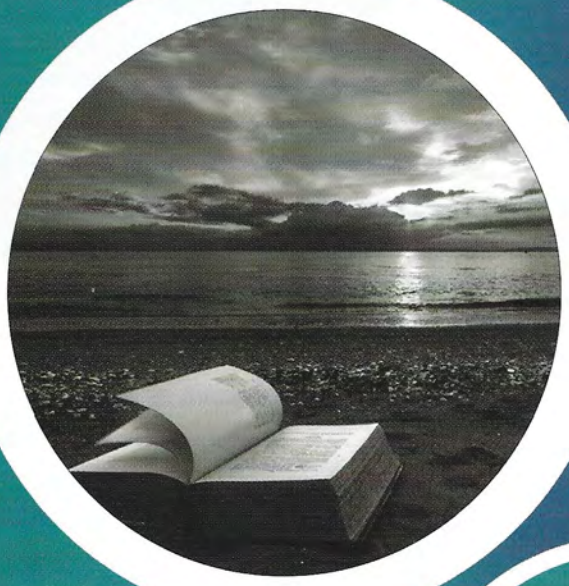

वार्षिकी

2016-2017

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2016-2017

अध्यक्ष : प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
उपाध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार
सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

1.	2016-2017 की प्रमुख गतिविधियाँ	4
2.	साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय	5
3.	परियोजना एवं योजनाएँ	10
4.	2016-2017 में आयोजित शासकीय निकाय, भाषा परामर्श मंडलों तथा क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें	15
5.	वर्ष 2016-2017 में अनुशंसित यात्रा अनुदान	19
6.	साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016, साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2016 तथा साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2016	21
7	साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की सूची	39
8.	2016-2017 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्टें	69
9.	2016-2017 में पुस्तक प्रदर्शनियाँ / पुस्तक मेलों का आयोजन तथा सहभागिता	143
10.	2016-2017 के दौरान प्रकाशित पुस्तकें	149
11.	नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन	179
12.	वार्षिक लेखा 2016-2017	183

2016-2017 की प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2016 प्रदत्त।
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2015 प्रदत्त।
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2016 प्रदत्त।
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2016 प्रदत्त।
- भाषा सम्मान प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यताएँ प्रदत्त।
- एक नई कार्यक्रम शृंखला 'ग्रामालोक' का शुभारंभ।
- अपने इतिहास में पहली बार, अकादेमी ने कारगिल में कार्यक्रम का आयोजन किया।
- देशभर में कुल 651 कार्यक्रमों का आयोजन
  - ❖ 65 संगोष्ठियों, 104 परिसंवादों तथा एक भाषा सम्मेलन का आयोजन।
  - ❖ 150 साहित्य मंच कार्यक्रमों का आयोजन।
  - ❖ 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 8, मुलाक़ात शृंखला के अंतर्गत 6, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 7, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 22, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 27, 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 16, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 11, 21 लेखक सम्मिलन, 12 जनजातीय और वाचिक साहित्य कार्यक्रम, 15 पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मिलन, 18 नारी चेतना, 14 मेरे झरोखे से, 24 लेखक से भेंट, 12 व्यक्ति और कृति, 16 अनुवाद कार्यशालाओं तथा 2 सृजनात्मक लेखन कार्यशालाओं के अलावा 100 से अधिक विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 618 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2016-17 में 158 पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन एवं सहभागिता।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 2140 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 4 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 127 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 4 अंकों का प्रकाशन।

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार अर्पण तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं में वर्षभर पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 हज़ार से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल है, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी बाल साहित्य की उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/अदाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं का संचरण एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन्हें साहित्य अकादेमी की औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यता प्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कार्यों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि अनुवाद (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें

अकादेमी की सामान्य परिषद् में निन्यानवे सदस्य होते हैं, जिसका गठन निम्नांकित ढंग से होता है–

(1) साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष।
(2) साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष (जिनका निर्वाचन इसके सदस्यों में से होता है)।
(3) वित्तीय सलाहकार।
(4) भारत सरकार द्वारा नामित पाँच व्यक्ति।
(5) भारत के संविधान में उल्लिखित प्रत्येक राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के पैंतीस प्रतिनिधि।
(6) साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के चौबीस प्रतिनिधि।
(7) भारत के विश्वविद्यालयों के बीस प्रतिनिधि।
(8) साहित्य-क्षेत्र में अपने उत्कर्ष के लिए परिषद् द्वारा निर्वाचित आठ व्यक्ति।
(9) संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, भारतीय प्रकाशकों तथा राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फ़ाउंडेशन का क्रमशः एक-एक प्रतिनिधि।

कार्यकारी मंडल

कार्यकारी मंडल का गठन निम्नलिखित सदस्यों से होगा–

(1) साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष।
(2) साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष।
(3) वित्तीय सलाहकार।
(4) भारत सरकार द्वारा परिषद् के लिए मनोनीत सदस्यों में से दो सदस्य।
(5) भारत के संविधान में परिगणित और अकादेमी द्वारा मान्य भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए सामान्य परिषद् के सदस्यों में से निर्वाचित एक-एक व्यक्ति।

जिसका उल्लेख पूर्ववर्ती वाक्य में किया गया है, भाषाओं के प्रोत्साहन हेतु अध्यक्ष अपने विवेक द्वारा सामान्य परिषद् के किसी भी सदस्य को कार्यकारी मंडल की किसी भी बैठक में आमंत्रित कर सकते हैं तथा उसको अकादेमी की गतिविधियों में शामिल कर सकते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में

काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित हैं), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखने वाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (यह एक नया कार्यक्रम है, जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा इंफ़ाल में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है। हाल ही में साहित्य अकादेमी ने 'ग्रामालोक' कार्यक्रम प्रारंभ किया है, जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में साहित्य को प्रोत्साहित किया जा सके।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, एनसाइक्लोपीडिया तथा संकलनों जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होनेवाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

सामान्य परिषद्

अकादेमी की चरम सत्ता सामान्य परिषद् में न्यस्त है। साहित्य अकादेमी की व्यापक नीति है और उसके कार्यक्रम के मूलभूत सिद्धांत परिषद् द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और उन्हें कार्यकारी मंडल के प्रत्यक्ष निरीक्षण में क्रियान्वित किया जाता है। प्रत्येक भाषा के लिए परामर्श मंडल है तथा प्रत्येक भाषा परामर्श मंडल में दस प्रख्यात लेखक और विद्वान होते हैं तथा उन्हीं के परामर्श पर तत्संबंधी भाषा का विशिष्ट कार्यक्रम नियोजित एवं कार्यान्वित होता है।

सामान्य परिषद् का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है। अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कार्यकारी मंडल के सदस्यों और वित्त समिति के लिए सामान्य परिषद के एक प्रतिनिधि का निर्वाचन परिषद् द्वारा किया जाता है। विभिन्न भाषाओं के परामर्श मंडल कार्यकारी मंडल द्वारा नियुक्त किए जाते हैं।

वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी. के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013-2017 के लिए पुनर्गठित सामान्य परिषद् द्वारा प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को 2013 में अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाईस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिऴ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय ग्यारह भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस. एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िया में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ.बी.आर. आंबेडकर वीधी, बेंगळूरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थ. ानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 से भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों की सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं, जिन्होंने उनके जीवन को बदल दिया, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का बीज होगा, जो आम पाठकों के लिए आनन्द का विषय होगा और साहित्यिक अनुसंधान- कर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी के द्वारा अब तक 124 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध हैं।

अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, के. आर. कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक और महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक क़रार किया है। उसके अनुसार कार्य प्रगति पर है।

नेशनल बिब्लियोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की कार्यकारी मंडल की 19 अगस्त 2002 को हुई बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप, एन.बी. आई.एल. की दूसरी शृंखला में सन् 1954-2000 तक का काल खंड सम्मिलित है। यह पुस्तक विद्वानों, पुस्तकालय

के पाठकों, प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं तथा उन व्यक्तियों के लिए कारगर सिद्ध होगी, जो पुस्तकों को संदर्भिका के रूप में देखने की रुचि रखते हैं।

इसकी दूसरी शृंखला में, 1 जनवरी 1954 से 31 दिसंबर 2000 तक के मध्य प्रकाशित साहित्यिक महत्त्व एवं साहित्य के क्षेत्र और अन्य विषयों में स्थायी मूल्यों को वहन करनेवाली पुस्तकें सम्मिलित हैं।

इस परियोजना के अंतर्गत 22 भारतीय भाषाओं की ग्रंथ-सूची का संकलन बनाने की योजना है। इस संदर्भ में 22 भाषाओं के विशेषज्ञों को अनुबंधित किया गया है। उक्त कार्य संकलन के विभिन्न स्तरों पर किया जा रहा है।

अनुवाद केंद्र

अकादेमी ने बेंगळूरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्व क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटनेवाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िया, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली

शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादन मंडल तैयार किया गया है। एक केंद्रीय संपादन मंडल का भी गठन किया गया है, जो पांडुलिपि के निर्माण एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा निर्देश तैयार करेगा तथा उसकी निगरानी करेगा।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी की एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कार्यों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवाकर, कर रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन चुकी है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य करने हेतु विश्वसनीय शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया है।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िया, मैथिली-ओड़िया तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफ़ाल में पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तर वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तर वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केन्द्र पूर्वोत्तर जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबोराक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिज़िटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 13219 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2016-2017 में पुस्तकालय के 531 नए सदस्य बने हैं तथा 2140 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय का कुल संग्रह 1,72,000 से भी अधिक है।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को भी बदला गया है। वेब ओपीएसी को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजिटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कम्प्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WEBOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। हूज़' हू ऑफ़ इंडियन राईटर्स जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi-gov.in/sahitya-akadmi/SA Search system/sauses पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्ट्रन ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी पत्रिका पर आधारित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

साहित्य अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों में भी पुस्तकालय हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WEBOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

2016–2017 में आयोजित शासकीय निकाय, भाषा परामर्श मंडलों एवं क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
16 जून 2016	इंफ़ाल
21 दिसंबर 2016	नई दिल्ली
21 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
16 जून 2016	इंफ़ाल
22 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली

वित्त समिति की बैठकें

तिथि	स्थान
10 जून 2016	नई दिल्ली
12 दिसंबर 2016	नई दिल्ली

भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

भाषा	तिथि	स्थान
असमिया	17 मार्च 2016	गुवाहाटी
असमिया	17 जनवरी 2017	कोलकाता
बाङ्ला	16 मार्च 2016	गुवाहाटी
बाङ्ला	17 जनवरी 2017	कोलकाता
बोडो	17 मार्च 2016	गुवाहाटी
बोडो	12 फ़रवरी 2017	कोलकाता
डोगरी	12 मई 2016	जम्मू
डोगरी	12 जनवरी 2017	नई दिल्ली
अंग्रेज़ी	6 मई 2017	दिल्ली
अंग्रेज़ी	17 जनवरी 2017	कोलकाता
गुजराती	13 दिसंबर 2015	अहमदाबाद
गुजराती	30 जनवरी 2017	मुंबई
हिंदी	14 फ़रवरी 2016	नई दिल्ली
हिंदी	20 जनवरी 2017	पोर्ट ब्लेयर
कन्नड	13 अप्रैल 2016	बेंगळूरु
कन्नड	25 जनवरी 2017	बेंगळूरु
कश्मीरी	14 मई 2016	श्रीनगर
कश्मीरी	20 फ़रवरी 2017	नई दिल्ली
कोंकणी	23 अप्रैल 2016	मुंबई
कोंकणी	29 जनवरी 2017	मुंबई
मैथिली	10 मई 2016	नई दिल्ली
मैथिली	18 जनवरी 2017	कोलकाता
मलयाळम्	16 अप्रैल 2016	कोच्चि
मलयाळम्	14 फ़रवरी 2017	कोच्चि
मणिपुरी	4 मार्च 2016	इंफ़ाल
मणिपुरी	21 जनवरी 2017	मणिपुर
मराठी	23 अप्रैल 2016	मुंबई
मराठी	30 जनवरी 2017	मुंबई

नेपाली नेपाली	18 मार्च 2016 18 जनवरी 2017	गुवाहाटी कोलकाता
ओड़िया ओड़िया	1 मई 2016 18 जनवरी 2017	भुवनेश्वर कोलकाता
पंजाबी पंजाबी	10 मई 2016 29 जनवरी 2017	दिल्ली मुंबई
राजस्थानी राजस्थानी	16 मई 2016 4 फ़रवरी 2017	उदयपुर नई दिल्ली
संस्कृत संस्कृत	21 मार्च 2016 27 जनवरी 2017	नई दिल्ली नई दिल्ली
संताली संताली	18 मार्च 2016 12 जनवरी 2017	गुवाहाटी नई दिल्ली
सिंधी सिंधी	24 अप्रैल 2016 15 फ़रवरी 2017	मुंबई मुंबई
तमिऴ तमिऴ	5 मई 2016 6 फ़रवरी 2017	चेन्नै चेन्नै
तेलुगु तेलुगु	6 अप्रैल 2016 5 फ़रवरी 2017	हैदराबाद हैदराबाद
उर्दू उर्दू	7 मई 2016 29 जनवरी 2017	हैदराबाद मुंबई
अनुवाद केंद्र	25 जनवरी 2017	बेंगळूरु

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें (2016-2017)

उत्तरी क्षेत्रीय मंडल उत्तरी क्षेत्रीय मंडल	23 मई 2016 18 मई 2017	दिल्ली नई दिल्ली
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	7 जून 2016 6 मई 2017	कोलकाता कोलकाता
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	3 जून 2016 9 मई 2017	मुंबई मुंबई
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	11 जून 2016 15 अप्रैल 2017	बेंगळूरु हैदराबाद

2016-2017 में अनुशंसित यात्रा अनुदान

असमिया

देब भूषण बर'
आकाश दीप्त ठाकुर
रत्नोत्तमा दास विक्रम
बर्णाली बरगोहाईं
प्रतीम बरुआ

बाङ्ला

श्रोता प्रोमिता भौमिक
श्रीमती रोम्यानी दासगुप्त
श्री सौनव बसु
श्रीमती उषाशी भट्टाचार्य
श्रीमती स्वागत दासगुप्त
श्रीमती सम्राज्ञी बनर्जी

बोडो

श्रीमती प्रतिमा ब्रह्म
श्री देतसंग सोरगियारी
श्री अशोक बसुमतारी
श्री जोंगसार नार्जारी
श्री दैथुन बोरो

डोगरी

श्री पंकज गुप्ता
श्री जोगेंदर पॉल जिंदर
श्री धीरज केसर
श्री राजेंद्र रांझा
श्री रोशन लाल बराल

अंग्रेज़ी

कोई नहीं

गुजराती

श्री चिंतन शेलत
श्री जिग्नेश ब्रह्मभट्ट
श्री पीयूष ठाकुर

हिंदी

कोई नहीं

कन्नड

श्री शिवकुमारस्वामी
सुश्री ममता आर्सीकेरे
सुश्री गोरुरु पंकज
श्री शशिराज कावूर
श्री बसवराजप्पा बेवीनर्मदा

कश्मीरी

कोई नहीं

कोंकणी

श्री गोरक सिरसत
सुश्री अंतरा भिड़े
सुश्री संपदा कुनकोलिएंकर
श्री व्यंकटेश नायक

मैथिली

श्री राहुल कुमार झा
सुश्री शीतल कुमारी
श्री आदित्य भूषण मिश्र
श्री सोनू कुमार झा

मलयाळम्

श्री सी. अनूप

मणिपुरी

श्री बिरला सिंह
श्री ख. कृष्णमोहन सिंह
श्री अरिबम रिमीता देवी

मराठी

श्री वीर राठौड़
श्री फेलिक्स डिसूज़ा
श्री अनिल साबले
श्री गोपीचंद धनगार
श्री चंद्रकांत बाबर

नेपाली

सुश्री मोनिका राना
श्री हनोक थापा
सुश्री सरिता समदर्शी
श्री देवराज शर्मा

ओड़िया

डॉ. संतोष कुमार महांति
श्री दिव्यज्योति पाणि
श्री सुजित कुमार सत्पथी
श्री प्रद्युम्न साहु
श्री प्रियव्रत पंडा

पंजाबी

श्री प्रगत सिंह सतौज
श्री जगमेल सिंह

श्री राजपाल सिंह
श्री दलजीत सिंह
श्री सुखबिंदर सिंह

राजस्थानी

श्री गौरी शंकर
श्री संजय कुमार शर्मा

संस्कृत

कोई नहीं

संताली

सुश्री सोनाली हांसदा
सुश्री कस्तूरी हांसदा

सुश्री देवगी मुर्मू
श्री लख्या टुडु
श्री सालगे हांसदा

सिंधी

सुश्री रेखा पोहाणी
सुश्री मोनिका पंजवाणी
श्री जयेश शर्मा
सुश्री मंजू मिरवाणी

तमिऴ

श्री वा. मू. कोमू
सुश्री लक्ष्मी सरवणकुमार
सुश्री मानुषी

सुश्री पूर्णा
श्री अंडनूर सुर

तेलुगु

श्रीमती एम. देवेंद्र
सुश्री येंदलूरी मनसा
श्री वाई. सैयदुलु
श्री नंद किशोर
श्री पिंगली चैतन्य

उर्दू

सुश्री नुसरत अमीन
सुश्री नज़मीन
श्री अब्दुल कवि

उपर्युक्त अनुशंसित लेखकों में से वर्ष 2016-2017 के दौरान निम्नलिखित लेखकों (1-7) ने योजना का लाभ उठाया और शेष लेखक (8-13) जल्द ही इस योजना का लाभ उठाएँगे।

1. श्री प्रगत सिंह सतौज
2. श्रीमती एम. देवेंद्र
3. सुश्री मोनिका राना
4. श्री हनोक थापा
5. सुश्री सरिता शर्मा
6. श्री देवराज शर्मा
7. श्री दीप नारायण मंडल
8. श्री युगांक पुंडलिक
9. सुश्री ममता परवाणी
10. श्री तपन महापात्र
11. श्री प्रदीप कुमार
12. सुश्री संगीता एम. खिलवाणी
13. दिव्यज्योति वाणी

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016, साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016, साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2016 तथा साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2016

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2016**

21 दिसंबर 2016 को नई दिल्ली साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2016 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2010 से 31 दिसंबर 2014 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2016** से सम्मानित लेखक

असमिया : ज्ञान पुजारी, *मेघमालार भ्रमण* (कविता-संग्रह)

बाङ्ला : नृसिंह प्रसाद भादुड़ी, *महाभारतेर अष्टादशी* (निबंध)

बोडो : अंजु (अंजली बसुमतारी), *आं माबोरै दं दासों* (कविता-संग्रह)

डोगरी : छत्रपाल, *चेता* (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : जेरी पिंटो, *एम एंड द बिग हूम* (उपन्यास)

गुजराती : कमल वोरा, *अनेकएक* (कविता-संग्रह)

हिंदी : नासिरा शर्मा, *पारिजात* (उपन्यास)

कन्नड : बोलवार महमद कुंञि, *स्वतंत्रायदा ओटा* (उपन्यास)

कश्मीरी : अज़ीज़ हाजिनी, *आने ख़ानः* (समालोचना)

कोंकणी : एड्वीन जे.एफ़. डिसोजा, *काळे भांगार* (उपन्यास)

मैथिली : श्याम दरिहरे, *बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम* (कहानी-संग्रह)

मलयाळम् : प्रभा वर्मा, *श्याममाधवम* (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : मोइराङ्थेम राजेन, *चेपथरबा इशिङपुन* (कहानी-संग्रह)

मराठी : आसाराम मारोतराव लोमटे, *आलोक* (कहानी-संग्रह)

नेपाली : गीता उपाध्याय, *जन्मभूमि मेरो स्वदेश* (उपन्यास)

ओड़िया : पारमिता सत्पथी, *प्राप्ति* (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : स्वराजबीर, *मस्सया दी रात* (नाटक)

राजस्थानी : बुलाकी शर्मा, *मरदजात अर दूजी कहाणियाँ* (कहानी)

संस्कृत : सीतानाथ आचार्य, *काव्यनिर्झरी* (कविता)

संताली : गोबिंदचंद्र माझी, *नाल्हा* (कविता-संग्रह)

सिंधी : नंदलाल जवेरी, *अखर कथा* (कविता-संग्रह)

तमिऴ : वन्नदासन, *ओरु सिरु इसै* (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : पापिनेनि शिवशंकर, *रजनीगन्धा* (कविता-संग्रह)

उर्दू : निज़ाम सिद्दिक़ी, *माबाद-ए-जदीदियत से नये अह्द की तखलीक़ियत तक* (समालोचना)

ज्ञान पुजारी

जेरी पिंटो (जेरोनिमो पिंटो)

अज़ीज़ हाजिनी

नृसिंह प्रसाद भादुड़ी

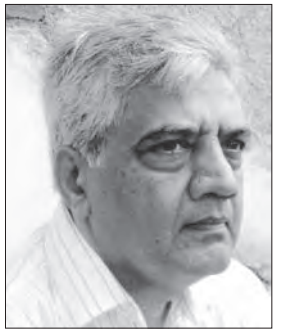

कमल वोरा

एड्वीन जे.एफ. डिसोजा

अंजली बसुमतारी (अंजु)

नासिरा शर्मा

श्याम दरिहरे

छात्र (जोगिंदर पाल सर्राफ़)

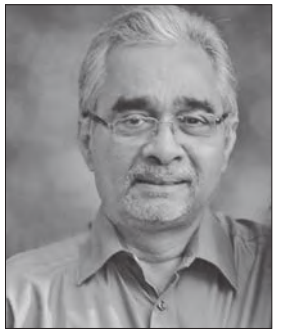

बोलवार महमद कुंजि

प्रभा वर्मा

मोइराङ्थेम राजेन

स्वराजबीर

नंदलाल जवेरी

आसाराम मारोतराव लोमटे

बुलाकी शर्मा

वन्नदासन (एस. कल्याणसुंदरम)

गीता उपाध्याय

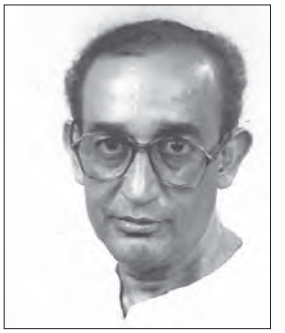

सीतानाथ आचार्य

पापिनेनि शिवशंकर

पारमिता शतपथी

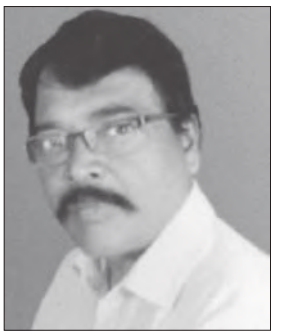

गोबिंद चंद्र माझी

निज़ाम सिद्दीक़ी

साहित्य अकादेमी पुरस्कार **2016** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. डॉ. ध्रुव ज्योति बोरा
2. प्रो. मालिनी गोस्वामी
3. श्री समीर तांती

बाङ्ला
1. श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
2. प्रो. चिन्मय गुहा
3. श्री जय गोस्वामी

बोडो
1. डॉ. अंजलि प्रभा दैमारी
2. श्री बिश्वेश्वर बसुमतारी
3. डॉ. रीता बोरा

डोगरी
1. प्रो. चंपा शर्मा
2. श्री देशबंधु डोगरा 'नूतन'
3. श्री वेद राही

अंग्रेज़ी
1. श्री किरण नगरकर
2. प्रो. सुसी जे. थारु
3. प्रो. ए.एन. द्विवेदी

गुजराती
1. श्री हसमुख बारडी
2. श्री सतीश व्यास
3. डॉ. शिरीष जे. पांचाल

हिंदी
1. प्रो. पुरुषोत्तम अग्रवाल
2. डॉ. रामदरश मिश्र
3. डॉ. रमेशचंद्र शाह

कन्नड
1. डॉ. एच.सी. बोरलिंगय्या
2. श्री एल. हनुमन्तय्या
3. श्री एस.जी. सिद्धरमय्या

कश्मीरी
1. प्रो. मरगूब बनिहाली
2. बशीर भद्रवाही
3. श्री गुलाम नबी आतश

कोंकणी
1. सुश्री मीना काकोदकर
2. श्री नगेश करमाली
3. श्री शरतचंद्र शिनॉय

मैथिली
1. डॉ. भगवानजी चौधरी
2. डॉ. देवेंद्र झा
3. डॉ. रूपनारायण चौधरी

मलयाळम्
1. श्री अलनकोडे लीलाकृष्णन
2. डॉ. एम. लीलावती
3. प्रो. वी. सुकुमारन

मणिपुरी
1. डॉ. हाओबम नलिनी देवी
2. प्रो. ई. सोनामणि सिंह
3. श्री रघु लीशङथम

मराठी
1. डॉ. गंगाधर पानतावणे
2. डॉ. मनोहर जगन्नाथ जाधव
3. डॉ. चंद्रकांत पाटील

नेपाली
1. डॉ. गोकुल सिन्हा
2. श्री मनबहादुर प्रधान
3. श्री सानू लामा

ओड़िया
1. डॉ. बाबाजी चरण पटनायक
2. श्रीमती बीणापाणि महांति
3. श्री रमाकांत रथ

पंजाबी
1. श्री दर्शन बुट्टर
2. श्री गुरबचन सिंह भुल्लर
3. श्री प्रेम प्रकाश

राजस्थानी
1. श्री आईदान सिंह भाटी
2. डॉ. गोरधन सिंह शेखावत
3. डॉ. श्रीलाल मोहता

संस्कृत
1. डॉ. बलदेवनंद सागर
2. डॉ. एस. रंगनाथ
3. डॉ. एन. वीज़ीनाथन

संताली
1. श्री छोटे राम माझी
2. श्री रामचंद्र हेम्ब्रम
3. श्री सलखू मुर्मू

सिंधी
1. श्री लक्ष्मण दुबे
2. श्री मोहन हिमथाणी
3. डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदाणी

तमिळ
1. डॉ. डी. सेल्वराज
2. डॉ. के.एस. सुब्रह्मण्यम
3. डॉ. एम. रामलिंगम

तेलुगु
1. डॉ. कोलकलुरी इनोक
2. श्री मुनिपल्ले राजु
3. प्रो. एस.वी. रामाराव

उर्दू
1. प्रो. अतीकुल्लाह
2. श्री कृष्ण कुमार तूर
3. श्री फे शीन एज़ाज़

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2016**

21 फ़रवरी 2017 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2016 के लिए 22 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अंग्रेज़ी और मलयाळम् के पुरस्कार की घोषणा बाद में की गई। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2014 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

अनुवाद पुरस्कार **2016** से सम्मानित अनुवादक

असमिया : तपेश्वर शर्मा, *उपनिषद-पद्यानुवाद* (उपनिषद, कविता—संस्कृत, विभिन्न लेखक)

बाड्ला : गीता चौधुरी, *सत्येर अन्वेषण* (सत्यना प्रयोगो अथवा आत्मकथा, गुजराती आत्मकथा—मोहनदास करमचंद गाँधी)

बोडो : बीरहास गिरि बसुमातारी, *थेंफाखि तहसिलदारनि थामानि थुंग्रि* (थेंफाखि तहसिलदारर तामर तर'वाल, असमिया उपन्यास—मामोनि रायसम गोस्वामी)

डोगरी : कृष्ण शर्मा, *काले कां ते काला पानी* (कव्वे और काला पानी, हिंदी कहानी—निर्मल वर्मा)

अंग्रेज़ी : अनिरुद्धन वासुदेवन, *वन पार्ट वीमैन*, (माधोरु बागान, तमिऴ उपन्यास—पेरुमल मुरुगन)

गुजराती : वसंत जी. परीख, *गीत गोविंद* (गीत गोविंद, संस्कृत कविता—जयदेव)

हिंदी : पंचापकेश जयरामन, *संत वाणी (प्राचीन तमिऴ संत काव्य), खंड 3 एवं 4* (संतवाणी-नालायिर दिव्य प्रबंधम्, तमिऴ कविता—आलवार संत)

कन्नड : ओ.एल. नागभूषण स्वामी, *ए.के. रामानुजन आयद प्रबंधगळु* (सेलेक्टेड एसेज़ ऑफ़ ए.के. रामानुजन, अंग्रेज़ी निबंध—ए.के. रामानुजन)

कश्मीरी : क़ाज़ी हिलाल दिलनवी, *अख़ ख़्वाब अख़ तस्वीर* (एक और द्रौपदी, हिंदी कविता—आशा शैली)

कोंकणी : मीना काकोडकार, *सांवळ्यां रेगो* (द शैडो लाइन्स, अंग्रेज़ी उपन्यास—अमिताभ घोष)

मैथिली : रेवती मिश्र, *मिथिलाक लोक साहित्यक भूमिका* (इंट्रोडक्शन टु द फोक लिटरेचर ऑफ़ मिथिला, अंग्रेज़ी आलोचना—जयकांत मिश्र)

मलयाळम् : एन.के. देशम, *गीतांजलि* (गीतांजिल, अंग्रेज़ी गीत-संग्रह—रवींद्रनाथ ठाकुर)

मणिपुरी : अनीता निङ्गोमबम, *ईबा लोईशिनखिद्रवा पूंसि वारी* (आधा लेखा दस्तावेज, असमिया आत्मकथा—इंदिरा गोस्वामी)

मराठी : मिलिंद चंपानेरकर, *लोकशाहीवादी अम्मीस दीर्घपत्र* (एम्मी : लेटर टु ए डेमोक्रेटिक मदर, अंग्रेज़ी आत्मकथा—सईद अख्तर मिर्ज़ा)

नेपाली : ज्ञानबहादुर छेत्री, *खोजी* (तलाश, हिंदी कविता—ब्रजेंद्र त्रिपाठी)

ओड़िया : मोनालिसा जेना, *आशीर्वादर रंग* (आशीर्वादर रंग अरुण शर्मा, असमिया उपन्यास—अरुण शर्मा)

पंजाबी : अमरजीत कौंके, *औरत मेरे अंदर* (स्त्री मेरे भीतर, हिंदी कविता—पवन करण)

राजस्थानी : रवि पुरोहित, *जीवो म्हारा साँवरा* (मेरे साईंया जिओ, पंजाबी कविता—भाई वीर सिंह)

संस्कृत : राणि सदाशिवमूर्ति, *विविक्तपुष्पकरण्दः*, (ओंतारी पूला बुट्टा, तेलुगु कविता—राळ्ळबंडि कविता प्रसाद)

संताली : गणेश ठाकुर हांसदा, *भोग्नडी रेयाक दहिरे* (भग्नडीहिर माठे, बाड्ला उपन्यास—पांचु गोपाल भादुड़ी)

सिंधी : मोहन गेहाणी, *भरत नाट्य शास्त्र* (भरत नाट्य शास्त्र, अंग्रेज़ी साहित्यिक आलोचना—कपिला वात्स्यायन)

तमिऴ : जी. पूर्णचंद्रन, *पोरुप्पुमिक्क मणितर्कळ* (सीरियस मेन, अंग्रेज़ी उपन्यास—मनु जोसेफ)

तेलुगु : अशोक तंकशला, *वल्लभभाई पटेल* (पटेल : ए लाइफ, अंग्रेज़ी जीवनी—राजमोहन गाँधी)

उर्दू : हक़्क़ानी अलक़ासमी, *आंगलियात* (आंगलियात, गुजराती उपन्यास—जोसेफ़ मैकवान)

तपेश्वर शर्मा

अनिरुद्धन वासुदेवन

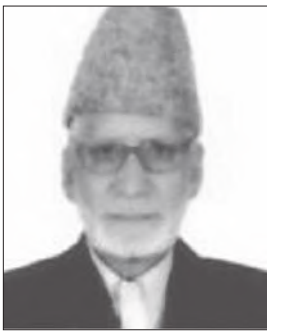

क़ाज़ी हिलाल दिलनवी

गीता चौधुरी

वसंत जी. परीख

मीना काकोडकार

बीरहास गिरि बसुमातारी

पंचापकेश जयरामन

रेवती मिश्र

कृष्ण शर्मा

ओ.एल. नागभूषण स्वामी

एन.के. देशम

अनीता निङ्गोमबम

अमरजीत कौंके

मोहन गेहाणी

मिलिंद चंपानेरकर

रवि पुरोहित

जी. पूर्णचंद्रन

ज्ञानबहादुर छेत्री

राणि सदाशिवमूर्ति

अशोक तंकशला

मोनालिसा जेना

गणेश ठाकुर हांसदा

हक़्क़ानी अलक़ासमी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार **2016** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
1. श्री नीलम कुमार
2. डॉ. डेका
3. श्री प्रदीप आचार्य

बाङ्ला
1. श्री विप्लव चक्रवर्ती
2. प्रो. विश्वनाथ राय
3. प्रो. ईशा दे

बोडो
1. श्री अरबिन्द उज़िर
2. श्री गोबिन्द बसुमतारी
3. सुश्री रूपाली स्वरगियारी

डोगरी
1. श्री जितेंद्र उधमपुरी
2. श्री नरसिंह देव जम्वाल
3. प्रो. शशि पठानिया

अंग्रेज़ी
1. प्रो. आर.के. वेंकटचलपति
2. डॉ. गीता हरिहरन
3. प्रो. के. सच्चिदानंदन

गुजराती
1. श्री दिलीप झावेरी
2. डॉ. प्रसाद ब्रह्मभट्ट
3. प्रो. विजय पंड्या

हिंदी
1. प्रो. ए. अच्युतन
2. श्री दामोदर खड़से
3. डॉ. सुनीता जैन

कन्नड
1. डॉ. सी.एन. रामचंद्रन
2. श्री पुरुषोत्तम बिलिमाले
3. डॉ. सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी

कश्मीरी
1. श्री फ़याज़ तिलगामी
2. डॉ. रूप कृष्ण भट्ट
3. प्रो. शाद रमज़ान

कोंकणी
1. श्री दिलीप बोरकर
2. श्री माधव बोरकर
3. श्री पॉल मोरैस

मैथिली
1. डॉ. इंदिरा झा
2. डॉ. केष्कर ठाकुर
3. डॉ. योगानंद झा

मलयाळम्
1. डॉ. सी. राजेंद्रन
2. प्रो. के.पी. शंकरन
3. डॉ. सुनील पी. इलामिदम

मणिपुरी
1. प्रो. आई.एस. काङ्जम
2. श्री इबोचा सिंह सोइबम
3. प्रो. थ. रतनकुमार सिंह

मराठी
1. डॉ. दिलीप धोंडगे
2. डॉ. माया पंडित
3. डॉ. संतोष कुमार भूमकर

नेपाली
1. श्री किरनकुमार राई
2. श्री एम. पथिक
3. श्री सुभाष दीपक

ओड़िया
1. श्री अमरेश पट्टनायक
2. प्रो. पी.सी. पट्टनायक
3. डॉ. प्रसन्न कुमार पट्टनायक

पंजाबी
1. डॉ. गुरपाल सिंह
2. डॉ. जसविंदर सिंह
3. प्रो. जोध सिंह

राजस्थानी
1. श्री माधव नागदा
2. डॉ. रमेश मयंक
3. डॉ. शक्तिदान कविया

संस्कृत
1. प्रो. ब्रजकिशोर नायक
2. प्रो. मल्लेपुरम जी. वेंकटेश
3. प्रो. नवजीवन रस्तोगी

संताली
1. श्री खेरवाल सोरेन
2. श्री रघुनाथ मार्डी
3. श्री रूपचंद हांसदा

सिन्धी
1. प्रो. सी.जे. दासवाणी
2. सुश्री रश्मि रमाणी
3. श्री वासदेव मोही

तमिळ
1. डॉ. अब्दुल रहमान
2. डॉ. एम. तिरुमलै
3. डॉ. पी. मरुदनयाङ्गम

तेलुगु
1. डॉ. जे. चेन्नय्या
2. प्रो. टी. मोहन सिंह
3. श्री वल्लभहनेनी अश्विनी कुमार

उर्दू
1. श्री महर मंसूर
2. श्री नुसरत ज़हीर
3. डॉ. सैयद सैयदैन हमीद

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार **2016**

16 जून 2016 को इंफ़ाल में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2016 के लिए 14 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 7 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। राजस्थानी का पुरस्कार बाद में घोषित किया गया। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी से 2010, 31 दिसंबर 2014 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार **2016** से सम्मानित लेखक

असमिया : हरप्रिया बरुकिअल बरगोहाईं, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

बाङ्ला : अमरेंद्र चक्रवर्ती, *गोरिल्लार चोख* (उपन्यासिका)

डोगरी : ओम गोस्वामी, *जंगल च मंगल* (उपन्यासिका)

अंग्रेज़ी : रश्मि नार्ज़ारी, *हिज शेअर ऑफ़ स्काय* (कहानी)

गुजराती : पुष्पा अंताणी, *बंटीना सूरजदादा* (कहानी)

हिंदी : (स्व.) द्रोणवीर कोहली, *मटकी मटका मटकैना* (उपन्यास)

कन्नड : सुमतीन्द्र नाडीग, *बाल साहित्य में समग्र योगदान हेतु*

कश्मीरी : रूही जान, *शोअर बाशी* (कहानी)

कोंकणी : दिलीप बोरकार, *पिंटुची काळभोंवडी* (उपन्यासिका)

मैथिली : प्रेम मोहन मिश्र, *भारत भाग्य विधाता* (भाग-1) (जीवनी)

मलयाळम् : एन.पी. हाफ़िज़ मोहम्मद, *कुट्टिप्पत्तालातिंटे केरलपर्यादनम* (सूचना साहित्य)

मराठी : राजीव तांबे, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

नेपाली : शंकरदेव ढकाल, *बाल सुधा सागर* (कहानी)

ओड़िया : वटकृष्ण ओझा, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

पंजाबी : हृदय पाल सिंह, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

राजस्थानी :

संस्कृत : ऋषिराज जानी, *चमत्कारिकः चलदूरभाषः* (कहानी)

संताली : कुहु दुलार हांसदा, *सिसिर जालि* (कविता)

सिंधी : दयाल आशा, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

तमिऴ : खुश़ा खातिरसन, *बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु

तेलुगु : अलापर्थी वेंकट सुब्बा राव 'बालबंधु', *स्वर्ण पुष्पालु* (कविता)

उर्दू : वकील नजीब, *मसीहा* (उपन्यास)

* बोडो और मणिपुरी में इस वर्ष कोई पुरस्कार नहीं।

हरप्रिया बारुकियाल बरगोहाईं

पुष्पा अंताणी

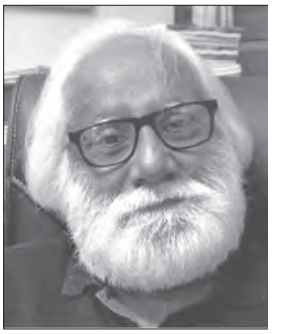

दिलीप बोरकर

अमरेंद्र चक्रवर्ती

(स्व.) द्रोणवीर कोहली

प्रेम मोहन मिश्र

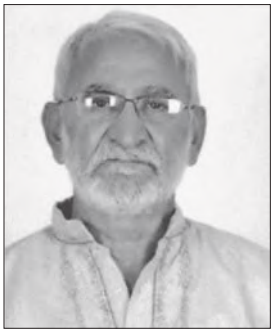

ओम गोस्वामी

सुमतीन्द्र नाडिग

एन.पी. हाफ़ीस मोहम्मद

रश्मि नार्जारी

रूही जान

राजीव तांबे

शंकरदेव ढकाल

ऋषिराज जानी

खुर्शा खातिरसन

वटकृष्ण ओझा

कृष्ण प्रसाद हाँसदा

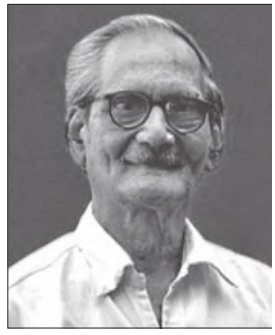

अलपर्ति वेंकट सुब्बाराव

हिरदे पाल सिंह

दयाल कोटूमल धामेजा 'आशा'

अब्दुल वकील नजीब

बाल साहित्य पुरस्कार **2016** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. सुश्री बंदिता फूकन
2. श्री गगन चंद्र अधिकारी
3. श्री हृषिकेश गोस्वामी

बाङ्ला

1. श्री प्रसादरंजन राय
2. श्रीमती सुतपा भट्टाचार्जी
3. श्री मिलन दत्त

बोडो

1. श्री धरनीधर वारी
2. श्री कृष्ण गोपाल बसुमतारी
3. श्री नवीन मल्ल बर'

डोगरी

1. श्री अभिशाप
2. श्री नरेंद्र भसीन
3. श्रीमती संतोष खजूरिया

अंग्रेज़ी

1. श्री सी.जे. थॉमस
2. श्री निर्मलकांति भट्टाचार्जी
3. प्रो. तिलोत्तमा मिश्र

गुजराती

1. श्रीमती धीरुबेन पटेल
2. श्री हरिकृष्ण पाठक
3. डॉ. रमन कांतिलाल सोनी

हिंदी

1. श्री बालस्वरूप राही
2. श्री प्रकाश मनु
3. श्री शेरजंग गर्ग

कन्नड

1. डॉ. लतागुट्टी
2. श्री मा. ना. जावरय्या
3. सुश्री उषा पी. राय

कश्मीरी

1. श्री मो. अमीन शाकीब
2. सुश्री रुख़साना जबीन
3. श्री सैयद याकूब दिलकश

कोंकणी

1. श्री गुरुदत्त बल्लिगा
2. श्री प्रकाश डी. नाइक
3. श्री संजीव वेरेनकर

मैथिली

1. डॉ. अमरनाथ झा
2. प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता
3. डॉ. महेंद्र नारायण राम

मलयाळम्

1. डॉ. जॉर्ज ओनाक्कूर
2. श्री पेरुमपदवोम श्रीधरन
3. श्री ई.पी. राजगोपालन

मणिपुरी

1. डॉ. जोधाचंद्र सनासम
2. प्रो. नाहकपम अरुणा
3. डॉ. एम. तुलेश्वरी देवी

मराठी

1. श्री अनंत भवे
2. श्री मधु मंगेश कार्णिक
3. श्रीमती प्रतिमा इंगोले

नेपाली

1. सुश्री नीरू शर्मा पराजुली
2. डॉ. कविता लामा
3. प्रो. मेघनाथ छेत्री

ओड़िया

1. श्री विष्णु साहू
2. डॉ. अश्विनी कुमार पंडा
3. डॉ. प्रसन्न कुमार स्वैन

पंजाबी

1. डॉ. मनमोहन सिंह दाउन
2. डॉ. सुरेंद्र दवेश्वर
3. डॉ. नरविंदर कौशल

राजस्थानी

1. श्री अतुल कनक
2. डॉ. मदन केवलिया
3. श्री ओम प्रकाश सारस्वत

संस्कृत

1. प्रो. दीपक कुमार शर्मा
2. प्रो. पी. शशि रेखा
3. प्रो. रामानुज देवनाथन

संताली

1. श्री पीतांबर हांसदा
2. श्रीमती मैरी हेम्ब्रम
3. श्री श्याम बेसरा

सिंधी

1. श्री अर्जन हासिद
2. श्री हरीश करमचंदाणी
3. श्री हीरो ठाकुर

तमिऴ

1. श्री कुरिंजीवेलन
2. डॉ. मुहिलै राजा पांडियन
3. श्री रुद्र तुलसीदास

तेलुगु

1. श्री बी. नरसिंहराव
2. श्री एल.आर. स्वामी
3. श्री एन.के. बाबू

उर्दू

1. डॉ. हाज़रा बानो
2. डॉ. मोहम्मद क़लीम ज़िया
3. डॉ. तारिक़ छतारी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2016**

16 जून 2016 इंफ़ाल में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2016 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसा के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुति के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार **2016** से सम्मानित लेखक

असमिया : प्रार्थना शइकीया, *जँटाधारी* (उपन्यास)

बाङ्ला : राका दाशगुप्ता, *अपराह्न डाउनटाउन* (कविता)

बोडो : बिजित गयारी, *खामफ्लंनाय बुब्लि* (कविता)

डोगरी : ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा', *कूले भाव* (कविता-संग्रह)

अंग्रेज़ी : रघु कर्नाड, *फ़ार्देस्ट फ़ील्ड—एन इंडियन स्टोरी ऑफ़ द सेंकड वर्ल्ड वार* (जीवनी)

गुजराती : अंकित त्रिवेदी, *ग़ज़लपूर्वक* (कविता-संग्रह)

हिंदी : नीलोत्पल मृणाल, *डार्क हॉर्स* (उपन्यास)

कन्नड : विक्रम हत्वार, *ज़ीरो मतु ओंदु* (कहानी-संग्रह)

कश्मीरी : आदिल मोहिउद्दीन, *ज़ोल दिथ सद्रास* (आलोचना)

कोंकणी : अन्वेषा अरुण सिंगबाळ, *सुलूस* (कविता-संग्रह)

मैथिली : दीप नारायण 'विद्यार्थी', *जे कहि नञि सकलहुँ* (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : सूर्या गोपी, *उप्पुमाप्पथिले पचिलकल* (कहानी-संग्रह)

मणिपुरी : चोङथम दीपु सिंह, *तोरबंदुदा* (उपन्यास)

मराठी : मनस्विनी लता रवींद्र, *ब्लॉगच्या आरशापल्याड* (कहानी)

नेपाली : संजीव छेत्री, *साँचो जस्तै कथाहरू* (कहानी)

ओड़िया : ज्ञानी देवाशीष मिश्र, *दाग* (कविता-संग्रह)

पंजाबी : रणजीत सरांवली, *पाणी उत्ते मीनाकारी* (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : जितेंद्र कुमार सोनी, *रणखार* (कविता-संग्रह)

संस्कृत : भारतभूषण रथ, *वनवैभवम्* (कविता-संग्रह)

संताली : परिमल हांसदा, *धुआँ ओटाङग काना* (कविता-संग्रह)

सिंधी : भारती सदारंगाणी, *रेतीलो चिटु* (कविता-संग्रह)

तमिऴ : लक्ष्मी सरवणकुमार, *कानकन* (उपन्यास)

तेलुगु : चैतन्या पिंगली, *चिट्टगांग विप्लव वनितलु* (कहानी-संग्रह)

उर्दू : अब्दुस सामी, *नगरी नगरी फिरा मुसाफ़िर* देवेंद्र सत्यार्थी : शख़्सियत और आसार (साहित्यक समालोचना)

प्रार्थना शइकीया

रघु कर्नाड

आदिल मोहिउद्दीन

राका दाशगुप्ता

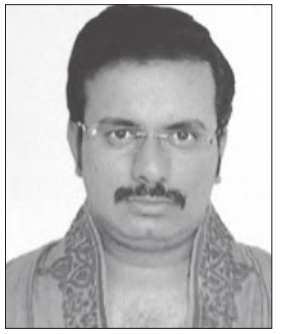

अंकित त्रिवेदी

अन्वेषा अरुण सिंगबाळ

बिजित गयारी

नीलोत्पल मृणाल

दीप नारायण 'विद्यार्थी'

ब्रह्म दत्त मगोत्रा

विक्रम हत्वार

सूर्या गोपी

चोङथम दीपू सिंह

रणजीत सरांवली

भारती सदारंगाणी

मनस्विनी लता रवींद्र

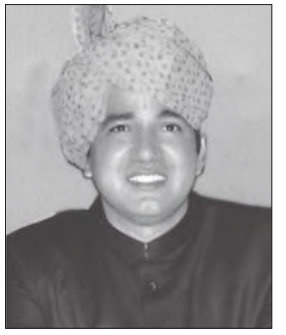

जितेंद्र कुमार सोनी

लक्ष्मी सरवणकुमार

संजीव छेत्री

भारतभूषण रथ

चैतन्या पिंगली

ज्ञानी देवाशीष मिश्र

परिमल हांसदा

अब्दुस सामी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार **2016** के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री चंदन शर्मा
2. प्रो. दिलीप बर'
3. प्रो. लुत्फ़ा हानुम सेलिमा बेगम

बाङ्ला

1. श्री अमर मित्र
2. प्रो. दीपेंदु चक्रवर्ती
3. प्रो. सुतपा सेनगुप्ता

बोडो

1. श्री विद्यासागर रामचियारी
2. श्री इंद्रजित ब्रह्म
3. श्री महेश चंद्र नार्जिनारी

डोगरी

1. प्रो. जोगिंदर सिंह
2. श्रीमती सुदेश राज
3. प्रो. सुषमा शर्मा

अंग्रेज़ी

1. प्रो. अनीसुर रहमान
2. श्री हर्ष दत्ता
3. डॉ. कविता ए. शर्मा

गुजराती

1. श्री चीनूभाई चंदूलाल मोदी
2. डॉ. हासू याज्ञनिक
3. डॉ. प्रवीण दर्जी

हिंदी

1. डॉ. नंदकिशोर आचार्य
2. सुश्री राजी सेठ
3. प्रो. रेवती रमण

कन्नड

1. श्री लक्क्कूर आनंद
2. श्री चिंतामणि कोडलेकर
3. श्रीमती कमला हम्पना

कश्मीरी

1. प्रो. इक़बाल नाज़्की
2. श्री जवाहिर लाल रैणा
3. श्री शमशाद क्रालवरी

कोंकणी

1. श्री भालचंद्र गाओंका
2. श्री मैलविन रोड्रिगस
3. श्री पांडुरंग फलदेसाई

मैथिली

1. डॉ. बासुकी नाथ झा
2. डॉ. रामनरेश सिंह
3. डॉ. शंभुनाथ मिश्र

मलयाळम्

1. श्री अट्टूर रविवर्मा
2. डॉ. पी. वत्सला
3. डॉ. प्रभावर्मा

मणिपुरी

1. श्री फुरैलात्पम इबोयैमा शर्मा
2. डॉ. प्रियव्रत सिंह मोइराङथेम
3. डॉ. सागोलसेम लनचेङ्बा मैती

मराठी

1. श्री इंद्रजीत भालेराव
2. श्रीमती प्रदना दया पवार
3. प्रो. विलास खोले

नेपाली

1. श्री कर्ण थामी
2. डॉ. कृष्णराज घतानी
3. प्रो. प्रताप सी. चंद्रन

ओडिया

1. श्री अध्यापक विश्वरंजन
2. डॉ. विभूति पट्टनायक
3. प्रो. सुदर्शन आचार्य

पंजाबी

1. डॉ. जसपाल सिंह रंधावा
2. डॉ. किरपाल कज़क
3. डॉ. सुरजीत

राजस्थानी

1. डॉ. सी.पी. देवल
2. डॉ. भंवर कसाना
3. डॉ. शारदा कृष्णा

संस्कृत

1. प्रो. ए.सी. षड़ंगी
2. डॉ. रमाकांत शुक्ल
3. प्रो. रामकृष्णामाचार्युळु के.वी.

संताली

1. श्री अर्जुन चरण हेम्ब्रम
2. श्री चंद्रमोहन किस्कू
3. श्री रामचंद्र मुर्मु

सिंधी

1. श्री ईश्वर भारती
2. श्री कृष्ण रतनाणी
3. श्री मोहन महिरचंदाणी

तमिळ

1. प्रो. ई. जेम्स आर. डैनियल
2. डॉ. आर. कोदंडरमण
3. डॉ. तमिषची थंगपांडियन

तेलुगु

1. डॉ. अनुमंडला भूमैया
2. डॉ. प्रतिबंदला रजनी
3. डॉ. वदरेवु चिन्नवीरभद्रुडु

उर्दू

1. प्रो. अनवर पाशा
2. डॉ. हुमायूँ अशरफ़
3. श्री शाहिद माहुली

साहित्य अकादेमी द्वारा 1 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

सुपरिचित बाङ्ला लेखिकाएँ
25 अप्रैल 2016
कोलकाता

सुपरिचित कश्मीरी लेखिकाएँ
30 अप्रैल 2016
सोपोर, कश्मीर

सुपरिचित कश्मीरी लेखिकाएँ
12 मई 2016
श्रीनगर, कश्मीर

सुपरिचित राजस्थानी लेखिकाएँ
13 मई 2016
बँसवारा, राजस्थान

सुपरिचित नेपाली लेखिकाएँ
28 मई 2016
कैलिम्पोङ, पश्चिम बंगाल

सुपरिचित हिंदी लेखिकाएँ
30 जून 2016
नई दिल्ली

सुपरिचित संस्कृत लेखिकाएँ
4 जुलाई 2016
नई दिल्ली

सुपरिचित संताली लेखिकाएँ
18 जुलाई 2016
बारिपदा, ओड़िशा

सुपरिचित बोडो लेखिकाएँ
26 सितंबर 2016
गुवाहाटी, असम

सुपरिचित हिंदी लेखिकाएँ
26 सितंबर 2016
नई दिल्ली

सुपरिचित लेखिकाएँ
16 नवंबर 2016
नई दिल्ली

सुपरिचित ओड़िया लेखिकाएँ
25 नवंबर 2016
संबलपुर, ओड़िशा

सुपरिचित मणिपुरी लेखिकाएँ
28 नवंबर 2016
इंफ़ाल, मणिपुर

सुपरिचित असमिया लेखिकाएँ
18 दिसंबर 2016
दुलियाजान, असम

सुपरिचित डोगरी लेखिकाएँ
3 मार्च 2016
जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

सुपरिचित मैथिली लेखिकाएँ
18 मार्च 2016
जमशेदपुर, झारखंड

आविष्कार

शाम साजन
28 मार्च 2017, जम्मू

डॉ. नलिनी जोशी (सुपरिचित गायिका)
10 मई 2016, नई दिल्ली

स्वपन गुप्ता (सुपरिचित गायक) एवं ताप्ती गुप्ता (प्रतिष्ठित विदुषी)
30 मई 2016, कोलकाता

(जो अविष्कार कार्यक्रम दूसरे आयोजनों के अनुषंग के रूप में हुए हैं, उन्हें वहीं उल्लेखित किया गया है।)

पुरस्कार

अनुवाद पुरस्कार
4 अगस्त 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

बाल साहित्य पुरस्कार
14 नवंबर 2016, अहमदाबाद, गुजरात

युवा पुरस्कार
2 दिसंबर 2016, अगरतला, मणिपुर

साहित्य अकादेमी पुरस्कार
22 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

भाषा सम्मान
8 फ़रवरी 2017, पुणे
21 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

बाल साहिती

बाल साहित्य की वर्तमान चुनौतियों पर परिचर्चा
11 जनवरी 2017, नई दिल्ली

भाषांतर अनुभव

अरुतचेलवर डॉ. एन. महालिंगम अनुवाद इंस्टीट्यूट
27 जनवरी 2017, पोलाची, तमिलनाडु

सृजनात्मक लेखन कार्यशाला

तेलुगु में बाल लेखन
3-4 सितंबर 2016, सिरसिला, तेलंगाना

कहानी लेखन
12-17 नवंबर 2016, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

सात सदस्यीय नेपाली लेखक प्रतिनिधि मंडल का दौरा
15-21 जुलाई 2016, दिल्ली, जयपुर एवं आगरा

पाँच सदस्यीय चीनी लेखक प्रतिनिधि मंडल का दौरा
21-25 अगस्त 2016, नई दिल्ली एवं मुंबई

छह सदस्यीय कोरियाई लेखक प्रतिनिधि मंडल का दौरा
29 सितंबर 2016, नई दिल्ली

विदेशी कवियों से मुलाक़ात
22 नवंबर 2016, मुंबई

लंदन पुस्तक मेला के अंतर्गत परिसंवाद एवं साहित्यिक सम्मिलन का आयोजन
14-16 मार्च 2017, लंदन

वृत्तचित्र प्रदर्शनी

ओ.एन.वी. कुरुप
4 जून 2016, बेंगळूरु

रमाकांत रथ
22 जून 2016, बेंगळूरु

गुलज़ार, भालचंद्र नेमाड़े, भोलाभाई पटेल, नारायण सुर्वे, दामोदर मावज़ो, अमृता प्रीतम, रवींद्र केलेकार, सुनील गंगोपाध्याय एवं अरुण कोल्हटकर
23-24 जुलाई 2017, गोवा

महाश्वेता देवी
2 अगस्त 2016, नई दिल्ली

अख़्तर उल ईमान (उर्दू)
26 नवंबर 2016, नई दिल्ली

गोपीचंद नारंग
2 दिसंबर 2016, मुंबई

बालमणि अम्मा
8 मार्च 2017, बेंगळूरु

मनोज दास
10 मार्च 2017, बेंगळूरु

चार संताली लेखकों पर वृत्तचित्र
30 मार्च 2017, नई दिल्ली

(राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के दौरान वृत्तचित्र प्रदर्शन तथा अन्य कार्यक्रमों को उन्हीं कार्यक्रमों के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है।)

साहित्योत्सव (21-26 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली)

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2016 का उद्घाटन
21 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

'मातृभाषा संरक्षण' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
21-22 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

भाषा सम्मान
21 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन, परिसर, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित भारतीय-अंग्रेज़ी लेखिका रूपा बाजवा के साथ 'लेखक से भेंट'
22 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण 2016
22 फ़रवरी 2017, कमानी सभागार, नई दिल्ली

युवा साहिती : नई फ़सल
23 फ़रवरी 2017 रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन (2016 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता लेखक)
23 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

रामचंद्र गुहा द्वारा संवत्सर व्याख्यान
23 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

आमने-सामने (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के पुरस्कृत लेखकों से बातचीत)
24 फ़रवरी 2017, मेघदूत सभागार III, नई दिल्ली

''लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
24-26 फ़रवरी 2017, अकादेमी सभागार, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन
24 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

आदिवासी लेखक सम्मिलन
25 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन सभागार, नई दिल्ली

आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए मैजिक शो, नाटकीय कहानी-पाठ एवं कहानी तथा कविता लेखन प्रतियोगिता)
25 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

''भारत की अलिखित भाषाएँ'' पर परिसंवाद
26 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

''अनुवाद पुनर्कथन के रूप में'' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी
26 फ़रवरी 2017, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली

स्थापना दिवस

डॉ. सीताकांत महापात्र (ओड़िया लेखक, विद्वान एवं महत्तर सदस्य, साहित्य अकादेमी)
10 मार्च 2017, नई दिल्ली

अकादेमी पुरस्कार विजेता तमिळ लेखक
10 मार्च 2017, चेन्नै

डॉ. एच.एस. राघवेंद्र राव
(प्रतिष्ठित लेखक एवं अनुवादक)
10 मार्च 2017, बेंगळूरु

प्रख्यात विद्वान एवं लेखक
10 मार्च 2017, कोलकाता

ग्रामालोक

ग्रामीण विद्या विकास विद्यालय
2 अक्तूबर 2016, चपलगाँव, सोलापुर, महाराष्ट्र

विजय भावना
11 दिसंबर 2016, जोन्नावलासा गाँव, विजयनगरम

ग्राम विकास शिक्षण संस्था
11 फ़रवरी 2017, जलगाँव, महाराष्ट्र

पंगलाथुर गाँव
17 फ़रवरी 2017, ज़िला : न्यू विलापुरम, तमिलनाडु

ए.वी.एन. मंगैनायगर मंद्रम
11 मार्च 2017, पिरानमलै, ज़िला : शिवगंगै

पेरूनथलैवर कामराजार गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज
15 मार्च 2017, मडगड़ीपेट गाँव, पांडिचेरी

कथासंधि

डॉ. उषाकिरण ख़ान, मैथिली कथा लेखिका
24 अप्रैल 2016, पटना, बिहार

डॉ. फणींद्र कुमार देव चौधुरी, असमिया लेखक
27 मई 2016, डिब्रूगढ़, असम

सुश्री बाणीबसु, बाङ्ला कथा लेखिका
31 मई 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

डॉ. रवि स्वैन, ओड़िया कथाकार
18 जून 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

श्री अरबिंदो उज़ीर, बोडो कथाकार
26 जुलाई 2016, ज़िला : करबी अङलोंग, असम

श्री स्वयं प्रकाश, हिंदी कथाकार
12 अगस्त 2016, नई दिल्ली

श्री चिंतकिंडी श्रीनिवास राव, तेलुगु लेखक
21 अगस्त 2016, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश

डॉ. सुखजीत, पंजाबी लेखक
24 अगस्त 2016, नई दिल्ली

श्री श्रीधर बनवासी, कन्नड कथाकार
26 अगस्त 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

श्री गुप्त प्रधान, नेपाली कथाकार
10 सितंबर 2016, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल

श्री कलाधर मुतवा, सिंधी लेखक
20 सितंबर 2016, अजमेर, राजस्थान

डॉ. एल. परमचंद सिंह, मणिपुरी कथाकार
28 सितंबर 2016, इंफ़ाल, त्रिपुरा

श्रीमती जोबा मुर्मू, संताली लेखिका
1 अक्तूबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सुश्री नमिता गोखले, अंग्रेज़ी कथाकार
17 अक्तूबर 2016, नई दिल्ली

श्री पी.के. परक्कादवु, मलयाळम् लेखक
26 अक्तूबर 2016, त्रिचूर, केरल

श्री एडविन जे. एफ़ डिसूज़ा, कोंकणी कथाकार
30 अक्तूबर 2016, मंगलोर, कर्नाटक

सुश्री गीतांजलि श्री, हिंदी लेखिका
22 नवंबर 2016, नई दिल्ली

डॉ. भास्कर चंदनशिव, मराठी कथाकार
27 दिसंबर 2016, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

डॉ. कमला गोकलाणी, सिंधी कथाकार
22 जनवरी 2017, अहमदाबाद, गुजरात

डॉ. देवव्रत दास, असमिया कथाकार
27 फ़रवरी 2017, गुवाहाटी, असम

श्री विपिन पटेल, प्रख्यात गुजराती कथाकार
15 फ़रवरी 2017, अहमदाबाद, गुजरात

श्री राजेश्वर राजू, डोगरी कथाकार
3 मार्च 2017, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

श्री के.पी. रामनुन्नी, मलयाळम् लेखक
7 मार्च 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

श्री जॉर्ज जोसेफ़ के., मलयाळम् लेखक
7 मार्च 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

कवि अनुवादक

डॉ. जयंत महापात्र, अंग्रेजी कवि तथा श्री अनुभव तुलसी, असमिया लेखक एवं अनुवादक
28 अगस्त 2016, गुवाहाटी, असम

कवि संधि

श्री सतिलाल मुर्मू, संताली कवि
1 अप्रैल 2016, दुमका, झारखंड

श्री मदन मोहन ओझा, प्रख्यात नेपाली कवि
8 मई 2016, खरसाङ, प. बंगाल

श्री आदित्य मांडी, प्रख्यात संताली कवि
5 जून 2016, राँची, झारखंड

श्री मृदुल दास गुप्त, प्रख्यात बाङ्ला कवि
13 जून 2016, कोलकाता, प. बंगाल

डॉ. दिलीप दास, प्रतिष्ठित ओड़िया कवि
18 जून 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

श्री ज्ञानेश्वर मुळे, सुपरिचित मराठी एवं हिंदी कवि
28 जून 2016, नई दिल्ली

डॉ. समीर ताँती, सुपरिचित असमिया लेखक
28 जून 2016, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी

डॉ. यशोधारा मिश्र, सुपरिचित ओड़िया कवयित्री
8 जुलाई 2016, नई दिल्ली

श्री श्रीचंद केसवाणी, प्रतिष्ठित सिंधी लेखक
28 अगस्त 2016, वडोदरा, गुजरात

श्री अम्मांगी वेणुगोपाल, प्रतिष्ठित तेलुगु कवि
30 अगस्त 2016, हैदराबाद

डॉ. आर. वासुनंदन, प्रतिष्ठित तेलुगु कवि
4 सितंबर 2016, सिरसिला, तेलंगाना

सुश्री विम्मी सदारंगाणी, सुपरिचित सिंधी कवयित्री
20 सितंबर 2016, अजमेर, राजस्थान

सुश्री हरीश करमचंदाणी, सुपरिचित सिंधी कवि
23 सितंबर 2016 आदिपुर, कच्छ, गुजरात

श्री धरणीधर वारी, सुपरिचित बोडो कवि
21 अक्तूबर 2016, गुवाहाटी, असम

डॉ. एन. विद्यासागर सिंह, सुपरिचित मणिपुरी कवि
25 अक्तूबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

श्री शरतचंद्र शिनॉय, सुपरिचित कोंकणी कवि
30 अक्तूबर 2016, मंगळूरु, कर्नाटक

श्री पी.पी. रामचंद्रन, सुपरिचित मलयाळम् कवि
9 नवंबर 2016, मल्लपुरम, केरल

डॉ. वनीता, सुपरिचित पंजाबी कवयित्री
16 नवंबर 2016, चंडीगढ़, पंजाब

डॉ. धरवाशयनम श्रीनिवासाचार्य, सुपरिचित तेलुगु कवि
18 नवंबर 2016, हैदराबाद, तेलंगाना

डॉ. आर.ए. पद्मनाभ राव, सुपरिचित तेलुगु कवि
26 नवंबर 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

श्री युद्धवीर राणा, सुपरिचित नेपाली कवि
29 दिसंबर 2016, तेजपुर, असम

डॉ. बी. हनुमा रेड्डी, प्रतिष्ठित तेलुगु कवि
3 जनवरी 2017, मधुबनी, बिहार

डॉ. देवकांत मिश्र, प्रतिष्ठित मैथिली कवि
5 फ़रवरी 2017, मधुबनी, बिहार

डॉ. चंद्रकांत टोपीवाला, प्रतिष्ठित गुजराती कवि
15 फ़रवरी 2017, अहमदाबाद, गुजरात

डॉ. नीरजा, सुपरिचित मराठी कवि
17, फ़रवरी 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

श्री बिशन सिंह दर्दी, प्रतिष्ठित डोगरी कवि
5 मार्च 2017, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

भाषा सम्मेलन

पाइते भाषा सम्मेलन
22-23 जनवरी 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य मंच

सुपरिचित कश्मीरी लेखक
8 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

साहित्य मंच
8 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित उर्दू कवि
11 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित हिंदी लेखक और
'पाँच दशक' पुस्तक का लोकार्पण
18 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक दिवस : पुस्तक संस्कृति
एवं पाठकों की अपेक्षाएँ
23 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

विश्व पुस्तक दिवस : समकालीन पठन संस्कृति
23 अप्रैल 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

सुपरिचित कश्मीरी कथाकार
30 अप्रैल 2016, सोपोर, कश्मीर

नेपाली ग़ज़लकारों द्वारा नेपाली ग़ज़ल पाठ
8 मई 2016, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

मणिपुरी साहित्य एवं संस्कृति में मिथक
10 मई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

हमार, पाइते, ताङखुल एवं थाडोइ कुकी भाषाओं के समकालीन साहित्य के विकास में जनजातीय वाचिक साहित्य का योगदान
11 मई 2016, ज़िला चूड़ाचांदपुर, मणिपुर

साहित्य मंच
13 मई 2016, श्रीनगर, कश्मीर

साहित्य मंच : संताली लेखक
21 मई 2016, क्योंझर, ओड़िशा

एक शाम समीक्षक के साथ
26 मई 2016, गुवाहाटी, असम

सुपरिचित मलयाळम् लेखकों के साथ मुखामुखम
28 मई 2016, त्रिवेंद्रम, केरल

ओ.एन.वी. कुरूप की रचनाएँ एवं 'ई पुरातन किन्नरी' का लोकार्पण
4 जून 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

सामाजिक बदलाव के लिए साहित्य :
पाठ और परिचर्चा
7 जून 2016, नई दिल्ली

चलचित्र एवं साहित्य
19 जून 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : भाषण के साथ
योगासनों का प्रदर्शन
21 जून 2016
नई दिल्ली, बेंगळूरु, कोलकाता, चेन्नै

कवि समय
26 जून 2016, सिद्धपुर, कर्नाटक

साहित्य मंच,
28 जून 2016, कोदुकल्ली, केरल

साहित्य मंच
30 जून 2016, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

मैथिली, सिंधी, हिंदी एवं बाङ्ला भाषाओं के लेखक
8 जुलाई 2016, नई दिल्ली

चार जनजातियों लमकेग, तारांव, मोयोन एवं मोनसंग के पारंपरिक गीतों के रूप एवं प्रकार
14 जुलाई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

चार जनजातियों कोराव, थंगळ, चोथे और खराम के पारंपरिक गीतों के रूप एवं प्रकार
16 जुलाई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

नेपाली लेखक प्रतिनिधि मंडल के साथ बातचीत
16 जुलाई 2016, नई दिल्ली

मुखामुखम् (आमने सामने)
18 जुलाई 2016, त्रिवेंद्रम, केरल

सुपरिचित हिंदी लेखक
18 जुलाई 2016, नई दिल्ली

अंग्रेज़ी, हिंदी एवं ओड़िया के सुपरिचित लेखक
21 जुलाई 2016, नई दिल्ली

जी. सूरचंद शर्मा का जीवन और कृतित्व
23 जुलाई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

टी. थोइबी देवी का जीवन और कृतित्व
26 जुलाई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

बोडो कविता में कलात्मक अभिव्यक्ति
27 जुलाई 2016, उदलगुड़ी, असम

साहित्य मंच
29 जुलाई 2016, सिरसी, कर्नाटक

अंग्रेज़ी, हिंदी, पंजाबी एवं उर्दू भाषाओं के परिचित लेखक
29 जुलाई 2016, नई दिल्ली

महर्षि मनोरंजन भट्टाचार्य एवं बाङ्ला कहानी संचयन का लोकार्पण
29 जुलाई 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सुरेंद्र महांति
31 जुलाई भुवनेश्वर, ओड़िशा

ट्रांसलेटिंग भारत–रीडिंग इंडिया
3 अगस्त 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित गुजराती लेखक
13 अगस्त 2016, भुज, गुजरात

केरल के साहित्यिक परिदृश्य में पालक्काड की स्वयं की पहचान
19 अगस्त 2016, पालक्काड, केरल

साहित्य, अनुवाद नृत्य एवं संगीत शिक्षा के प्रति अंतर्विषयक दृष्टिकोण
20 अगस्त 2016, काँचीपुर, मणिपुर (1990-2010)

समकालीन मणिपुरी कहानियाँ : एक आलोचकीय मूल्यांकन (1990-2010)
21 अगस्त 2016, कांचीपुर, मणिपुर

मणिपुरी साहित्य में अनुवाद का महत्व
21 अगस्त 2016, कम्पूर, इंफ़ाल

रायलसीमा कहानियाँ : सामाजिक जागरूकता
22 अगस्त 2016, कडपा, आंध्रप्रदेश

पंडित एटमबापू शर्मा का जीवन और कृतित्व
23 अगस्त 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

सुपरिचित मणिपुरी लेखक डॉ. रतनकुमार सिंह
23 अगस्त 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

पुस्तक विमोचन : मा ऊरी नदी
(पुरस्कृत तमिळ कविता संग्रह)
26 अगस्त 2016, चेन्नै

पर्यावरण और साहित्य
26 अगस्त 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

असमिया साहित्य में उत्तर-आधुनिक प्रवृत्तियाँ
27 अगस्त 2016, नलबाड़ी, असम

आदिवासी साहित्यिक जतरा
27-28 अगस्त 2016, राँची, झारखंड

सुपरिचित कोंकणी लेखक
28 अगस्त 2016, कुरचोरेम, गोवा

सुपरिचित सिंधी लेखक
28 अगस्त 2016, वड़ोदरा, गुजरात

कवि काव्य
28 अगस्त 2016, येल्लापुर, कर्नाटक

सुपरिचित गुजराती लेखक
29 अगस्त 2016, विरामगाम, गुजरात

समकालीन ओड़िया कविता
29 अगस्त 2016, संबलपुर विश्वविद्यालय, ओड़िशा

डॉ. गुरदयाल सिंह
29 अगस्त 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित बाङ्ला कवि
31 अगस्त 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सुपरिचित गुजराती लेखक
30 अगस्त 2016, सावली, गुजरात

दिल्ली पुस्तक मेला : हिंदी कवियों के साथ
साहित्य मंच
31 अगस्त 2016, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

कथा कथन
3 सितंबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

सुनील गंगोपाध्याय पर केंद्रित कार्यक्रम
7 सितंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

हिंदी दिवस : साहित्य मंच
14 सितंबर 2016, कलोल, गुजरात

महाश्वेता देवी : जीवन एवं कृतित्व
16 सितंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

स्वच्छता पखवाड़ा : साहित्यिक कार्यक्रम
16-30 सितंबर 2016
नई दिल्ली, बेंगळूरु, मुंबई, कोलकाता तथा चेन्नै

कुवेम्पु का जीवन एवं कृतित्व : साहित्य स्पंदन
17 सितंबर 2016, चिकमगल्लूर

हाली फहमी : मुख़्तलिफ़ जेहात
20 सितंबर 2016, नई दिल्ली

जापान में भारत संबंधी अध्ययन और अध्यापन की दिशाएँ
23 सितंबर 2016, नई दिल्ली

बाल साहित्य
24 सितंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच
24 सितंबर 2016, मूदबिद्री, कर्नाटक

मणिपुरी कहानी
25 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

तेलुगु उपन्यास - रायलसीमा का योगदान
26 सितंबर 2016, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

साहित्य मंच
28 सितंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कन्नड में विनोदपूर्ण लेखन
1 अक्तूबर 2016 मंगळूरु, तालुक, कर्नाटक

आधुनिक मणिपुरी साहित्य पर बाङ्ला साहित्य का प्रभाव
4 अक्तूबर, 2016, सिलचर, असम

साहित्य सोबागु
4 अक्तूबर 2016, उडुपी, कर्नाटक

तेलुगु उपन्यास - तेलुगु साहित्यिक समालोचना का विकास और रायलसीमा का योगदान
20 अक्तूबर 2016, प्रोद्दुतुर, आंध्र प्रदेश

बेन्द्रे काव्यानुभव, कामत, उपन्यास मट्टू विचार गोष्ठी
20 अक्तूबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

सुपरिचित हिंदी लेखक
24 अक्तूबर 2016, नई दिल्ली

अंग्रेज़ी, हिंदी, पंजाबी एवं सुपरिचित उर्दू भाषा के लेखक
28 अक्तूबर 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित कोंकणी लेखक
6 नवंबर 2016, सावंतवाडी और मालवण, महाराष्ट्र

राजलक्ष्मी : जीवन और कृतित्व
11 नवंबर 2016, नई दिल्ली

तेलुगु कथा साहित्य और देशी तेलुगु भाषा
12 नवंबर 2016, कडपा, आंध्र प्रदेश

पेना और मणिपुरी साहित्य एवं कवि सम्मिलन
12 नवंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

असमिया काव्यात्मक साहित्य
14 नवंबर 2016, गुवाहाटी, असम

चार चपोरी क्षेत्र के लोगों का असमिया साहित्य एवं संस्कृति में योगदान
15 नवंबर 2016, बरपेटा, असम

भारती के 'कुयिल पट्टू' एवं उसकी समकालीन प्रतिध्वनियों का तुलनात्मक अध्ययन
21 नवंबर 2016, पांडिचेरी

साहित्य मंच
21-23 नवंबर 2016, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

आधुनिक तेलुगु कहानी
24 नवंबर 2016, गुंतूर, आंध्र प्रदेश

कोंजनबाम तोयइमा सिंह : जीवन एवं कृतित्व
26 नवंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

संविधान दिवस : डॉ. बी. आर. अंबेडकर
26 नवंबर 2016,
नई दिल्ली, बेंगळूरु, मुंबई, कोलकाता, चेन्नै

मलयाळम् यात्रा लेखन
26 नवंबर 2016, त्रिवेंद्रम केरल

राधानाथ राय
27 नवंबर 2016, भदरक, ओड़िशा

मणिपुर में बाल साहित्य एवं नाटक :
समस्याएँ एवं संभावनाएँ
27 नवंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

मणिपुरी साहित्यिक आलोचना पर पश्चिमी
समीक्षात्मक, परिकल्पना का प्रभाव
28 नवंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

संविधान दिवस : एम. श्रीधर द्वारा भाषण
28 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्योत्सव
28-29 नवंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

श्री असग़र वज़ाहत, प्रतिष्ठित हिंदी
नाटककार एवं उपन्यासकार
29 नवंबर 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित हिंदी लेखक
30 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य मंच
2 दिसंबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

तमिळ प्रवासी साहित्य
10 दिसंबर 2016, मन्नारगुड़ी, तमिलनाडु

सुपरिचित सिंधी लेखक
12 दिसंबर 2016, मुंबई

डॉ. अश्रु कुमार सिकदर
15 दिसंबर 2016, कोलकाता

विमोचन : समकालीन भारतीय साहित्य
16 दिसंबर 2016, त्रिवेंद्रम, केरल

पत्तुकोत्तई कल्याणसुंदरम
16 दिसंबर 2016, पत्तुकोत्तई, तमिलनाडु

भाषा एवं साहित्य
16 दिसंबर 2016, मायिलदुतुरै

सुपरिचित काश्मीरी कवि और कथाकारों
16 दिसंबर 2016, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

भूमंडलीकरण और तेलुगु कहानी
17 दिसंबर 2016, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

रायलसीमा के आधुनिक तेलुगु महाकाव्य
18 दिसंबर 2016, कुरनूल, आंध्र प्रदेश

दुलियाजान राष्ट्रीय पुस्तक मेला : प्रगतिशील
असमिया लेखन : प्रवृत्ति, प्रकृति और भविष्य
19 दिसंबर 2016, दुलियाजान, असम

भारतीदासन के साहित्यिक आंदोलन और अंबेडकर के सामाजिक आंदोलन के सामाजिक सुधार का तुलनात्मक अध्ययन
21 दिसंबर 2016, पांडिचेरी

साहित्य स्पंदन
21 दिसंबर 2016, करैक्कल, केरल

देवनुरु लक्ष्मीसा का साहित्य
22 दिसंबर 2016, चिकमगलूर

चामराजनगर को लोक-साहित्य का अवदान
24 दिसंबर 2016, चामराजनगर

तेलुगु साहित्य और कामकाजी वर्ग
25 दिसंबर 2016, अनंतपुर

राजभाषा और योग पर साहित्य मंच
27 दिसंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सिंगरावेलुर : सामाजिक दृष्टिकोण और रचनात्मक कार्य
4 जनवरी 2017, चेन्नै

तमिळ में आत्मकथाएँ
5 जनवरी 2017, करैक्कल, तमिलनाडु

कन्नड साहित्य में कोलु कोडुगे का योगदान एवं अभिग्राह्यता
9 जनवरी 2017, मंगलौर, कर्नाटक

स्पेन से आए डॉ. गुइल्लेर्मो रोड्रिगेज़ ने ए.के. रामानुजन के काव्य पर अपनी पुस्तक 'वेन मिरर्स आर विंडोज़' के अंशों का पाठ किया
11 जनवरी 2017, नई दिल्ली

विभिन्न भारतीय भाषाओं के सुपरिचित लेखक
14 जनवरी 2017, नई दिल्ली

ब्रेल काव्योत्सव 2017
19 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

आलोक सरकार, सुपरिचित बाङ्ला कवि
23 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू भाषा के सुपरिचित लेखक
24 जनवरी 2017, नई दिल्ली

सुपरिचित कोंकणी लेखक
27 जनवरी 2017, पणजी, गोवा

बाङ्ला बाल साहित्य
27 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

मलयाळम् साहित्य में मुस्लिम संस्कृति
31 जनवरी 2017, कट्टलांगदी, केरल

डॉ. मोहन भारद्वाज, सुविख्यात समीक्षक
4 फ़रवरी 2017, पटना, बिहार

समकालीन तमिल कथाओं में मिथ का प्रभाव
5 फ़रवरी 2017, रामनाथपुरम

साहित्य एवं स्थान
6 फ़रवरी 2017, किशनगढ़, राजस्थान

आधुनिक कन्नड महिला साहित्य : नए आयाम
10 फ़रवरी 2017, मंगलौर, कर्नाटक

युवा लेखकों का समकालीन लेखन और चुनौतियाँ
11 फ़रवरी 1017, त्रिची, तमिलनाडु

विशिष्ट तेलुगु कालजयी प्रबंध : एक पुनर्मूल्यांकन
12 फ़रवरी 2017, कडपा, आंध्र प्रदेश

ए. चंद्रबोस
14 फ़रवरी 2017, करैकुडी, तमिलनाडु

तेलुगु में क्षेत्र साहित्य
15 फ़रवरी 2017, तिरुपति

साहित्य मंच
18 फ़रवरी 2017, नेल्लौर, आंध्र प्रदेश

तटीय कर्नाटक का कन्नड साहित्य
18 फ़रवरी 2017, नित्ते, कर्नाटक

कविता उत्सव
24-26 फ़रवरी 2017, शांतिनिकेतन

साहित्य मंच
4 मार्च 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

साहित्य मंच
8 मार्च 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

मीडिया और साहित्य
5 मार्च 2017, गुवाहाटी, असम

साहित्य-मंच
9 मार्च 2017, चंडीगढ़, पंजाब

साहित्य मंच
10 मार्च 2017, बेंगळूरु, कर्नाटक

सुपरिचित बाङ्ला लेखक/विद्वान
10 मार्च 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

मलयाळम् साहित्य में मालाबार संस्कृति
10 मार्च 2017, मलप्पुरम्, केरल

कुंभकोणम् के लेखक
14 मार्च 2017, कुंभकोणम्, तमिलनाडु

मेरी दुनिया मेरा लेखन
16 मार्च 2017, लंदन

साहित्य स्पंदन
17 मार्च 2017, ज़िला : मुल्की, कर्नाटक

साहित्य मंच
19 मार्च 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. गेबोर लांसकोर, हंगरी के सुपरिचित
कवि और उपन्यासकार
20 मार्च 2017, नई दिल्ली

लोक : विविध स्वर

लोक : विविध स्वर : बाहा, लाग्ने, डोंग, सोहराय का रमेश मरांडी और उनके साथियों द्वारा प्रदर्शन
5 जून 2016, राँची, झारखंड

लोक : विविध स्वर : बोडो लोक नृत्य बोडो हरिमु अफ़ात का प्रदर्शन एवं चिरम मोहीलरी का व्याख्यान 26 जुलाई 2016, ज़िला : करबी अङलोङ, असम

लोक : विविध स्वर
10 सितंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

लोक : विविध स्वर : काकचिंग और काकचिंग खुनोऊ हरोआ पर कार्यक्रम
26 सितंबर 2016, काकचिंग

लोक : विविध स्वर : मिज़ोरम की एक मंडली के साथ
11-12 दिसंबर 2016, पुरुलिया

लोक : विविध स्वर : गोवा सरकार के कला एवं संस्कृति निदेशालय के साथ
18 दिसंबर 2016, गोवा

लोक : विविध स्वर : धीमाल नृत्य पर : उत्तरी बंगाल का लोक नृत्य
19 जनवरी 2017, हावड़ा, पश्चिम बंगाल

लोक : विविध स्वर : कर्नाटक के बिलिगिरि क्षेत्र के जनजातीय महाकाव्यों, कुदियारु, हालसरहंतिके, बुदुगा जंगमारा की प्रकृति
27-28 मार्च 2017, सागर, कर्नाटक

लेखक से भेंट

सुश्री इस्थर डेविड, सुपरिचित अंग्रेज़ी लेखिका
3 अप्रैल 2016, अहमदाबाद, गुजरात

डॉ. कीर्ति नारायण मिश्र, प्रतिष्ठित मैथिली कवि और लेखक
24 अप्रैल 2016, पटना, बिहार

श्री लीलाधर जगूड़ी, प्रतिष्ठित हिंदी लेखक
25 मई 2016, आगरा, उत्तर प्रदेश

डॉ. नर बहादुर दहाल, विशिष्ट नेपाली लेखक
27 मई 2016, कालिम्पोङ, पश्चिम बंगाल

श्री बादल हेम्ब्रम, सुपरिचित संताली लेखक
5 जून 2016, राँची, झारखंड

चंद्रकांत देवताले, प्रतिष्ठित हिंदी कवि
19 जून 2016, उज्जैन, मध्य प्रदेश

डॉ. कलानाथ शास्त्री, प्रतिष्ठित संस्कृत लेखक
26 जुलाई 2016, जयपुर, राजस्थान

डॉ. कोलाकलुरी इनोक, प्रतिष्ठित तेलुगु लेखक, आलोचक एवं अध्येता
29 जुलाई 2016, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

श्री दया प्रकाश सिन्हा, प्रतिष्ठित हिंदी नाटककार
16 अगस्त 2016, नई दिल्ली

डॉ. नामदेव ताराचंदाणी, प्रतिष्ठित सिंधी लेखक
20 अगस्त 2016, आदिपुर, गुजरात

डॉ. अशोक कामत, प्रतिष्ठित कोंकणी लेखक
28 अगस्त 2016, कुरकोरम गोवा

श्री येशे दोरजी थोङची, प्रतिष्ठित असमिया लेखक
29 अगस्त 2016, नगाँव, असम

डॉ. तिरुमल श्रीनिवासाचार्य, प्रतिष्ठित तेलुगु लेखक और समीक्षक
3 सितंबर 2016, सिरसिला, तेलंगाना

श्री वंशीधर षड़ंगी, प्रतिष्ठित ओड़िया लेखक
10 सितंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

श्री दुर्गाप्रसाद श्रेष्ठ, सुप्रसिद्ध नेपाली लेखक
22 अक्तूबर 2016, वाराणसी

श्री माखनमणि मोङसबा, सुपरिचित मणिपुरी लेखक
12 नवंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

डॉ. अनिल कुमार बर', सुपरिचित बोडो लेखक
28 नवंबर 2016, गुवाहाटी, असम

डॉ. रामशंकर अवस्थी, प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान
29 नवंबर 2016, नई दिल्ली

श्री तारापति उपाध्याय, विशिष्ट नेपाली लेखक
30 दिसंबर 2016, उदालगुड़ी, असम

श्रीमती चंपा शर्मा, सुपरिचित डोगरी लेखिका
16 जनवरी 2017, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

श्री मालचंद तिवाड़ी, प्रतिष्ठित राजस्थानी लेखक
20 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रो. जयंत नार्लीकर, प्रतिष्ठित मराठी लेखक
और वैज्ञानिक
22 जनवरी 2017, कन्नड, महाराष्ट्र

डॉ. बलदेव सिंह सड़कनामा, प्रतिष्ठित पंजाबी लेखक
27 जनवरी 2017, चंडीगढ़, पंजाब

डॉ. भीमनाथ झा, प्रतिष्ठित मैथिली लेखक
4 फ़रवरी 2017, पटना, बिहार

मुलाक़ात

युवा मणिपुरी लेखक
9 मई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

युवा हिंदी लेखक
11 मई 2016, नई दिल्ली

युवा असमिया लेखक
29 जून 2016, गुवाहाटी, असम

युवा ओड़िया लेखक
29 जुलाई 2016, कोरापुट, ओड़िशा

युवा बोडो लेखक
26 सितंबर 2016, गुवाहाटी, असम

बाङ्ला लेखिकाएँ
14 मार्च 2017, ज़िला : दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल

बहुभाषी सम्मिलन

अखिल भारतीय कवि सम्मिलन
29 अप्रैल से 8 मई 2016, उज्जैन

बहुभाषी कहानी पाठ
24-25 मई 2016, नई दिल्ली

अखिल भारतीय कवि सम्मिलन
30-31 जुलाई 2016, शिलांग, मेघालय

अखिल भारतीय बहुभाषी कवि-सम्मिलन
3 सितंबर 2016, शिमला, हिमाचल प्रदेश

अखिल भारतीय काव्योत्सव
9-10 नवंबर 2016, नई दिल्ली

अखिल भारतीय बहुभाषी कवि-सम्मिलन
21 नवंबर 2016, असम

बहुभाषी कविता-पाठ
24 नवंबर 2016, नई दिल्ली

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन
23-24 दिसंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

अखिल भारतीय युवा लेखक संवाद
7-8 जनवरी 2017, आदिपुर, कच्छ, गुजरात

जम्मू-कश्मीर साहित्योत्सव
21-22 मार्च 2017, नई दिल्ली

पूर्वी क्षेत्रीय कथाकार सम्मिलन
29-30 मार्च 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

नारी-चेतना

नारी चेतना
13 जून 2016, नई दिल्ली

रायलसीमा को कहानियों में स्त्री-छवि
21 जुलाई 2016, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

नारी चेतना
29 जुलाई 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित पंजाबी लेखिकाएँ
30 अगस्त 2016, तरनतारन, पंजाब

सुपरिचित सिंधी लेखिकाएँ
23 सितंबर 2016, आदिपुर, कच्छ, गुजरात

सुपरिचित बोडो लेखिकाएँ
22 अक्तूबर 2016, करबी अङलोंग, असम

सुपरिचित नेपाली लेखिकाएँ
6 नवंबर 2016, गांतोक, सिक्किम

सुपरिचित ओड़िया लेखिकाएँ
26 नवंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

सुपरिचित मणिपुरी लेखिकाएँ
26 नवंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

असमिया, अंग्रेज़ी, हिंदी, तेलुगु तथा उर्दू भाषाओं की सुपरिचित लेखिकाएँ
7 दिसंबर 2016, नई दिल्ली

सुपरिचित कश्मीरी लेखिकाएँ
18 दिसंबर 2016, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

सुपरिचित हिंदी लेखिकाएँ
12 जनवरी 2017, नई दिल्ली

सुप्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखिकाएँ
17 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

सुपरिचित मलयाळम् लेखिकाएँ
8 मार्च 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

सुपरिचित तमिऴ लेखिकाएँ
8 मार्च 2017, चेन्नै

नारी चेतना
8 मार्च 2017, बेंगळूरु, कर्नाटक

19वीं एवं 20वीं सदी की बाङ्ला लेखिकाएँ : एक तुलनात्मक अध्ययन
8 मार्च 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

नवंबर 14-21 : अकादेमी ने दिल्ली तथा अपने सभी क्षेत्रीय कार्यालयों बेंगळूरु, कोलकाता, मुंबई और उप-कार्यालय चेन्नै में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2016 मनाया तथा पुस्तक सप्ताह के दौरान कोष़ीकोड, केरल; कुंभकोणम, तमिलनाडु और बेंगळूरु में पुस्तक प्रदर्शनी सहित साहित्यिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया।

कोष़ीकोड, केरल

15: साहित्य अकादेमी द्वारा तकष़ी शिवशंकर पिल्लै, सुब्रमण्यम भारती और एम.टी. वासुदेवन नायर पर निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन।

16: कवि सम्मिलन कार्यक्रम के अंतर्गत सुपरिचित मलयाळम् कवियों को आमंत्रित किया गया।
17: यू.आर. अनंतमूर्ति, वैक्कम मुहम्मद बशीर, डी. जयकांतन पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन।
18: अकादेमी ने सुपरिचित मलयाळम् लेखकों को आमंत्रित कर कहानी-पाठ का आयोजन किया।
19: अय्यप्प पणिक्कर, महाश्वेता देवी एवं कमला दास पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन।
20: साहित्य और जीवन विषय पर परिचर्चा का आयोजन।

कुंभकोणम, तमिलनाडु

15: तकषी शिवशंकर पिल्लै, नील पद्मनाभन और कमला दास पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन।
16: कवि सम्मिलन कार्यक्रम के अंतर्गत सुपरिचित तमिऴ कवियों को आमंत्रित किया गया।
17: यू.आर. अनंतमूर्ति, वैक्कम मुहम्मद बशीर, डी. जयकांतन पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन।
18: सुपरिचित तमिऴ कथाकारों द्वारा कहानी-पाठ।
19: महाश्वेता देवी, सुब्रमण्यम भारती और खुशवंत सिंह पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन।
20: जीवन और साहित्य पर परिचर्चा का आयोजन।

बेंगळूरु, कर्नाटक

15: कहानी-पाठ कार्यक्रम के अंतर्गत सुपरिचित कन्नड लेखकों को आमंत्रित किया गया।
16: जी.एस. शिवरुद्रप्पा, मुल्कराज आनंद, पु.टी.ना. पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन।
17: सुपरिचित कन्नड कवियों के अंतर्गत कवि सम्मिलन कार्यक्रम आमंत्रित किया गया।
18: कुवेम्पु, यू.आर. अनंतमूर्ति और कमलेश्वर पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन।
19: सुपरिचित कन्नड लेखिकाओं को नारी-चेतना कार्यक्रम के अंतर्गत आमंत्रित किया।
20: समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी.एन. रामचंद्रन ने की तथा प्रतिष्ठित कन्नड समीक्षक डॉ. एच.एस. वेंकेटेशमूर्ति ने समापन वक्तव्य दिया और सी.एन. नागराज रेड्डी, मानद सचिव, नेशनल एजुकेशन सोसायटी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

उत्तर-पूर्वी और क्षेत्रीय सम्मिलन

उत्तर-पूर्वी और लेखक सम्मिलन
30 अप्रैल एवं 1 मई 2016, बर्दवान, पश्चिम बंगाल

उत्तर-पूर्व और पश्चिमी लेखक सम्मिलन
18-19 मई 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
11-12 जून 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

उत्तर-पूर्व और पश्चिमी लेखक सम्मिलन
9-10 जुलाई 2016, गोवा

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
19-20 जुलाई 2016, चेन्नै

उत्तर-पूर्व और पश्चिमी साहित्यिक सम्मिलन
24-25 अगस्त 2016, अहमदाबाद, गुजरात

उत्तर-पूर्वी लिटिल मैगजीन महोत्सव 2016
11 सितंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

उत्तर-पूर्वी कवि सम्मिलन : ऑक्टेव के अंतर्गत
23 सितंबर 2016, अजमेर, राजस्थान

उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन
26-27 सितंबर 2016, कारगिल, लद्दाख़

उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन
7-8 अक्तूबर 2016, जालंधर, पंजाब

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
9 दिसंबर 2016, कोच्चि, केरल

पूर्वोत्तरी : पूर्वोत्तर के लेखकों के साथ बहुभाषी लेखक सम्मिलन
9 जनवरी 2017, नई दिल्ली

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्योत्सव
19-20 मार्च 2017, अगरतला, त्रिपुरा

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
25-26 मार्च 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन
27-28 मार्च 2017, नई दिल्ली

व्यक्ति एवं कृति

सुश्री पुलक बनर्जी, प्रख्यात असमिया गायिका
28 अप्रैल 2016, डिब्रूगढ़, असम

श्री रामानंद बंद्योपाध्याय, प्रख्यात कलाकार
17 जून 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रो. एस. शेट्टर, प्रख्यात इतिहासकार एवं लेखक
25 जून 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

श्री शेखर सेन, प्रतिष्ठित गायक, संगीतकार एवं गीतकार
27 जुलाई 2016, नई दिल्ली

डॉ. प्रियंवदा महांति हेजमादी, सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और ओड़िशी नृत्यांगना
30 जुलाई 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

श्री भँवर सिंह पंवार, प्रतिष्ठित चित्रकार
21 अगस्त 2016, अहमदाबाद, गुजरात

डॉ. के. राजशेखरन नायर, सुप्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट
9 सितंबर 2016, त्रिवेंद्रम

श्री सुभाष छेत्री, सुप्रसिद्ध कलाकार
11 सितंबर 2016, सिटोंग, पश्चिम बंगाल

श्री अरविंद काकोदकार, प्रतिष्ठित नाट्यमंच और फ़िल्म व्यक्तित्व
27 जनवरी 2017, पणजी

श्री सोली जे. सोराबाजी, प्रतिष्ठित क़ानूनविद और पूर्व महान्यायवादी, भारत सरकार
3 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

श्री नरेंद्र झा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4 फ़रवरी 2017, पटना, बिहार

प्रो. पी.के. शर्मा, वैज्ञानिक और कुलपति
5 मार्च 2017, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

प्रवासी-मंच

सुश्री अरुणा सब्बरवाल
सुपरिचित हिंदी लेखिका, इंग्लैंड
7 नवंबर 2016, नई दिल्ली

श्री दिगंबर मिश्र
प्रतिष्ठित समाज विज्ञानी, अमेरिका
23 दिसंबर 2016, भुवनेश्वर

श्री प्रफुल्ल महांति
प्रतिष्ठित कलाकार, इंग्लैंड
7 मार्च 2017, भुवनेश्वर

डॉ. मृदुल कीर्ति
सुपरिचित हिंदी लेखक, अमेरिका
16 मार्च 2017, नई दिल्ली

राजभाषा कार्यक्रम

हिंदी सप्ताह
14-21 सितंबर 2016
नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै

हिंदी की वर्तमान दशा : चुनौतियाँ और समाधान
सुभाष चंद्रा और अशोक चक्रधर के मध्य संवाद
14 सितंबर 2016, नई दिल्ली

राजभाषा-मंच : ''कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशाएँ'', डॉ. जयप्रकाश कर्दम का व्याख्यान
19 सितंबर 2016, नई दिल्ली

दक्षिण भारत के राज्यों में राजभाषा का कार्यान्वयन
26 अक्तूबर 2016, चेन्नै

राजभाषा संबंधी आंतरिक कार्यशालाएँ
22 जून 2016, नई दिल्ली
20 सितंबर 2016, नई दिल्ली
27 अक्तूबर 2016, चेन्नै
30 दिसंबर 2016, नई दिल्ली
29 मार्च 2017, नई दिल्ली

संगोष्ठियाँ

19वीं सदी में मुंबई परिक्षेत्र का साहित्य : एक बड़े सांस्कृतिक संदर्भ में
2-3 अप्रैल 2016, अहमदाबाद, गुजरात

पंजाबी भाषा, साहित अते सभ्याचार दे सम्मुख चुनौतियाँ
28-29 अप्रैल 2016, बादल, पंजाब

राजिन्दर सिंह बेदी
7-8 मई 2016, हैदराबाद, तेलंगाना

एन.बी. कृष्ण वारियर और भारतीय कविता
13 मई 2016, कालीकट, केरल

तुलनात्मक साहित्य
14-15 मई 2016, श्रीनगर, कश्मीर

राजस्थानी वाचिक साहित्य
14-15 मई 2016, उदयपुर, राजस्थान

प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति : जीवन और दृष्टि
19 मई 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

पाइका विद्रोह की 200वीं वर्षगाँठ एवं ओड़िया साहित्य पर विमर्श
22-23 मई 2016, खुर्द, ओड़िशा

डॉ. नगेंद्र जन्मशतवार्षिकी
24-25 मई 2016, आगरा, उ.प्र.

पारसमणि प्रधान : जीवन और कृतित्व
27-28 मई 2016, कालिम्पोङ, पश्चिम बंगाल

वाचिक कविता, प्रदर्शन और सौंदर्यबोध
18 जून 2016, कोकराझार, असम

शिवमंगल सिंह सुमन : जन्मशतवार्षिकी
20 जून 2016, उज्जैन, मध्य प्रदेश

चौ. कलाचंद सिंह शास्त्री : जन्मशतवार्षिकी
21 जून 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

कन्नड काव्यशास्त्र के आयाम
25-26 जून 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

मृतप्राय स्वरों की चुप्पी : पूर्वोत्तर भारत एवं दुनिया में विलुप्तप्राय साहित्य
4-5 जुलाई 2016, अगरतला, त्रिपुरा

संताली साहित्य का इतिहास
17-18 जुलाई 2016, बारिपदा, ओड़िशा

अनुभाष्य : कोंकणी और अंग्रेज़ी भाषा के समीक्षात्मक लेखन के परस्पर अनुवाद की ओर
21-24 जुलाई 2016, पणजी, गोवा

एच. द्विजमणि शर्मा : जन्मशतवार्षिकी
24 जुलाई 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

जानकी वल्लभ शास्त्री : जन्मशतवार्षिकी
28 जुलाई 2016, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार

नलिन विलोचन शर्मा : जन्मशतवार्षिकी
29 जुलाई 2016, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार

अमृतलाल नागर : जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
20-21 अगस्त 2016, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

चित्तरंजन मसाहारी के उपन्यासों में बोडो सामाजिक परिदृश्य का प्रतिबिंब
20-21 अगस्त 2016, कोकराझार, असम

बी.जी.एल. स्वामी जन्मशतवार्षिकी
16 सितंबर 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

राजस्थानी नाटक : परंपरा और चुनौतियाँ
17-18 सितंबर 2016, बीकानेर, राजस्थान

बहुसभ्याचारवाद : पंजाबी साहित्य में पहचान का संकट
22-23 सितंबर 2016, नई दिल्ली

एन. कृष्ण पिल्लै जन्मशतवार्षिकी
22 सितंबर 2016, त्रिवेंद्रम, केरल

प्यारीचाँद मित्र जन्मशतवार्षिकी
23-24 सितंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रमोद च. ब्रह्म जन्मशतवार्षिकी
24-25 सितंबर 2016, उदालगुड़ी, असम

पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में समकालीन महिला लेखन
26-27 सितंबर 2016, पश्चिमी मिदनापुर

तेलम जोगेंद्रजीत सिंह : जन्मशतवार्षिकी
27 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

पश्चिमी असम के कोच राजवंशों के मिथ एवं कथाएँ
27-28 सितंबर 2016, गोलकगंज, असम

संताली लोक और वाचिक साहित्य
28-29 सितंबर 2016, शांतिनिकेतन

ओड़िया नाटक
30 सितंबर 2016, संबलपुर, ओड़िशा

महाराष्ट्र, आंध्र-प्रदेश, कर्नाटक में भक्ति-आंदोलन : एक समकालीन परिप्रेक्ष्य
3-4 अक्तूबर, शोलापुर, महाराष्ट्र

ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म जन्मशतवार्षिकी
15-16 अक्तूबर 2016, राँची, झारखंड

प्रकृति और साहित्य
22-23 अक्तूबर 2016, कटक, ओड़िशा

सूर्यमल्ल मिश्रण : द्विशतवार्षिकी
23-24 अक्तूबर 2016, कोटा, राजस्थान

हेइसनाम मंगलजाओ सिंह
25 अक्तूबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

संस्कृत में तकनीकी साहित्य
26 अक्तूबर 2016, पुरानाट्टुकरा, केरल

गुरुचरन पटनायक : जन्मशतवार्षिकी
30 अक्तूबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

कास्मोपोटिलन स्पेस : भारतीय साहित्य और आधुनिकता के प्रतिरोधी तत्त्व
3-4 नवंबर 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

बलवंत गार्गी : जन्मशतवार्षिकी
7-8 नवंबर 2016, पटियाला, पंजाब

लक्ष्मण झा, बाबू साहेब चौधुरी और नगेंद्र कुमार : जन्मशतवार्षिकी
13-14 नवंबर 2016, रायपुर, छत्तीसगढ़

भारतीय भाषा और साहित्य में राष्ट्रीय एकीकरण
17-18 नवंबर 2016, नई दिल्ली

डोगरी लोक-साहित्य : समकालीन समीकरण
18-19 नवंबर 2016, जम्मू, जम्मू और कश्मीर

समीक्षा, सिद्धांत, तमिळ साहित्य के प्रति दृष्टिकोण, समीक्षा एवं सिद्धांत : प्राचीन एवं अर्वाचीन
23-24 नवंबर 2016, तंजावुर

समकालीन भारत और ईरान में समकालीन कहानी लेखन
25 नवंबर 2016, नई दिल्ली

अख़्तर उल इमान : एक पुनर्पाठ
26-27 नवंबर 2016, नई दिल्ली

पौराणिक कथा और आधुनिक भारतीय साहित्य
5-6 दिसंबर 2016, माजुली, असम

नरेंद्रनाथ मित्र : जन्मशतवार्षिकी
15-16 दिसंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

वर्ण रत्नाकर
17-18 दिसंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

कोंकणी लोक-साहित्य
17-18 दिसंबर 2016, गोवा

राजकिशोर पटनायक : जन्मशतवार्षिकी
24 दिसंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

ज्ञानेंद्र वर्मा : जन्मशतवार्षिकी
25 दिसंबर 2016, कटक, ओड़िशा

सिंधी साहित्य में परिवर्तनशील समाज
14-15 जनवरी 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

भारतीय साहित्य एवं भाषा में शेक्सपीयर
18-19 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

भारतीय लेखन में बहुसांस्कृतिकवाद
29 जनवरी 2017, तिरुर, केरल

हरि दरयाणी 'दिलगिर'
28-29 जनवरी 2017, आदिपुर, कच्छ, गुजरात

तुलसीदास : एक पुनर्पाठ
3-4 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

दक्षिण भारतीय साहित्य में नई प्रवृत्तियाँ
6-7 फ़रवरी 2017, चेन्नै

आदिवासी साहित्य : विभिन्न दृष्टिकोण
11-12 फ़रवरी 2017, बल्लारपुर, महाराष्ट्र

भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में जीवनाख्यान
17-18 फ़रवरी 2017, संबलपुर, ओड़िशा

शीला भाटिया : जन्मशतवार्षिकी
3-4 मार्च 2017, नई दिल्ली

स्नेहा देवी : जन्मशतवार्षिकी
27-28 मार्च 2017, डिबूगढ़, असम

अभिनवगुप्त : पुनर्यात्रा
23-24 मार्च 2017, नई दिल्ली

परिसंवाद

भावना, अनुभव, अभिव्यक्ति : नैतिकता एवं सौंदर्यशास्त्र
23 अप्रैल 2016, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

मैथिली साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव
29 अप्रैल 2016, पटना, बिहार

भारतीय नेपाली ग़ज़ल
8 मई 2016, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

टैगोर और गाँधी : द्वंद्व, संवाद, मतभेद
9 मई 2016, नई दिल्ली

चिल्का और कोणार्क
21 मई 2016, पुरी, ओड़िशा

उत्तरी भारत की भाषाओं में प्रकृति और साहित्य
5 जून 2016, देहरादून, उत्तराखंड

मणिपुरी साहित्य के विकास में अख़बारों की भूमिका
20 जून 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

असमिया विज्ञान-साहित्य
26 जून 2016, जोरहाट, असम

कश्मीरी-पंजाबी कहानी
27 जून 2016, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर

बिहुराम बर' और उनका साहित्य सृजन
30 जून 2016, बताड, असम

बेलागिरि कृष्ण शास्त्री की जन्मशतवार्षिकी
3 जुलाई 2016, चित्रदुर्ग, कर्नाटक

क्षमा देवी राव
4 जुलाई 2016, नई दिल्ली

शंभूनाथ सिंह : जन्मशतवार्षिकी
8 जुलाई 2016, वाराणसी, उत्तर-प्रदेश

एन. सुब्बु रेड्डियार : जन्मशतवार्षिकी
22 जुलाई 2016, त्रिची, तमिलनाडु

अली जावेद ज़ैदी : जन्मशतवार्षिकी
23 जुलाई 2016, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हरियाणा का काव्य और कथा-साहित्य
24 जुलाई 2016, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

समकालीन मणिपुरी साहित्य में महिला उपन्यासकारों का स्थान
25 जुलाई 2016, नामबोल, मणिपुर

बोडो भाषा में विभाषीय विविधता
28 जुलाई 2016, लखीमपुर, असम

विद्वान विसवान की जन्मशतवार्षिकी
29 जुलाई 2016, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

महिला लेखन : पीड़ा और दृष्टि
5 अगस्त 2016, मन्नारगुड़ी, तमिलनाडु

कविज्ञर कलैवनन (उर्फ़) अप्पूलिंगम
6 अगस्त 2016, त्रिची, तमिलनाडु

मलयाळम् में दलित लेखन
17 अगस्त 2016, कालीकट, केरल

हिमालय की अनुगूँज : स्थानीय और वैश्विक अनुभूतियाँ
19 अगस्त 2016, शिमला, हिमाचल प्रदेश

पिछले 25 वर्षों का मराठी साहित्य और मजदूरों की संस्कृति
19 अगस्त 2016, नांदेड़, महाराष्ट्र

तेलुगु साहित्य का अनुवाद : प्रवृत्तियाँ और तकनीकें
21 अगस्त 2016, विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश

कन्नड में अल्पसंख्यक साहित्य
26 अगस्त 2016, बेंगळूरु, कर्नाटक

शैली विज्ञान एवं बोडो कथासाहित्य
26 अगस्त 2016, गुवाहाटी, असम

तसव्वुफ़ और भक्ति की शे'री रिवायत
27 अगस्त 2016, पुणे, महाराष्ट्र

भारतीय साहित्य का अनुवाद और ग्राह्यता : साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंधों का माध्यम
27 अगस्त 2016, कोकराझर, असम

ओड़िया साहित्य पर शहरीकरण का प्रभाव
27 अगस्त 2016, राउरकेला, ओड़िशा

टी.पी. पेरुमल : शताब्दी वर्ष
30 अगस्त 2016, नागेरकोइल, तमिलनाडु

तेलंगाना का महिला साहित्य
30 अगस्त 2016, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

नवीन पंजाबी कहानी
5 सितंबर 2016, मोगा, पंजाब

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली उपन्यास की प्रवृत्तियाँ
10 सितंबर 2016, दार्जीलिङ, पश्चिम बंगाल

वर्तमान सिंधी नाट्य-लेखन - गुजरात चैप्टर
11 सितंबर 2016, वड़ोदरा, गुजरात

ए.एस. ज्ञानसंबंथन : जन्मशतवार्षिकी
16 सितंबर 2016, पोल्लाची, तमिलनाडु

भारतीय साहित्य में पारसियों का योगदान
20 सितंबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

आज का पूर्वोत्तर साहित्य
23 सितंबर 2016, अजमेर, राजस्थान

थुंचथ इषुथचन : समय और कार्य
26 सितंबर 2016, त्रिचूर, केरल

कथा साहित्य की हालिया प्रवृत्तियाँ : असमिया एवं बाङ्ला उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन
29 सितंबर 2016, गोलाघाट, असम

अनुवाद : बहुसांस्कृतिक चुनौतियाँ
30 सितंबर 2016, नई दिल्ली

मोती प्रकाश : जीवन और कृतित्व
1 अक्तूबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

पंडित रघुनाथ मुर्मू
1 अक्तूबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

उर्दू साहित्य के इतिहास में पंजाबी लेखकों का योगदान
4 अक्तूबर 2016, मालेरकोटला, पंजाब

समकालीन मणिपुरी साहित्य में लोक आख्यान
5 अक्तूबर 2016, सिलचर, असम

कोंकणी पटकथा लेखन में साहित्यिक पुट
7 अक्तूबर 2016, गोवा

बाल-साहित्य : वर्तमान और भविष्य
15 अक्तूबर 2016, ऑरविलै, तमिलनाडु

द्वंद्वात्मक क्षेत्रों से साहित्य और आख्यान
20 अक्तूबर 2016, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

निर्मला देवी
12 अक्तूबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

तमिऴ बाल पत्रिकाएँ
22 अक्तूबर 2016, कुंद्राकुडी, तमिलनाडु

उर्दू, मराठी, कोंकणी लोकगीत
23 अक्टूबर 2016, भिवंडी, महाराष्ट्र

ला.सा.रा. : जन्मशतवार्षिकी
26 अक्तूबर 2016, चेन्नै

लोकटक एवं मणिपुरी साहित्य
26 अगस्त 2016, मोइरङ, मणिपुर

साहित्यिक पत्रकारिता
26 अक्तूबर 2016, त्रिचूर, केरल

दक्षिण भारतीय कहानियों में समकालीन प्रवृत्तियाँ
27 अक्तूबर 2016, कुप्पम, आंध्र प्रदेश

ओड़िया साहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ
27 अक्तूबर 2016, भंजनगर, ओड़िशा

बचपन और पहचान
4 नवंबर 2016, आइज़ोल, मिज़ोरम

नेपाली कविता और कहानी के सौ वर्ष
5 नवंबर 2016, जोरथाङ, सिक्किम

नेपाली साहित्य में युवा लेखन
6 नवंबर 2016, गांतोक, सिक्किम

आंध्र पत्रिका का साहित्यिक अवदान
6 नवंबर 2016, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

वा. सूपा. मणिकम शतवार्षिकी
8 नवंबर 2016, तिरुचिपल्ली, तमिलनाडु

महाकवि वल्लत्तोल की काव्य दृष्टि
9 नवंबर 2016, मल्लपुरम, केरल

सी.पी. ब्राउन के अवदान और समकालीन प्रासंगिकता
10 नवंबर 2016, कडपा, आंध्र प्रदेश

माप्पिला साहित्य की कालजयी कृतियाँ और
माप्पिला साहित्य में समाजवादी कवि मेहर
12 नवंबर 2016, मल्लपुरम, केरल

तेलुगु स्त्री लेखन में विषय वैविध्य :
भूमंडलीकरण का प्रभाव
18 नवंबर 2016, हैदराबाद

कृष्णमूर्ति पुराणिक का जीवन और कृतित्व
20 नवंबर 2016, बेलगाम, कर्नाटक

संस्कृत और डॉ. अंबेडकर : संस्कृत साहित्य में
दलित-विमर्श
29 नवंबर 2016, नई दिल्ली

डी. जयकांतन
12 दिसंबर 2016, कोयंबटूर

परमहंस दासन : शताब्दीवर्ष
14 दिसंबर 2016, कटैकुडी, तमिलनाडु

जम्मू क्षेत्र में कश्मीरी साहित्य का विकास
15 दिसंबर 2016, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

सिंधी साहित्य में सिंधी लेखिकाओं का अवदान
20 दिसंबर 2016, उल्हासनगर, महाराष्ट्र

कोंकणी में जीवनी एवं आत्मकथात्मक साहित्य
24 दिसंबर 2016, एर्णाकुलम, केरल

मराठी में स्त्री विमर्श और स्वातंत्र्योत्तर
साहित्यिक आंदोलन
28 दिसंबर 2016, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

राष्ट्रवाद और भारतीय नेपाली साहित्य
29 दिसंबर 2016, तेजपुर, असम

परमानंद मेवाराम : जन्मशतवार्षिकी
1 जनवरी 2017, आदिपुर, कच्छ

तेनुगुलेंका तुमल्ला सीताराम मूर्ति का लेखन
3 जनवरी 2017, गुंटूर, आंध्र प्रदेश

वेल्लै वरननर
5 जनवरी 2017, मदुरै, तमिलनाडु

विजन भट्टाचार्य : जन्मशतवार्षिकी
5 जनवरी 2017, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

तमिलनाडु का ज़िला साहित्यिक गज़ेटियर की तैयारी
6 जनवरी 2017, गाँधीग्राम, तमिलनाडु

द्रविड़ियन काव्यशास्त्र
9 जनवरी 2017, तिरुवरुवर, तमिलनाडु

पिछले 25 वर्षों में मराठी साहित्य में हुए
प्रयोगों की समीक्षा
15 जनवरी 2017, सावंतवाडी, महाराष्ट्र

सिंधी साहित्य में व्यंग्य
22 जनवरी 2017, अहमदाबाद, गुजरात

पंजाबी व्याकरण : सिद्धांत और व्यवहार
24 जनवरी 2017, चंडीगढ़, पंजाब

पिछले 25 वर्षों में मराठी बाल साहित्य में
हुए विभिन्न प्रयोग
27 जनवरी 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

गुरु गोविंद सिंह
29 जनवरी 2017, मुंबई, महाराष्ट्र

मैथिली साहित्य का पूर्वोत्तरी भाषा पर प्रभाव
4 फ़रवरी 2017, मधुबनी, बिहार

मैथिली-असमिया साहित्य का परस्पर प्रभाव
5 फ़रवरी 2017, मधुबनी, बिहार

एल. समरेंद्र सिंह का जीवन और कृतित्व
28 फ़रवरी 2017, इंफ़ाल, मणिपुर

आधुनिक तमिळ एवं तेलुगु कवियों की तुलना
3 मार्च 2017, यानम, आंध्र प्रदेश

डोगरी साहित्य पर भूमंडलीकरण का प्रभाव
4 मार्च 2017, सांबा, जम्मू एवं कश्मीर

डोगरी भाषा में युवा लेखन
5 मार्च 2017, जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर

सी.वी. रमन पिल्लै के बाद का कथा-साहित्य
7 मार्च 2017, त्रिवेंद्रम, केरल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर परिसंवाद
8 मार्च 2017, नई दिल्ली

ओड़िया साहित्य में स्त्री-विमर्श
8 मार्च 2017, भुवनेश्वर, ओड़िशा

आज का भारतीय लेखन
14 मार्च 2017, लंदन

रचनात्मक बोडो साहित्य का इतिहास अनुवाद एवं ग्राह्यता
17 मार्च 2017, बिजनी, असम

पा. वेम आचार्य जन्मशतवार्षिकी
18 मार्च 2017, कार्कल, कर्नाटक

मैथिली-संताली : परस्पर संबंध और प्रभाव
18 मार्च 2017, जमशेदपुर, झारखंड

कन्नड कहानियाँ : रूप एवं प्रतिरोधों की बुनियाद
19 मार्च 2017, सिरसी, कर्नाटक

मैथिली-ओड़िया : परस्पर संबंध और प्रभाव
19 मार्च 2017, बोकारो स्टील सिटी, झारखंड

राजस्थान छंद परंपरा
19 मार्च 2017, श्रीडूंगरगढ़, राजस्थान

पंजाबीयत दे विकास दे भविखमुखी मॉडल
24 मार्च 2017, बादल, पंजाब

आर.वी. पंडित
26 मार्च 2017, गोवा

मेरे झरोखे से

स्वर्गीय श्री महीप सिंह के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित हिंदी लेखक श्री बलदेव वंशी
12 अप्रैल 2016, नई दिल्ली

डॉ. बनज देवी के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित ओड़िया लेखक श्री जयंती रथ
17 जून 2016, भुवनेश्वर

डॉ. लक्ष्य हीरा दास के जीवन और कृतित्व पर सुश्री बीबी देवी बरबरुआ
18 जून 2016, गुवाहाटी

डॉ. बटुकनाथ शास्त्री के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित संस्कृत लेखक सूर्यप्रकाश व्यास
26 जुलाई 2016, जयपुर

श्री जेठो लालवाणी के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित सिंधी लेखक श्री हूंदराज बलवाणी
21 अगस्त 2016, अहमदाबाद

डॉ. खुमांथेम प्रकाश सिंह के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित मणिपुरी लेखक डॉ. एच. बिहारी सिंह
28 सितंबर 2016, इंफ़ाल

श्री मोहन गेहाणी के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित सिंधी लेखक श्री खीमण मुलाणी
1 अक्तूबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रतिष्ठित मैथिली कथाकार राजमोहन झा पर सुविख्यात मैथिली लेखक डॉ. श्याम दरिहरे
16 अक्तूबर 2016, राँची, झारखंड

डॉ. मंगेश पडगाँवकर के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित सुश्री प्रभा गनोरकर
17 दिसंबर 2016, बुल्ढला, महाराष्ट्र

डॉ. जांबाज़ किश्तवारी के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित कश्मीरी लेखक डॉ. वली मो. असीर
18 दिसंबर 2016, जम्मू

डॉ. सुरेश्वर झा के जीवन और कृतित्व पर सुपरिचित मैथिली लेखक डॉ. अमलेंदु शेखर पाठक
5 फ़रवरी 2017, मधुबनी, बिहार

डॉ. अनीता देसाई के जीवन और कृतित्व पर
डॉ. जसबीर जैन
7 फ़रवरी 2017, जयपुर

भाऊ पाध्ये के जीवन और कृतित्व पर प्रतिष्ठित मराठी लेखक प्रो. भालचंद्र नेमाड़े
10 मार्च 2017, मुंबई

आर.वी. पंडित के जीवन और साहित्य पर सुपरिचित कोंकणी लेखक डॉ. प्रकाश वाज़रीकर
26 मार्च 2017, गोवा

श्री शिवनाथ के जीवन और कृतित्व पर प्रतिष्ठित डोगरी आलोचक प्रो. वीणा वर्मा
28 मार्च 2017, जम्मू

अनुवाद कार्यशाला

बहुभाषी अनुवाद कार्यशाला
19-21 मई 2016, माउंट आबू, राजस्थान

भारत में भक्ति परंपराएँ
26-27 मई 2016, गुवाहाटी, असम

नेपाली-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला
3-5 जून 2016, राँची, झारखंड

कश्मीरी-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला
21-26 जून 2016, श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर

बाङ्ला-नेपाली और बाङ्ला-असमिया शब्दकोश कार्यशाला
29-30 जून 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

तीन दिवसीय अनुवाद कार्यशाला : समीक्षा शब्दावली का अनुवाद
21-24 जुलाई 2016, पणजी, गोवा

अंग्रेज़ी-असमिया अनुवाद कार्यशाला
28-30 सितंबर 2016, डिब्रूगढ़, असम

खासी-उर्दू अनुवाद कार्यशाला
22-24 अक्तूबर 2016, शिलांग, मेघालय

खासी-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला
25-27 नवंबर 2016, शिलांग, मेघालय

मणिपुरी-बोडो अनुवाद कार्यशाला
26-27 नवंबर 2016, गुवाहाटी, असम

ओड़िया-संताली कहानी अनुवाद कार्यशाला
26-28 नवंबर 2016, पुरी, ओड़िशा

कोंकणी-पंजाबी अनुवाद कार्यशाला
26-28 जनवरी 2017, गोवा

हिंदी-अंग्रेज़ी अनुवाद कार्यशाला
9-11 फ़रवरी 2017, चंडीगढ़, पंजाब

उत्तर-पूर्वी भारत में कुछ वाचिक समुदायों के वाचिक संसाधनों के अनुवाद संबंधी कार्यशाला
24-25 फ़रवरी 2017, शिलांग, मेघालय

अनुवाद कार्यशाला
16-17 मार्च 2017, गुवाहाटी, असम

संताली-मैथिली कविता अनुवाद कार्यशाला
16-18 मार्च 2017, जमशेदपुर, झारखंड

वाचिक और जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

जनजातीय कवि सम्मिलन (हो भाषा)
16 जुलाई 2016, बारिपदा, ओड़िशा

जनजातीय लेखक सम्मिलन
27-28 अगस्त 2016, राँची, झारखंड

जम्मू और कश्मीर जनजातीय सम्मेलन
3-4 सितंबर 2016, कारगिल, लद्दाख़

वाचिक साहित्य की जड़ें
19-20 सितंबर 2016, गांतोक, सिक्कम

तमिलनाडु का जनजातीय वाचिक साहित्य
23-24 सितंबर 2016, पुदुचेरी

जनजातीय साहित्य और संस्कृति पर संगोष्ठी
19-20 नवंबर 2016, मुंबई, महाराष्ट्र

जनजातीय लेखक सम्मिलन
26-27 नवंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

जनजातीय भाषा एवं संस्कृति पर संगोष्ठी
7-8 दिसंबर 2016, कालीकट, केरल

ओड़िशा की जनजातीय भाषाओं और साहित्य पर संगोष्ठी
23 दिसंबर 2016, भुवनेश्वर, ओड़िशा

जनजातीय लेखक सम्मिलन
13 जनवरी 2017, नई दिल्ली

भारत में जनजातीय साहित्य और वाचिक अभिव्यक्तियों पर संगोष्ठी
10-11 फ़रवरी 2017, पोर्ट ब्लेयर

पूर्वोत्तर भारत में जनजातीय साहित्य की प्रवृत्तियाँ विषयक संगोष्ठी
28 फ़रवरी एवं 1 मार्च 2017, तुरा, मेघालय

कर्नाटक के जनजातीय महाकाव्य : एक पुनर्पाठ
27-28 मार्च 2017, सागर, कर्नाटक

लेखक सम्मिलन

संताली लेखक सम्मिलन
1 मई 2016, साहिबगंज, झारखंड

बोडो लेखकोत्सव
19-20 जून 2016, बीटीएडी, असम

सिंधी कवि संवाद
25-26 जून 2016, अहमदाबाद, गुजरात

बोडो कथाकार सम्मिलन
28 जुलाई 2016, लखीमपुर, असम

बाङ्ला कवि सम्मिलन
17-18 अगस्त 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

डोगरी कवि सम्मिलन
10 सितंबर 2016, जम्मू

नेपाली रचना-पाठ
11 सितंबर 2016, सिटोङ

कन्नड युवा लेखक सम्मेलन
17-18 सितंबर 2016, होन्नावारा

नेपाली कवि सम्मिलन
7-8 अक्तूबर 2016, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
कवि-सम्मिलन
28-29 सितंबर 2016, इंफ़ाल, मणिपुर

नेपाली कवि सम्मिलन
22 अक्तूबर 2016, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

नेपाली रचना पाठ
3-4 नवंबर 2016, जोरथाङ
युवा कवि सम्मिलन
22 नवंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

संस्कृत युवा कवि सम्मिलन
26-27 नवंबर 2016, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

तेलुगु लेखक सम्मिलन
10 दिसंबर 2016, यानम, आंध्र प्रदेश

नेपाली रचना पाठ
30 दिसंबर 2016, उदलगुड़ी, असम

संताली कवि सम्मिलन
30 दिसंबर 2016, तेजपुर, असम

अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मिलन
31 जनवरी 2017, गुरुवायूर, केरल

कवयित्री सम्मिलन
8 मार्च 2017, नई दिल्ली

मैथिली कवि सम्मिलन
19 मार्च 2017, बोकारो स्टील सिटी, झारखंड

अखिल भारतीय संताली लेखक सम्मिलन
30-31 मार्च 2017, नई दिल्ली

युवा साहिती

युवा संताली लेखक सम्मिलन
30 अप्रैल 2016, दुमका, झारखंड

अखिल भारतीय युवा लेखकोत्सव
28-29 मई 2016, अगरतला, त्रिपुरा

राजस्थानी युवा लेखक सम्मिलन
12-13 सितंबर 2016, जोधपुर, राजस्थान

युवा ओड़िया लेखक सम्मिलन
9 जनवरी 2017, भुवनेश्वर, ओड़िया

युवा साहिती : विभिन्न भाषाओं के युवा लेखक
10 जनवरी 2017, नई दिल्ली

युवा साहिती : युवा तमिऴ लेखक
3 फ़रवरी 2017, त्रिची, तमिलनाडु

युवा साहिती : युवा मैथिली लेखक
5 फ़रवरी 2017, मधुबनी, बिहार

2016–2017 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्टें

साहित्योत्सव 2017

21-26 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2016 का उद्घाटन

साहित्य अकादेमी के वार्षिक साहित्योत्सव का आरंभ अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी से हुआ। प्रदर्शनी में अकादेमी की वर्ष 2016 की गतिविधियों तथा उपलब्धियों को दर्शाया गया। प्रख्यात संस्कृत विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. सत्यव्रत शास्त्री ने साहित्य अकादेमी की वार्षिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए संस्कृत आचार्यों द्वारा साहित्य के बारे में दी गई परिभाषाओं को उद्धृत करते हुए कहा कि साहित्यकार काव्य रचना करते हुए अपने लिए एक अलग संसार की रचना करते हैं, जो साहित्यिक रचना का रूप प्राप्त कर अजर-अमर हो जाता है। साहित्य अकादेमी को उन्होंने लेखकों की संस्था बताते हुए कहा कि देश में इसने अनुकरणीय मानक

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए डॉ. सत्यव्रत शास्त्री

स्थापित किए हैं। इससे पहले अपने संक्षिप्त उद्‌गार में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी की वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए अकादेमी परिवार को बधाई दी।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने वर्ष 2016 की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 580 कार्यक्रम किए यानी हर 15 घंटे में एक कार्यक्रम, 482 पुस्तकें प्रकाशित कीं अर्थात् हर अठारह घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन। अकादेमी ने देशभर के 178 पुस्तक मेलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

भाषा सम्मान अर्पण समारोह

21 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

थुप्सटन पालदन एवं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्योत्सव के दौरान पहली बार आयोजित अकादेमी के भाषा सम्मान अर्पण समारोह में हल्बी, कुड़ुख एवं लद्‌दाखी भाषाओं के चार विद्वानों सर्वश्री हरिहर वैष्णव, निर्मल मिंज, लोजङ जमस्पल एवं थुप्सटन पालदन को सम्मानित किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के संक्षिप्त स्वागत भाषण के पश्चात् उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सम्मानित विद्वानों का पुष्पगुच्छ और शॉल से अभिनंदन किया। ताम्रफ़लक एवं पुरस्कार राशि का चेक अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किए गए। प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव ने पढ़े। समारोह में स्वीकृति वक्तव्य देने के क्रम में विद्वानों ने अपनी सृजन-यात्रा के अनुभव साझा किए तथा संक्षेप में अपनी भाषाओं की वर्तमान स्थिति और अपने द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। स्वास्थ्यगत कारणों से श्री हरिहर वैष्णव तथा लोजङ जमस्पल समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। डॉ. तिवारी ने इस अवसर पर कहा कि भूमंडलीकरण के युग में विविधता और विभिन्न परंपराओं और साहित्य का ह्रास हो रहा है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम विभिन्न भाषाओं के लेखकों और साहित्य का आदर करें, क्योंकि यदि हम इसमें असफल होते हैं तो यह हमारी भाषाओं की असफलता है।

'मातृभाषा संरक्षण' विषयक संगोष्ठी

21-22 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा 21 फ़रवरी 2017 को 'मातृभाषा संरक्षण' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन रवींद्र भवन परिसर में किया गया। उद्‌घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों का स्वागत किया तथा मातृभाषा का अभ्यास न किए जाने के खतरों के बारे में भी बात की। उन्होंने अर्जित भाषा से ऊपर मातृभाषा के फ़ायदों पर प्रकाश डाला।

बाएँ से दाएँ : डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. एस.एल. भैरप्पा, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्री ध्रुवज्योति बोरा एवं डॉ. के. श्रीनिवासराव

अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रतिष्ठित कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. एस.एल. भैरप्पा ने समसामयिक शैक्षणिक क्षेत्र में मूल भाषाओं के लिए ख़तरे की रोशनी में शैक्षणिक पद्धतियों में आए बदलाबों की वक़ालत की तथा मातृभाषाओं की महत्ता पर बल दिया। उन्होंने महसूस किया कि आज कई भाषाएँ लुप्त होने के कगार पर हैं तथा इन भाषाओं के लुप्त हो जाने के साथ ही हमारी स्वदेशीय ज्ञान पद्धतियों का बहुत बड़ा भाग भी विलुप्त हो जाएगा। अपने बीज वक्तव्य में ध्रुवज्योति बोरा ने कहा कि मातृभाषाएँ तथा क्षेत्रीय भाषाएँ भारत की आत्मा हैं। मातृभाषा के माध्यम से ही स्वतंत्रता का विचार प्रसारित हो सका है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने मौलिक लेखन के क्षेत्र में मातृभाषा की महत्ता को बारंबार दोहराया। अकादेमी के उपाध्यक्ष प्रो. चंद्रशेखर कंबार ने समापन वक्तव्य देते हुए कहा कि दिन-प्रतिदिन मातृभाषा की भूमिका अधिक से अधिक हाशिए पर अकेली जा रही है। इस परिस्थिति को बदलने के लिए मातृभाषा को शैक्षणिक प्रणाली के केंद्र में लाया जाना चाहिए। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित ओड़िया कवि एवं विद्वान डॉ. सीताकांत महापात्र ने की तथा तीन प्रतिष्ठित विद्वानों प्रो. उदय नारायण सिंह, प्रो. मिशल सुल्तानपुरी एवं प्रो. पलाश बरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. उदय नारायण सिंह ने मूल भाषाओं की ''हत्या'' के कारणों एवं तर्कों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इसके लिए औपनिवेशीकरण, भूमंडलीकरण, शहरीकरण, जातिसंहार, प्राकृतिक आपदाओं सहित 30 अन्य कारणों को ज़िम्मेदार ठहराया। प्रो. मिशल सुल्तानपुरी ने प्रति वर्ष 21 फ़रवरी को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के ऐतिहासिक महत्त्व एवं पृष्ठभूमि के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि इस दिन को ढाका में शुरू हुए भाषा आंदोलन के परिणाम के रूप में ही मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि भाषाएँ यादों का ख़ज़ाना प्रदान करती हैं तथा अरस्तु से लेकर महात्मा गाँधी तक विश्व भर के सभी नेता एवं शिक्षाविद मातृ-भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में रहे हैं। उन्होंने इस तथ्य पर खेद प्रकट किया कि जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी तथा डोगरी एवं अन्य भाषाएँ भूमंडलीकरण तथा व्यवसायीकरण के कारण खतरे में हैं। अपने आलेख में, प्रो. पलाश वरन पाल ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बंगाल में शिक्षित लोग भी अपनी मातृभाषा बाङ्ला से अधिक हिंदी एवं अंग्रेज़ी को वरीयता देते हैं। उन्होंने महसूस करते हुए कहा कि बंगाल तथा

बांग्लादेश के मध्य फ़िल्मों एवं किताबों का लेन-देन/विक्रय निःशुल्क किया जाना चाहिए। अपने समापन वक्तव्य में डॉ. सीताकांत महापात्र ने कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भाषाओं में वार्षिक पुरस्कार, भाषा सम्मान, बाल साहित्य पुरस्कार तथा 24 भाषाओं में अनुवाद पुरस्कार प्रदान कर मातृभाषा के प्रयोजन को प्रोत्साहित कर रही है। उन्होंने उल्लेख किया कि ओड़िशा में सबसे बड़ी पोथी अथवा ताड़पत्र लाइब्रेरी है। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य है सभी राज्यों में स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा पुस्तकालयों का विकास किया जाना। संगोष्ठी के दूसरे सत्र (पहले दिन) में अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने सत्र के अध्यक्ष तथा वक्ताओं का स्वागत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी विद्वान एवं लेखक प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने की तथा तीन विद्वानों श्री राहुल देव, श्री चंद्रप्रकाश देवल तथा श्री अनीसुर रहमान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि साहित्य अकादेमी आना उनके लिए 'घर लौटने' जैसा है तथा यह भी कहा कि वर्तमान विषय 'मातृभाषा संरक्षण' औपनिवेशिक काल से अर्थात् लगभग पिछले सौ सालों से चर्चा का विषय रहा है। उन्होंने उन परिस्थितियों का स्मरण कराया, जिनके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस उभरकर आया, कई आंदोलनों में भाषाओं द्वारा निभाई गई भूमिका पर प्रकाश डाला तथा टैगोर के इस कथन का भी स्मरण कराया कि एक बालक तभी बेहतर कर सकता है, जब उसे उसकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान की जाए। पहले वक्ता के रूप में डॉ. चंद्रप्रकाश देवल ने कहा कि केवल भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों से जुड़ सकता है, बात कर सकता है या अपने विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकता है या यहाँ तक कि किसी साधारण घटना का वर्णन भी कर सकता है। यदि हम किसी व्यक्ति की मातृभाषा को संरक्षित नहीं करते हैं तो हम उस व्यक्ति के समुदाय के इतिहास को रिकॉर्ड कर पाने में सक्षम नहीं हो पाएँगे और न ही ईश्वर एवं पौराणिक कथाओं के बारे में बात कर पाएँगे। उन्होंने कहा कि मनुष्य द्वारा किए गए सभी आविष्कारों में से भाषा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आविष्कार है तथा आगे ग़ालिब को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि यदि भाषा विलुप्त हो जाएगी तो व्यक्ति की पहचान के साथ ही साथ संस्कृति भी विलुप्त हो जाएगी। अगले वक्ता के रूप में, श्री राहुल देव ने अपना व्याख्यान प्रारंभ करते हुए कहा कि हम भाषाओं की रक्षा तभी कर सकते हैं जब हमारा समाज गंभीरतापूर्वक इस बात को लेकर चिंतित हो कि हमारी भाषाएँ खतरे में हैं। उन्होंने कहा कि न केवल लघु भाषाएँ एवं बोलियाँ बल्कि मुख्य भाषाएँ, जो प्राचीन तथा समृद्ध हैं, वह भी निकट भविष्य में विलुप्त होने की कगार पर हैं। उन्होंने सूचित किया कि यूनेस्को ने गहन शोध के पश्चात्, विश्वभर में किसी विशेष भाषा की जीवंतता का आकलन करने हेतु 9 मापदंड तैयार किए हैं—(1) पीढ़ी-दर-पीढ़ी होकर गुज़रने वाली भाषा की प्रक्रिया, (2) इस विशेष भाषा का प्रयोग करने वाले लोगों की एक संख्या, क्या वह बढ़ रही है या घट रही है, (3) किसी विशेष समुदाय में इस भाषा का प्रयोग कर रहे लोगों का कुल अनुपात, (4) वे कौन से क्षेत्र हैं जिनके अंतर्गत इस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, (5) क्या हमारे क्षेत्रों की संख्या बढ़ रही है अथवा घट रही है, (6) तकनीक, ज्ञान इत्यादि, क्या नए आविष्कार इस भाषा में प्रयोग किए जा रहे हैं, (7) भाषा के प्रति सरकारी एवं ग़ैर-सरकारी संस्थाओं की नीतियाँ/रवैया, (8) किसी विशेष भाषा में शिक्षा प्रदान करने संबंधी नई प्रणाली क्या है तथा (9) विशेष भाषा में नई प्रणाली विकसित की जा रही है। सत्र के अंतिम वक्ता प्रो. अनीसुर रहमान ने महसूस करते हुए कहा कि भाषाएँ, जो सिकुड़े हुए भाषाई स्थानों में बोली जा रही हैं वे या तो मरणासन्न हैं अथवा उन्हें

अतीत की निशानी के रूप में परिरक्षित रखा गया है। उन्होंने कहा कि मातृभाषा संरक्षण का अर्थ है व्यक्ति की पहचान, समुदाय तथा संस्कृति का संरक्षण। मातृभाषा संरक्षण के कई माध्यम एवं तरीके हैं परंतु ऐसा करने का कोई एक नियम/नुस्ख़ा नहीं है क्योंकि भाषाओं को बनाए रखने तथा जीवित रखने के लिए किसी एक सूत्रित प्रणाली को नहीं अपनाया जा सकता। सत्र का समाहार करते हुए प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने माइकल मधुसूदन दत्त तथा कुलदीप सलिल की एक-एक कविता का पाठ किया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. चंद्रप्रकाश देवल ने की तथा दो सुपरिचित विद्वानों—श्री वासदेव मोही एवं श्री सा. कंदासामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री देवल ने कार्यवाही शुरू करते हुए कहा कि सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने के प्रयास में मातृभाषा संरक्षण आधारभूत घटक है। श्री वासदेव मोही ने कहा कि महत्त्वहीन भाषाएँ संपूर्ण समुदाय की पहचान को जोख़िम में डाल देती हैं तथा यह भी कहा कि अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों की विचार-प्रक्रिया अधिगृहीत/उपार्जित भाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों से काफी बेहतर होती है। श्री सा. कंदासामी ने कहा कि 7000 भाषाओं के सामाजिक-भाषायी शोधकर्ताओं के अनुसार 90% भाषाएँ शताब्दी के रूपांतरण तक विलुप्त हो जाएँगी। उन्होंने कहा कि भाषा केवल ध्वनि नहीं है बल्कि संस्कृति, विरासत, दर्शनशास्त्र, साहित्य एवं सभ्यता के ज्ञान का आधार है। अपने वक्तव्य का समाहार करते हुए उन्होंने प्रसिद्ध चीनी दार्शनिक लाओ जू को उद्धृत करते हुए कहा ''यदि आपको एक हज़ार मील भी चलना पड़ता है तो कोई बात नहीं पहला कदम उठाएँ'', जो उचित ढंग से हमारी मातृभाषाओं की रक्षा करने के लिए नए क़दम उठाते हुए मार्ग प्रशस्त करता है।

लेखक से भेंट : रूपा बाजवा

22 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी पुरस्कृत भारतीय अंग्रेज़ी लेखिका रूपा बाजवा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम को साहित्य अकादेमी ने 30 वर्षों पूर्व आरंभ किया था, इस कार्यक्रम में प्रख्यात लेखकों को उनके जीवन एवं कार्यों पर चर्चा करने हेतु आमंत्रित किया जाता है। सुश्री बाजवा को उनके उपन्यास 'द साड़ी शॉप' के लिए 2004 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि उनके उपन्यास हाशिए का जीवन जीनेवाले व्यक्तियों के जीवन तथा समाज के शक्ति-संतुलन का चित्रण करते हैं, जिससे उनके जीवन का निर्माण होता है। मुझे इस बात से नाराज़गी है कि महानगरों में रहनेवाले यह तय करें कि कौन लिखेगा?

सुश्री बाजवा ने अपनी रचना प्रक्रिया को साझा करते हुए बताया कि चेख़व और मंटो उनके प्रिय लेखक हैं। वे छोटे शहरों को हाशिए के स्थान मानती हैं। उनके अनुसार अंग्रेज़ी को अपने उच्च शिखर से उतरकर आम जन तक पहुँचने की ज़रूरत है ताकि वे अपनी दुनिया को अंग्रेज़ी में भी खोज सकें। उन्होंने बताया कि वह इंजीनियरिंग की छात्रा रहीं और उन्होंने 18 वर्ष की आयु में अमृतसर छोड़ दिया तथा विभिन्न शहरों में शिक्षा ग्रहण की एवं कार्य करती रहीं। श्रोताओं द्वारा उनकी रचना प्रक्रिया के बारे में बहुत से सवाल किए गए, जिनके उत्तर सुश्री बाजवा ने बहुत सहजता से दिए।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह

22 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

अकादेमी पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि तथा अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव

22 फ़रवरी 2017 की शाम को कमानी सभागार, नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 के विजेता लेखकों को अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अकादेमी पुरस्कार से विभूषित किया। ये पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त 24 भारतीय भाषाओं के लिए दिसंबर 2016 में घोषित किए गए थे। पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात भौतिक विज्ञानी और मराठी लेखक डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर थे। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी पुरस्कृत लेखकों का माल्यार्पण कर उनका अभिनंदन किया तथा प्रशस्ति पाठ अकादेमी के सचिव द्वारा किया गया। अकादेमी के अध्यक्ष ने पुरस्कार प्राप्त 20 लेखकों को अंगवस्त्रम्, ताम्र फ़लक और एक लाख रुपए की पुरस्कार राशि का चेक प्रदान किए। डोगरी, अंग्रेज़ी, संस्कृत और सिंधी भाषाओं के पुरस्कृत लेखक किन्हीं कारणों से पुरस्कार ग्रहण करने के लिए उपस्थित नहीं हो सके।

समारोह का आरंभ वंदना से हुआ। तत्पश्चात् अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की उपलब्धियों का संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया तथा कहा की अकादेमी लेखकों का घर है। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि अकादेमी के इस मंच और सभागार में पूरा देश उपस्थित है, जो इसकी विशिष्टता है। उन्होंने पुरस्कृत लेखकों को बधाई देते हुए कहा कि मैं पुरस्कार की बजाय सम्मान कहना पसंद करता हूँ, क्योंकि पुरस्कार में धन की गंध आती है, जो एक सच्चे साहित्यकार के लिए तुच्छ है। डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ने कहा कि समाज के मूल्यों और संस्कृति को साहित्य ही संप्रेषित कर सकता है, तकनीकी नहीं; लेकिन साहित्य को तकनीकी की सहायता से बेहतर ढंग से संप्रेषित किया जा सकता है। ज्ञान के प्रभाव को भी केवल साहित्य और साहित्यकारों के द्वारा अभिव्यक्त किया जाना संभव है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी और सभी का आभार व्यक्त किया।

पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद सुश्री संध्या पुरेचा द्वारा नाट्य की प्रस्तुति की गई।

युवा साहिती : नई फ़सल

23 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के तीसरे दिन का आरंभ संपूर्ण देश के युवा रचनाकारों की सृजनात्मकता को एक मंच पर प्रस्तुत करने के कार्यक्रम 'युवा साहिती : नई फ़सल' के साथ हुआ। प्रख्यात तमिळ लेखक बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात तेलुगु लेखक और लोकगीतकार गोरेटी वेनकन्ना उपस्थित थे। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए युवा लेखकों के लिए अकादेमी द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया। बी. जयमोहन ने उद्घाटन भाषण में पिछले सौ वर्षों में आधुनिक तमिळ काव्य में धर्म और संस्कृति की उपस्थिति पर अपनी बात प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि हमारे आधुनिक साहित्य में धर्म और संस्कृति के प्रतीक पश्चिमी दबाव के कारण लुप्त होते जा रहे हैं। जब कि नई पीढ़ी को भी धर्म और संस्कृति के ज़रिए वर्तमान को पहचानने की दृष्टि मिलनी चाहिए। तेलुगु गायक और लेखक गोरेटी वेनकन्ना ने दो गीत प्रस्तुत किए। सस्वर गाए गए इन गीतों ने श्रोताओं को बेहद प्रभावित किया। इसके बाद अविनुयो किरे (अंग्रेज़ी), प्रतिष्ठा पंड्या (गुजराती), निशांत (हिंदी), बी. रघुनंदन (कन्नड), समप्रीथा केशवन (मलयाळम्) और मोइन शादाब (उर्दू) ने अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने एक कविता अपनी मातृभाषा में प्रस्तुत की तथा शेष कविताओं के अंग्रेज़ी/हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए।

युवा साहिती के पहले सत्र में प्रख्यात लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास से युवा लेखकों का संवाद कराया गया। युवाओं ने उनकी रचना-प्रक्रिया तथा वर्तमान में विभिन्न दबावों के बीच उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन कैसे हो पर उनकी राय जानी। मनोज दास ने कहा कि युवा लेखकों को मिथकीय कहानियों का पुनर्लेखन करते हुए अथवा मिथकीय चरित्रों को पुनर्परिभाषित करते हुए विशेष ध्यान देना चाहिए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता अंतरा देव सेन ने की और इसमें बिपाशा बोरा (असमिया), देवदान चौधुरी (अंग्रेज़ी) और एस. राजमणिखम (तमिळ) ने 'लेखन : जुनून या व्यवसाय' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र में वक्ताओं ने श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए। विमर्श में यह बात उभर कर सामने आई कि लेखन व्यवसाय की अपेक्षा जुनून ही ज़्यादा है।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता कवि ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने की, जिसमें सायंतनि पुतातुंडा (बाङ्ला), परगत सिंह सतौज (पंजाबी), पूदूरी राजी रेड्डी (तेलुगु) और कोमल दयालानी (सिंधी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि बोधिसत्व ने की, जिसमें केवल कुमार केवल (डोगरी), मुज़फ़्फ़र हुसैन दिलबीर (कश्मीरी), इकनाथ गाउँकर (कोंकणी), चंदन कुमार झा (मैथिली), सुशील कुमार शिंदे (मराठी), बुद्धिचंद्र हेइसनाम्बा (मणिपुरी), अमर बानिया लोहोरू (नेपाली), इप्शिता षड़ंगी (ओड़िया), राजू राम बिजारणियां 'राज' (राजस्थानी) और महेश्वर सोरेन (संताली) ने अपनी-अपनी कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़ीं।

लेखक सम्मिलन

23 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

23 फ़रवरी 2017 को 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। उपस्थित पुरस्कार विजेताओं ने अपने जीवन, कार्यों, सृजनात्मक लेखन की प्रक्रिया आदि की चर्चा की।

श्रीमती नासिरा शर्मा एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

असमिया : पुरस्कृत कृति *मेघमालार भ्रमण* (कविता-संग्रह) के कवि श्री ज्ञान पुजारी ने सृजनात्मक प्रक्रिया की चर्चा की तथा अपनी कुछ कविताएँ भी पढ़कर सुनाईं।

बाङ्ला : पुरस्कृत कृति *महाभारतेर अष्टादशी* (निबंध-संग्रह) के लेखक डॉ. नृसिंह प्रसाद भादुड़ी ने महाकाव्य महाभारत, महिला नायिकाओं तथा इस महाकाव्य से सीखे पाठों की चर्चा की।

बोडो : पुरस्कृत कृति *आं माबोरै दं दासों* (काव्य-संग्रह) की लेखिका श्रीमती अंजली बसुमतारी ने कहा, "मुझे सृजनात्मक कविता लेखन का प्रोत्साहन अपनी आत्मा से मिला। यह प्रेरणा प्राकृतिक सुंदरता, विभिन्न मुद्दों तथा वास्तविक जीवन की घटनाओं से मिली। कविता मुझको अलग संसार में ले जाती है। मैंने अपनी जीवन-यात्रा का मुश्किल समय कविता के सहारे बिताया है...।"

गुजराती : पुरस्कृत कृति *अनेकएक* (कविता-संग्रह) के कवि श्री कमल वोरा ने कहा कि, "मैं अपने 'अंतरमन' की खोज के लिए कविता नहीं लिखता हूँ वरन् कविता के सत्य से आमना-सामना करने के लिए लिखता हूँ। इस प्रकार का सामना मुझे अपने टुकड़ों को जोड़ने के लिए विवश करता है, मुझे पूर्ण बनाता है तथा मुझे शुद्ध कविता के समक्ष खड़ा करता है।"

हिंदी : पुरस्कृत कृति *पारिजात* (उपन्यास) की लेखिका श्रीमती नासिरा शर्मा ने अपने व्याख्यान के आरंभ में कहा, "कभी जन्नत तो कभी दोज़ख", यह वाक्य दरअसल मेरी ज़िंदगी का निचोड़ है। उन्होंने आगे कहा कि उनका यह उपन्यास *पारिजात* एक ऐसा वृक्ष है जो 'सागर मंथन' के दौरान निकला था जिसकी एक शाखा को कृष्ण ने 'कंचन वन' में रस्सी से बांधा था जो बारबंकी, उत्तर प्रदेश में अब भी उपलब्ध है।

कन्नड : पुरस्कृत कृति *स्वतंत्रायदा ओटा* (उपन्यास) के लेखक श्री बोलवार महमद कुंञि ने अकादेमी का उन्हें सम्मानित करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा अपने आरंभिक जीवन का लेखन पर पड़े प्रभावों तथा सृजनात्मक लेखन प्रक्रिया की चर्चा की।

कश्मीरी : पुरस्कृत कृति *आने ख़ानः* (आलोचनात्मक निबंध-संग्रह) के लेखक डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने अपने व्याख्यान में ग़ालिब की पंक्तियों, "देखना तक़रीर की लज़्ज़त की जो उसने कहा/मैंने यूँ जाना की ये भी मेरे दिल में हैं",

से की। उन्होंने आगे कहा कि "मेरी समझ में एक अच्छा आलोचक वो होता है जो पाठक को एक सृजनात्मक कार्य की प्रशंसा करने पर विवश करे। उसका मूलभूत कार्य विश्व में छुपी हुई संभावनाओं को उजागर करना तथा परिकल्पना का उत्कृष्ट साहित्यिक कार्य होना चाहिए। मेरी समझ में साहित्यिक समालोचना पाठकों के अनुकूल होनी चाहिए।"

कोंकणी : पुरस्कृत कृति *काळें भांगार* (उपन्यास) के लेखक श्री एडविन जे.एफ़. डिसोजा ने अपने व्याख्यान में कहा, "काळें भांगार का अर्थ है काला सोना जो कच्चे तेल का पर्यायावाची है जिससे विभिन्न पैट्रोलियम पदार्थ बनाए जाते हैं तथा जिससे समस्त संसार चलता है या उसका प्रयोग करता है।" उन्होंने आगे कहा कि, "यह उपन्यास न सिर्फ़ काले सोने की प्रक्रिया की चर्चा करता है बल्कि इस उपन्यास में कई चीज़ें समाविष्ट हैं।"

मैथिली : पुरस्कृत कृति *बड़की काकी एट हॉटमेल डॉट कॉम* (कहानी-संग्रह) के लेखक श्री श्याम दरिहरे ने अपने व्याख्यान में अपने उन निजी अनुभवों के बारे में बताया जिन्होंने उन्हें कवि और लेखक बनने में सहायता की। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें लेखक बनाने में उनके पिताजी की अहम भूमिका रही है।

मलयाळम् : पुरस्कृत कृति *श्याममाधवम* (काव्योपन्यास) के लेखक श्री प्रभा वर्मा ने अपने व्याख्यान में कहा, "लेखक उस पहचान के लिए नहीं लिखते जो सत्ताआसीन उन्हें प्रदान कर सकते हैं। यदि कोई पहचान प्रदान नहीं भी करता, तो भी लेखक लिखते हैं। क्या वाल्मिकी ने प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए लिखा? क्या महाभारत लिखते समय व्यास ने किसी पुरस्कार की अपेक्षा की थी? नहीं, लेखक केवल लिखते हैं। उनके पास लिखने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता।"

मणिपुरी : पुरस्कृत कृति *चेपथरबा इशिङपुन* (कहानी-संग्रह) के लेखक श्री मोइराङ्थेम राजेन ने अपने आलेख में मणिपुरी साहित्यिक परंपरा तथा अपनी लेखन-यात्रा संबंधी अपने विचार व्यक्त किए।

मराठी : पुरस्कृत कृति *लोकसत्ता* (कहानी-संग्रह) के लेखक श्री आसाराम मारोताव लोमटे ने कहा, "मेरी समझ में वर्तमान समय में लेखकों पर अत्याधिक ज़िम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया है। समय की मांग है कि कुछ ऐसा लिखा जाए जो लोगों को अधीर, व्याकुल कर दे तथा उनकी आत्मकेंद्रित संवेदना द्रवित हो जाए। बाज़ार में स्वस्थ्य जीवन के लिए बहुत वस्तुएँ मिल जाएँगी, किंतु लेखक को किसी को परेशान या किसी को नुक़सान पहुँचाने के लिए नहीं लिखना चाहिए।"

नेपाली : पुरस्कृत कृति *जन्मभूमि मेरो स्वदेश* (उपन्यास) की लेखिका सुश्री गीता उपाध्याय ने अपने व्याख्यान में कहा कि, "यह उपन्यास छबिलाल उपाध्याय के जीवन तथा देश के स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित है। यह पूर्वोत्तर में हुए स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया उपन्यास है।

ओड़िया : पुरस्कृत कृति *प्राप्ति* (कहानी-संग्रह) की लेखिका श्रीमती पारमिता शतपथी ने कहा कि, "मनुष्य रूप में, महिला के रूप में मैं कई अवसरों पर संकोची स्वभाव की हूँ। किन्तु, लेखन मेरा अपना कार्यक्षेत्र है जिसमें मैं बिलकुल स्वछंद महसूस करती हूँ तथा मैं इसमें पनाह लेती हूँ...।"

पंजाबी : पुरस्कृत कृति *मस्सया दी रात* (नाटक) के लेखक डॉ. स्वराजबीर सिंह ने कहा कि, "मेरा अनुभव दर्शाता है कि लेखक की विचारधारा से भाषा की बेड़ी तोड़ने की अपेक्षा की जाती है। यह एक दुर्जेय कार्य है। यह सरल नहीं है...।"

राजस्थानी : पुरस्कृत कृति *मरदजात अर दूजी कहाणियाँ* (कहानी-संग्रह) के लेखक श्री बुलाकी शर्मा ने अपने संग्रह की एक कहानी *मरदजात* की चर्चा करते हुए पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति तथा उनके कष्टों एवं विलाप का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया।

संताली : पुरस्कृत कृति *नाल्हा* (कविता-संग्रह) के लेखक श्री गोबिंद चंद्र माझी ने अपने व्याख्यान में संताल जीवन तथा संताली काव्य की विभिन्न विधाओं की विशेषताओं की चर्चा की।

तमिऴ : पुरस्कृत कृति *ओरु सिरु इसै* (कहानी-संग्रह) के लेखक श्री वन्नदासन (एस. कल्याणसुंदरम) ने कहा, "मेरी समझ में छोटी चीज़ें ही वास्तव में बड़ी होती हैं। अपनी छोटी वस्तुओं के सहारे ही यह छोटे लोग संसार को उज्ज्वल तथा सुंदर बनाते हैं। जब 'छोटी वस्तुओं का ईश्वर' हो सकता है तो 'छोटी वस्तुओं का मनुष्य' भी हो सकता है।"

तेलुगु : पुरस्कृत कृति *रजनीगंधा* (कविता-संग्रह) के लेखक डॉ. पापिनेनि शिशंकर ने कहा, "कोई भी लेखक अपने लेखन द्वारा सामाजिक व्यवस्था को नहीं बदल सकता।" अपने भाषण के अंत में उन्होंने अपने कविता-संग्रह 'रजनीगंधा' से कुछ कविताएँ भी पढ़कर सुनाईं।

उर्दू : पुरस्कृत कृति *माबाद-ए-जदीदियत से नये अहद की तख़लीक़ियत तक* (समालोचना) के लेखक डॉ. निज़ाम सिद्दीक़ी ने कहा कि पुरस्कृत पुस्तक की विषय-वस्तु में नए युग की सृजनात्मकता का उत्तर-आधुनिकता के व्यापक नज़रिए से समावेश किया गया है। उन्होंने आगे कहा कि, "यह पुस्तक सावधानी पूर्वक कुशलता से लिखी गई है किंतु इसी के साथ ही साथ यह रचनात्मक लेखक, जीवनपर्यंत उत्साही विद्वान तथा प्रखर विचार वाले व्यक्ति को समाहित करने वाली एक उच्च स्तरीय साहित्यिक समालोचनात्मक कृति है।"

संवत्सर व्याख्यान : डॉ. रामचंद्र गुहा

23 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतर्गत 23 फ़रवरी 2017 की शाम को प्रख्यात विद्वान एवं इतिहासकार डॉ. रामचंद्र गुहा ने अकादेमी की प्रतिष्ठित संवत्सर व्याख्यानमाला के अंतर्गत 'ऐतिहासिक जीवनी का शिल्प' विषयक व्याख्यान दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए डॉ. गुहा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुष्पगुच्छ तथा पुस्तकें भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

संवत्सर व्याख्यान देते हुए डॉ. रामचंद्र गुहा

डॉ. गुहा ने बताया कि कैसे वेरियन एल्विन के जीवन एवं कृतित्व ने उन्हें एवं उनके दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया। उन्होंने उनकी जीवनी लेखन के अपने प्रयत्न को संदर्भित करते हुए जीवनी लेखन की चुनौतियों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक जीवनी इतिहास का वह हिस्सा है, जो साहित्य से सबसे अधिक जुड़ा हुआ है। इतिहास समाजशास्त्र और साहित्य के बीच डोलता है। इतिहासकारों द्वारा जीवनी लेखन से दूर रहने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने इसका पहला कारण धार्मिक विरासत को बताया। हिंदुत्व जैसे धर्म-कर्म एवं पुनर्जन्म आधारित व्यवस्था पर अपने पारंपरिक विश्वास के नाते जीवनी लेखन के विरोधी हैं। दूसरा कारण वैचारिक विरासत है, विशेषकर मार्क्सवाद, चूँकि मार्क्सवाद व्यक्ति को कम महत्त्व देता है। तीसरा कारण इतिहास का समाजशास्त्र के

प्रति झुकाव है, यद्यपि इतिहास साहित्य की शाखा के रूप में शुरू हुआ। चौथा कारण भारतीयों द्वारा अभिलेख की भिन्नताएँ हैं। देश के केंद्रीय एवं राज्य अभिलेखागार पूरी तरह अव्यवस्थित हैं। पाँचवा कारण यह है कि भारतीय जीवनी लेखन में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के दोषों के उल्लेख में संकोची हैं। छठा कारण यह है कि जीवनी लेखन चुनौतीपूर्ण साहित्यिक विधा है। सातवाँ कारण यह है कि जीवनी लेखन में एक लेखक को अपने अहं को दबाकर दूसरे अहंकारी लेखक के बारे में लिखना होता है। मुख्यतः यही वे कारण हैं, जिनके कारण ऐतिहासिक जीवनियों को व्यापक स्वीकृति कभी नहीं मिली। उन्होंने जीवनी लेखन के चार केंद्रीय सिद्धांत बताए : (क) द्वितीयक चरित्र भी कहानी के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं, (ख) जीवनी लेखक को केंद्रीय चरित्र के अलावा भी अन्य स्रोतों को भी देखना चाहिए, (ग) जीवनी लेखक को पूर्वाग्रही नहीं होना चाहिए; तथा (घ) जीवनी लेखक दूसरी जीवनियों से प्रभावित नहीं होना चाहिए। व्याख्यान के बाद डॉ. गुहा ने सुधी श्रोताओं द्वारा की गई जिज्ञासाओं का भी शमन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लेखक, विद्वान और साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

24-26 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 24 फ़रवरी 2017 को 'लोक साहित्य : कथन एवं पुनर्कथन' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य प्रतिष्ठित लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. मनोज दास ने दिया। आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए लोकसाहित्य के महत्त्व और प्रासंगिकता पर संक्षेप में प्रकाश डाला और कहा कि इनमें समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ ही नहीं, वरन् ऐतिहासिक साक्ष्य भी अभिलेखित हैं।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रो. मनोज दास ने कहा कि लोकसाहित्य हमारे साहित्य का व्यापक हिस्सा है तथा प्रायः मिथक एवं किंवदंतियों से इन्हें अलग करना मुश्किल होता है। महाकाव्यों को स्थानीय परंपराओं में तो अपनाया ही गया है, महाकाव्यों ने भी अपने लोक परंपराओं को समाहित किया है। उन्होंने लेखकों से अपील की कि वे लोकशैलियों में रचनाएँ करें, ताकि इन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके।

उद्घाटन भाषण करते हुए डॉ. मनोज दास

बीज-वक्तव्य देते हुए प्रख्यात लोक साहित्य अध्येता प्रो. जवाहरलाल हांडू ने कहा कि वाचिकता लोकसाहित्य की ताक़त है, कमज़ोरी नहीं। हमारे देश की वाचिक परंपराएँ हज़ारों वर्षों से सफलतापूर्वक संरक्षित देशज ज्ञान व्यवस्था का प्रमाण हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि अंग्रेज़ी लेखक प्रो. ताबिश खेर ने कहा कि हमारे देश के महाकाव्यों की कथाएँ बार-बार कही गई हैं, कही जा रही हैं और आगे भी कही जाती रहेंगी।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भारतीय लोकसाहित्य की देश-देशांतर तक की यात्रा को संदर्भित किया तथा कहा कि भारत के लोकसाहित्य को अभिलेखित करने का प्रारंभिक काम विदेशियों ने किया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह ग़लतफ़हमी नहीं पालनी चाहिए कि लोकसाहित्य केवल वाचिक ही होता है, हमारे लिखित साहित्य का बहुत बड़ा हिस्सा भी लोकसाहित्य ही है।

सत्रांत में समाहार वक्तव्य देते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि लोकसाहित्य संकट से गुज़र रहा है, जो लगातार गहराता ही जा रहा है। उन्होंने कहा कि ख़तरा औद्योगीकरण अथवा संचार-क्रांति का नहीं है, क्योंकि लोकसाहित्य इनका सामना कर सकता है। ख़तरा आत्म-सजगता की कमी को लेकर है।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र डॉ. प्रतिभा राय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री प्रकाश प्रेमी, प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश और श्री हासु याज्ञिक ने क्रमशः डोगरी, कन्नड और गुजराती के आधुनिक साहित्य में लोकसाहित्य के पुनर्कथन पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. राजा ने की, जिसमें प्रो. सूर्य धनंजय, प्रो. ए. अच्युतन और डॉ. रतन हेंब्रम ने क्रमशः तेलुगु, मलयाळम् एवं संताली साहित्य में लोकसाहित्य के आधुनिक पुनर्कथन पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

त्रिदिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरा सत्र प्रो. जेंसी जेम्स की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोकसाहित्य एवं धार्मिक प्रथाएँ' पर केंद्रित था। इस सत्र में सर्वश्री मनजीत महंत, टी. धर्मराज और बलवंत जानी ने क्रमशः 'पारंपरिक ओराँव समाज में लोक विश्वास और धार्मिक प्रथाओं के कुछ आयाम', 'तमिळ समाज में साहित्य की वाचिकता' एवं 'लोकज्ञान और धार्मिक लोक गतिविधियाँ' शीर्षक अपने आलेख पढ़े। प्रो. जेम्स ने कहा कि लोकसाहित्य का कथन एवं पुनर्कथन दोनों ही चुनौती-पूर्ण हैं तथा महाकाव्यों के संदर्भ में कालजयी पाठ का पूरक विमर्श भी।

समाहार वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल ने की, जो 'लोक साहित्य एवं कहानी सुनाने की कला' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्रीमती तानाश्री रेड्डी, डॉ. पी. राजा एवं श्रीमती फ़ातिमा सिद्दीकी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. लाल ने अभिलेखित लोकसाहित्य और जीवंत लोकसाहित्य के अंतर को स्पष्ट किया और चंबा आदिवासी समाज से जुड़े अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वाचिक परंपराएँ प्रायः पुरानी पीढ़ी द्वारा ही याद की जाती हैं। अन्य विद्वानों ने विभिन्न संदर्भों और उदाहरणों के माध्यम से भारतीय भाषाओं

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

में कहानी कहने की कला के आरंभ, विकास और वर्तमान स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए।

'इक्कीसवीं शताब्दी में लोक साहित्य की प्रासंगिकता' पर केंद्रित पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की, जिसमें सर्वश्री अरविंद पटनायक, डॉ. राघवन पय्यनाड एवं एच. सी. बोरलिंगय्या ने अपने आलेखों का पाठ किया। प्रो. सिंह ने कहा कि लोकसाहित्य मानवीय ज्ञान का अजस्र स्रोत है। इक्कीसवीं सदी में उच्च तकनीक की उपलब्धता और आवागमन के तीव्र साधनों के कारण संपूर्ण दुनिया के लोकसाहित्य के तुलनात्मक अध्ययन के अवसर सामने हैं। अन्य वक्ताओं ने अपने आलेखों के माध्यम से यह बात उजागर की कि लोकसाहित्य अपने गहरे सरोकारों के कारण आज भी प्रासंगिक है।

छठा सत्र 'प्रदर्शनकारी लोकसाहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। इस सत्र में श्री एच. ननी कुमार ने मणिपुर की प्रदर्शनकारी लोककलाओं पर केंद्रित अपना आलेख पढ़ा, जबकि श्री जेठो लालवाणी ने सिंधी भगत के प्रदर्शन पर अपने विचार रखे। डॉ. कंबार ने कहा कि लोकसाहित्य किसी भी समुदाय, समाज और देश का प्राथमिक स्वर है और इसे बहुत संयम और सावधानी से सुना जाना चाहिए।

इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन सातवाँ सत्र प्रो. भालचंद्र नेमाड़े की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जो 'लोक साहित्य : बहुभाषी परिप्रेक्ष्य' पर केंद्रित था, जिसमें डॉ. अनिल बोरो, डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे एवं प्रो. प्रदीप ज्योति महंत ने अपने आलेख पढ़े। डॉ. अनिल बोरो ने कहा कि लोकसाहित्य पूर्वोत्तर भारत जैसे बहुभाषी समाज में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपराभिमुखी जिस समाज में हम हैं, वह लोकसाहित्य से भरपूर है, चाहे वह गीत हो, कहानियाँ हों अथवा प्रथाएँ। डॉ. काशीनाथ वी. बरहटे ने कहा कि भारतीय संस्कृति की विशिष्टता इसकी बहुभाषिकता और संस्कृति बहुलता में ही है। उनका आलेख 'कोर्कू उप-जनजाति और कोर्कू भाषा' पर केंद्रित था, जिसमें उन्होंने विस्तार से इसके इतिहास और क्षेत्र का वर्णन किया। डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने असम स्थित वैष्णव सत्रों की विशिष्ट परंपराओं पर अपना आलेख पाठ किया। उन्होंने संत गुरुओं से संबंधित आख्यानों के हवाले से अपनी बात कही।

आठवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रदीप ज्योति महंत ने की, जो 'लोक आख्यान' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री रमेंद्र कुमार, डॉ. वरुण चक्रवर्ती और डॉ. सुरजीत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रमेंद्र कुमार ने लोककथाओं और मिथकों के अंतर्संबंधों पर अपना आलेख पाठ करते हुए कहा कि कभी-कभी ये एक-दूसरे से इतना अधिक प्रभावित रहते हैं कि इन्हें अलग करना मुश्किल हो जाता है। डॉ. वरुण चक्रवर्ती ने कहा कि लोककथाएँ सर्वाधिक आकर्षक होती हैं। ये सहजता से हर उम्र के लोगों को मोह लेती हैं। डॉ. सुरजीत सिंह ने कहा कि लोक आख्यान सांस्कृतिक निर्माण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक ज्ञान की कुंजी होते हैं।

'लोकसाहित्य एवं संस्कृति' पर केंद्रित नवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. एस. शिवप्रकाश ने की, जिसमें डॉ. सीमा शर्मा और सुश्री अपराजिता शुक्ला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. शर्मा ने लोकप्रिय माध्यमों द्वारा प्रस्तुत

किए जा रहे लोकसाहित्य के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि इस पुनः प्रस्तुति की प्रक्रिया में बहुत कुछ हाशिए पर छूट जाता है। सुश्री अपराजिता ने उत्तराखंड के 'जगार' पर केंद्रित अपने आलेख का पाठ किया।

आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों से साक्षात्कार

24 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

24 फ़रवरी 2017 को साहित्योत्सव के चौथे दिन की शुरुआत 'आमने-सामने' कार्यक्रम से हुई, जिसमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत करवाई जाती है। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम आरंभ करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य लेखकों को सीधे पाठकों से रू-ब-रू कराना है।

सर्वप्रथम हिंदी लेखिका नासिरा शर्मा से अशोक तिवारी ने बातचीत की। विभाजन को लेकर पूछे गए एक सवाल के बारे में जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि इसमें एक हिंसा लोगों ने प्रत्यक्ष झेली तो दूसरे लोगों ने मानसिक हिंसा झेली है। उन्होंने लेखन को किसी विशेष ख़ाने में बाँटने पर नाराज़गी जताते हुए कहा कि मैं पूरी दुनिया के लिए लिखती हूँ आधी दुनिया के लिए नहीं।

मराठी भाषा के पुरस्कृत लेखक श्री आशाराम लोमटे से डॉ. रणधीर शिंदे ने साक्षात्कार किया। अपनी कहानियों को लेकर किए गए सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि ग्रामीण जीवन पर आधारित पहले की कहानियाँ शायद ही मनोरंजक होती थीं। उन्होंने गाँवों की बदलती राजनीति और जीवन-मूल्यों के विघटन पर चिंता ज़ाहिर की।

गुजराती के पुरस्कृत लेखक श्री कमल वोरा से डॉ. दिलीप झवेरी ने बातचीत की। उन्होंने कहा कि कविता उनके लिए स्वयं के आविष्कार का ही माध्यम नहीं है, बल्कि यह भाषा को उसकी संपूर्ण प्रभावान्वितियों के साथ

कमल वोरा

आसाराम मारोतराव लोमटे

पापिनेनि शिवशंकर

पारमिता शतपथी

अज़ीज़ हाजिनी

खोजने का प्रयत्न है। उनका मानना है कि संपूर्ण कविता कभी भी संभव नहीं, यदि कभी ऐसा हुआ तो कविता लिखने की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाएगी।

तेलुगु के पुरस्कृत लेखक डॉ. पापिनेनी शिवशंकर से श्री अमरेंद्र दासारी ने साक्षात्कार लिया। डॉ. शिवशंकर ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताया और कहा कि गहन भावनात्मक अनुभूतियों के लिए वे कविताएँ लिखते हैं, जबकि विवरणात्मक अभिव्यक्तियों के लिए कहानी अथवा निबंध का सहारा लेते हैं।

ओड़िया की पुरस्कृत लेखिका श्रीमती पारमिता सत्पथी से डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने बातचीत की। श्रीमती सत्पथी ने कहा कि महिलाओं की विनम्रता को उनकी कमज़ोरी नहीं मानना चाहिए। वास्तव में प्रत्येक स्त्री किसी

भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम है। मेरा लेखन स्त्रीत्व की खोज और स्त्री की पहचान से जुड़ा हुआ है।

कश्मीरी के पुरस्कृत लेखक श्री अज़ीज़ हाजिनी से श्री फ़ारूक़ फ़ैयाज़ ने साक्षात्कार लिया। सवालों के जवाब देते हुए उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा और अपने ऊपर पड़े प्रभावों का ज़िक्र किया। भूमंडलीकरण के दुष्प्रभावों के प्रति उन्होंने चिंता जताई और कहा कि मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है।

साक्षात्कार के दौरान श्रोताओं ने भी निस्संकोच अपने प्रिय लेखकों से सवाल पूछे, जिनके उन्होंने संतोषजनक जवाब दिए।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखकों द्वारा रचना-पाठ

24 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 24 फ़रवरी 2017 को पूर्वोत्तरी कार्यक्रम के अंतर्गत उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन भाषण के लिए आए प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि रॉबिन नांगोम का स्वागत करते हुए उत्तर-पूर्व की विविधता का ज़िक्र किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों का और विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता करने वाले लेखकों का स्वागत करते हुए कहा कि यह मंच अवश्य उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखकों की संवेदनाओं को एक दूसरे तक प्रेषित करेगा। अपने उद्घाटन भाषण में रॉबिन नांगोम ने कहा कि उत्तर-पूर्व का साहित्य जीवंत है और लंबे समय से पाठकों को प्रभावित करता रहा है। इसके अंदर कोई डर या आतंक नहीं है बल्कि प्रकृति, सौहार्द एवं शांति है। विभिन्न भाषाओं, संस्कृति और धर्म के होते हुए भी यहाँ का लेखन लोक की महत्ता को स्वीकार करता है और उसने हिंसा के प्रतिरोध में कई आश्चर्यजनक बिंब तैयार कर लिए हैं। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी जो आधुनिक शहरों में रह रही है, की कविताओं का स्वर विस्थापन के दर्द को प्रतिबिंबित कर रहा है।

उद्घाटन सत्र में श्री कुल सइकिया की अध्यक्षता में चार प्रख्यात लेखकों—बेग़ अहसास (उर्दू), चमन अरोड़ा (डोगरी), अनो ब्रह्म (बोडो) और ऋषि वशिष्ठ (मैथिली) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

पूर्वोत्तरी के प्रतिभागी

'मेरी रचना मेरा संसार' विषय केंद्रित सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका श्रीमती उमा वासुदेव ने की। इसमें श्रीप्रकाश मिश्र (हिंदी), महाराज कृष्ण संतोषी (कश्मीरी), क्षेत्री राजेन (मणिपुरी) और देवकांत रामचियारी (बोडो) ने अपनी रचना-प्रक्रिया, परिवेश और रचना-संसार पर विचार व्यक्त किए। श्रीप्रकाश मिश्र ने कहा कि लेखक अपनी स्मृति को ही लिखता है। मुझे विजातीय संस्कृति को निकट से देखने जानने का अवसर मिला जिस कारण मैं उसकी जीवन-संवेदना को पकड़ सका। महाराज कृष्ण संतोषी ने कश्मीर के विस्थापन की संवेदना पर कुछ मार्मिक उदाहरण देते हुए कहा कि हर रचनाकार का संघर्ष इस दुःख और पीड़ा से ही जिजीविषा पाता है। देवकांत रामचियारी ने कहा कि वे स्थानीय समस्याओं को देशकाल के साथ जोड़कर अपनी रचना-प्रक्रिया तैयार करते हैं। सुविधाओं का अभाव या आपकी आकांक्षाओं का अभाव ये दो ऐसे बिंदु हैं जिन पर रचनाकार को बहुत संतुलित होकर लिखना पड़ता है। उमा वासुदेव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी वक्तव्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए कहा कि रचना-प्रक्रिया हमारे सांसारिक अनुभवों का ही प्रतिबिंब होती है जिसे प्रत्येक लेखक अपने-अपने तरीके से अपनी रचना में प्रस्तुत करता है।

सुपरिचित डोगरी कवि श्री दर्शन दर्शी की अध्यक्षता में कविता-पाठ सत्र हुआ जिसमें मधु आचार्य आशावादी (राजस्थानी), युयुत्सु शर्मा (अंग्रेज़ी), इरशाद मगामी (कश्मीरी), सुधा एम. राई (नेपाली), मदन मोहन सोरेन (संताली), ब्रजेश कुमार शुक्ल (संस्कृत), तूलिका चेतिया एन (असमिया), रमेश (मैथिली), ज्योतिष पायेङ (हिंदी), नरेंद्र देबबर्मन (कोकबॅराक), हिरम्य चकमा (चकमा) और घनश्याम भद्र (हो) ने अपनी काव्य रचना प्रस्तुत की।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

25 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के दौरान 25 फ़रवरी 2017 को 'आदिवासी लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम के अंतर्गत 'सृजन की आदिवासी कहानियाँ' विषय पर आदिवासी सृजन कथाओं का पाठ हुआ। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा आदिवासी भाषाओं के साहित्य पर की जा रही गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया तथा संपूर्ण देश के आदिवासी लेखकों से इसके लिए सहयोग की अपील की।

कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि यह पहली बार है, जब आदिवासी सृजन कथा साहित्य अकादेमी के धरोहर में शामिल होगा। उन्होंने बताया कि सृजन कहानियाँ मानव को प्रकृति से जोड़ती हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं आदिवासी पत्रिका 'अखरा' के संपादक श्री अश्विनी कुमार पंकज ने कहा कि भारत की आज़ादी के 70 वर्ष बाद असुर भाषा का व्याकरण लिखा जा रहा है और इसे झारखंड के सेमुअल बिरजिया लिख रहे हैं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पूरे देश के आदिवासी की सृजन कथा एक ही है, लेकिन ये सृजन कथा आदिवासी की पुरखा कथा है, जो वैज्ञानिकता पर आधारित है। आदिवासी समुदाय सिंधु सभ्यता के नष्ट होने की कथा बता सकता है, यह धरती की कथा के प्रारंभिक साक्ष्य हैं और ज़िंदा हैं। आदिवासी लोकगीत सृजन की व्यापक व्याख्या करता है। इसमें झारखंड के छह आदिवासी भाषाओं के लेखकों ने अपनी भाषाओं में सृजन कहानियाँ सुनाईं। इस क्रम में सबसे पहले श्री रेमिस कंडुलाना ने मुंडा समुदाय की उत्पत्ति और सृजन की कहानी लोग गीत के माध्यम से

प्रस्तुत की। श्रीमती ग्लोरिया सोरेंग ने कहा कि हमारी कथा पुरखा कथा है, हमारी सृजन कथा प्रकृति से सीधा संवाद की कथा है। श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा की सृजन कथा सुनाई। श्री सरन ओराँव ने मानव उत्पत्ति की कथा को कुड़ुख गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि धरती को बनाने में केंचुआ का सबसे ज़्यादा योगदान रहा। 'हो' भाषा के लेखक 'डोबरो' बिरुली ने हो समुदाय के मिथ पर प्रकाश डाला। श्री सुंदर मनोज हेम्ब्रम ने संताली सृजन मिथ को संताली एवं हिंदी में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संताल ने आज तक अपनी परंपरा को सुरक्षित रखा है तथा आदिवासी स्वयं ही अपनी सभ्यता, संस्कृति और भाषा का संरक्षण कर सकते हैं।

लेखक सम्मिलन का दूसरा सत्र कविता-पाठ को समर्पित था, जिसमें पंद्रह भाषाओं के आदिवासी कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ मूल भाषा के साथ-साथ हिंदी एवं अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत किया। कविता-पाठ करनेवाले कवियों में प्राचीनतम आदिवासी असुर समुदाय के कवि श्री सैमुअल बिरजिया ने बिरजिया भाषा में हिंदी अनुवाद के साथ कविताएँ सुनाईं, वहीं श्रीमती वासमल्ली ने टोडा भाषा का गीत और अंग्रेजी अनुवाद के साथ कविता सुनाई। ध्यातव्य है कि यह भाषा बोलनेवाले मात्र 2000 लोग ही हैं। अन्य कवियों में सर्वश्री असीम राय (चकमा), जान मोहम्मद हकीम (गोजरी), जामिनीकांत तिरिया एवं साधुचरण देवगम (हो), वांसलन ई. धर (खासी), नीरदचंद्र कन्हार (कुई), थुप्सटन नॉर्बो (लद्दाखी), विद्येश्वर डोले (मिसिंग), जोएचिम टोप्नो (मुंडारी), संतोष पिचा पावरा (पावरी), गैगरिन सबर (सौरा) तथा श्रीमती फैमलिन के. मराक (गारो), वंदना टेटे (खरिया), फ्रांसिस्का कुजूर एवं शांति खाल्खो (कुड़ुख) ने अपनी भाषाओं में रचनाएँ सुनाईं। अंत में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्रीमती रमणिका गुप्ता ने कहा कि अकादेमी के ये आयोजन आदिवासी साहित्य का इतिहास गढ़ रहे हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि आदिवासी भाषाओं को बचाया जाना ज़रूरी है, चाहे उन्हें किसी भी लिपि में लिखा जाए।

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ

25 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव का पाँचवाँ दिन विभिन्न बाल गतिविधियों को समर्पित रहा। बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार कार्यक्रम 'आओ कहानी बुनें' का उद्घाटन प्रख्यात बाल साहित्यकार रश्मि नार्जरी ने किया। उन्होंने बच्चों के अंदर अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत डालने की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि वीडियो गेम्स, कंप्यूटर और मोबाइल के बदले पुस्तकें पढ़ना व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत कृति से एक कहानी बच्चों को सुनाई और उनके सवालों के उत्तर भी दिए। एक बच्चे के सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि अच्छे लेखक होने के साथ-साथ अच्छा व्यक्ति होना भी ज़रूरी है।

इसके बाद प्रो. बी. कामेश ने अपनी मैजिक शो द्वारा बच्चों का भरपूर मनोरंजन किया। अपने मैजिक शो में उन्होंने हमारे देश के विभिन्न राष्ट्रीय चिह्नों, प्रतीकों आदि के बारे में बच्चों को रोचक तरीक़े से जानकारी दी। स्वच्छता अभियान और भारत की एकता, बंधुता और राष्ट्रीय गौरव के प्रति सभी को जागरूक किया। उन्होंने बच्चों को बहुत-से जादुई करतब सिखाए भी।

इसके बाद बच्चों के लिए संसप्तक नाट्यदल द्वारा कई कहानियों के नाट्य-पाठ प्रस्तुत किए। कहानी और कविता लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें सीनियर वर्ग में प्रथम पुरस्कार न्यू ग्रीन पब्लिक स्कूल की छात्र अस्मिता बाबूराज को तथा जूनियर वर्ग में ये पुरस्कार एस.के.वी. दयानंद स्कूल की छात्र शामिया को दिया गया। सीनियर वर्ग में द्वितीय पुरस्कार एंजेलिना पासा, तृतीय पुरस्कार वृंदा कौशिक तथा प्रोत्साहन पुरस्कार नव्या मयंक एवं गौरव पति को प्रदान किया गया, जबकि जूनियर वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्रियांशु मेहरा, तृतीय पुरस्कार जया प्रभा तथा प्रोत्साहन पुरस्कार यश्वी शर्मा एवं अबीर अब्बास को प्राप्त हुए। दिल्ली के कई विद्यालयों से आए छात्रों और उनके परिजनों तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं का अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीवासराव ने कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत किया और कहा कि बच्चों में सर्जनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्योत्सव के दौरान कार्यक्रमों को इस प्रकार संयोजित किया गया है कि बच्चों को रुचिकर लगे। उन्होंने कहा कि पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं, क्योंकि ये हर समय हमारे साथ रह सकती हैं। अच्छी पुस्तकें पढ़कर हम अच्छी बातें सीखते हैं और हमारे भीतर अच्छे संस्कार विकसित होते हैं। उन्होंने कहा कि जिस देश में युवाओं की संख्या अधिक होती है वह देश अधिक मजबूत और युवा होता है। बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए कविता और कहानी लिखने की कला को समझाने हेतु अकादेमी शीघ्र ही बाल कार्यशालाओं का आयोजन करने की इच्छा रखती है। कार्यक्रम के अंत में सचिव ने विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए।

'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

26 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी के प्रारंभ में विद्वान अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि अकादेमी पिछले साहित्योत्सव से अनुवाद विषय पर केंद्रित विमर्श का आयोजन कर रही है। ये संगोष्ठी उसी क्रम में आयोजित की जा रही है। हम चाहते हैं कि अनुवाद क्षेत्र में लंबे समय से काम कर रहे विद्वान रचना के अनुवाद में आने वाली समस्याओं और सीमाओं पर अपने व्यावहारिक अनुभव से तैयार किए गए आलेख प्रस्तुत करेंगे, जो गरिष्ठ अकादेमिक चर्चा से मुक्त होगा। इस प्रकार अनुवाद के क्षेत्र में सक्रिय अनेक अनुवादक लाभान्वित हो सकेंगे, ऐसी आशा है।

भारत की अनुवाद परंपरा पर बोलते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

प्रख्यात गुजराती लेखक एवं अनुवादक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी का शीर्षक 'अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' ही स्वयं इसका उद्घाटन कर चुका है। इस शीर्षक की द्वि-भाषिकता अनेक प्रश्नों का शमन करने के लिए पर्याप्त है। पुनर्कथन की अपनी एक यात्रा है। सत्रहवीं

शताब्दी के प्रेमानंद ने पुराणों का पुनर्कथन किया था। अनुवाद का अनुवादक और अनुवाद के पाठक से सघन संबंध है। यह संगोष्ठी अनुवाद की राहों का वास्तविक अध्ययन है। उन्होंने कहा कि संस्कृत नाटकों में दो प्रकार की भाषा मिलती है। उनमें राजा संस्कृत बोलता है, जबकि रानी प्राकृत बोलती है। यह प्रतिपादन 'अनुवाद' नहीं, बल्कि 'छाया' है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि एक दिन ऐसा आएगा, जब मलयाळम् के सभी वाक्य गुजराती में और गुजराती के सभी वाक्य मलयाळम् में और अन्य सभी भारतीय भाषाओं में परस्पर अनूदित होकर उपलब्ध होंगे।

प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने अनुवाद शब्द के लिए हिंदी और संस्कृत साहित्य में पूर्व प्रचलित विभिन्न शब्दों—टीका, भाष्य, वार्तिक, वृत्ति, कारिका, अनुकथन, पुनर्कथन आदि का ज़िक्र किया और कहा कि पुनर्कथन की परंपरा भारतीय वाङ्मय में हज़ारों वर्ष पूर्व से मौजूद रही है। उन्होंने अनुवाद और पुनकर्थन के कई उदाहरण दिए। प्रो. तिवारी ने कहा कि रामायण और महाभारत के सबसे अधिक अनुवाद हुए हैं। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने शब्दशः अनुवाद भी किया और पुनर्कथन भी। इस प्रकार रचना का पुनर्सृजन किया है। प्रो. तिवारी ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में 'राम कथा' मिलती है, जिसमें प्रत्येक क्षेत्र और संस्कृति ने अपनी तरह से उसका अनुवाद पुनर्कथन के रूप में किया है, वह भी वास्तविक है। इस प्रकार अनुवाद का कार्य सृजन भी है और पुनर्सृजन भी। यूरोप से 'ट्रांसलेशन' शब्द आने से पूर्व ही भारतीय भाषाओं में इसके अनेक प्रारूप उपलब्ध थे।

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी विद्वान और अनुवादक सुमन्यु सत्पथी ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि 'अनुवाद' एक स्त्री की तरह है, अगर वह सुंदर है तो विश्वनीय नहीं और यदि विश्वास के काबिल है तो सुंदर नहीं। उन्होंने कहा कि मेरे मतानुसार अनुवाद को सुंदर और विश्वनीय दोनों होना चाहिए। उन्होंने बताया कि सारला दास महाभारत का कभी तो अनुवाद करती हैं और कभी उसका सृजन, कभी-कभी वे इसे मूल रूप से लिखती हैं। उन्होंने 'एलिस इन वंडरलैंड' का ज़िक्र किया और कहा इसका विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक तरीकों से अनुवाद हुआ है। अनुवादक अपने काम में अभिनव परिवर्तनात्मक रहे हैं उन्होंने मूल टेक्स्ट के साथ विमर्श में पर्याप्त स्वतंत्रता भी ली है। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सभी वक्ताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'भक्ति आंदोलन : अनुवाद पुनर्कथन के रूप में' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री मिनि कृष्णन् ने की। सत्र में डॉ. चंद्रकांत पाटिल और डॉ. जे. एल. रेड्डी ने अपने आलेखों का पाठ किया। चर्चित अनुवादक चंद्रकांत पाटिल ने कहा कि मध्यकालीन कवियों ने 'अनुवाद' शब्द का भिन्न अर्थों में प्रयोग किया है। शब्द-व्युत्पत्तिशास्त्र के अनुसार, 'अनुवाद' 'अनु' और 'वद्' मूल शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है—पूर्व के किसी का अनुसरण और 'वद्' का अर्थ है—कहना या बोलना। उन्होंने संत ध्यानेश्वर के कथन का उदाहरण देकर अनुवाद पुनर्कथन की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि चंद्रकांत देवताले द्वारा तुकाराम के सौ चयनित अभंगों का अनुवाद पुनर्कथन का महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। उन्होंने कहा कि मध्यकालीन भक्ति साहित्य का पुनर्कथन आज भी महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक बना हुआ है।

डॉ. जे. एल. रेड्डी ने कहा कि राम कथा के पात्र विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध राम कथाओं में अपना अलग-अलग चरित्र रखते हैं। उन्होंने कहा कि ये हमारी परंपरा है कि भारतीय लोक कथाओं और मिथकों का

हम नए पाठ निर्मित करते हैं। सत्र के अध्यक्ष डॉ. मिनि कृष्णन ने कहा कि अनुवादक सिर्फ़ मूल कथा का अपनी भाषा में अनुवाद अथवा पुनर्कथन ही नहीं करता बल्कि नए सिरे से उस कथा को समझ भी रहा होता है।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'भारतीय साहित्यिक परंपरा में अनुवाद परंपरा : मौखिक एवं लिखित' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री ब्लांका क्नोतकोवा ने की। सत्र में डॉ. रक्षंदा जलील, डॉ. राणा नायर और रामशंकर द्विवेदी ने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. रक्षंदा जलील ने ग़ालिब का एक शेर - 'कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरे नीमकश को/ये ख़लिश कहाँ से होती जो जिगर के पार होता' - उद्धृत करते हुए अनुवाद की समस्या का ज़िक्र किया और कहा कि उर्दू शायरों ने 'जिगर' शब्द का प्रयोग दिल के अर्थ में किया है, बायोलॉजी में भले ही जिगर को 'लिवर' कहा जाता है। इसलिए भाषा की संस्कृति और कहन की ख़ासियत को समझना बहुत ज़रूरी है तभी सही अनुवाद हो सकता है। उन्होंने कहा कि मैं आम पाठकों के लिए अनुवाद करती हूँ। उन्होंने बताया कि अच्छे अनुवाद का मापदंड सुपाठ्य और मनोरंजक होना माना जा सकता है।

डॉ. राना नायर ने अनुवाद को मूल रचना के लिए 'कायाकल्प' माना। उन्होंने कहा कि अनुवादक त्रिशंकु या नारद के मिथकीय चरित्र की तरह मुझे लगते हैं, जो दो भाषा संस्कृतियों के बीच झूलते-गति करते एक तीसरी भाषा का आविष्कार करते हैं।

डॉ. राम शंकर द्विवेदी ने कहा कि हर भाषा के साहित्य में दो धाराएँ समानांतर रूप से चलती हुई दिखाई देती हैं—एक उसके अपने साहित्य की धारा, दूसरी अन्य साहित्य से अनूदित साहित्य की धारा। दोनों धाराएँ अजस्र, अगाध, और साथ-साथ चलने वाली होती हैं। इनके मूल में रहती है ज्ञानवर्द्धन के साथ दूसरी भाषा के साहित्य को जानने की उत्सुकता और अपनी भाषा के साहित्य में जो अभाव होता है उसे दूर करने की भावना। दोनों प्रखर, तीव्र और जब तक अक्षरों की सत्ता है तब तक चिरंतन रहेंगी।

सत्र की अध्यक्ष ब्लांका क्नोतकोवा ने कहा अनुवाद किसी भाषा संस्कृति का दूसरी भाषा संस्कृति में विस्तार है। इस तरह अनुवादक का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण और उत्तरदायित्व से भरा होता है।

'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद

26 फ़रवरी 2017, नई दिल्ली

साहित्योत्सव के अंतिम दिन 26 फ़रवरी 2017 को 'भारत की अलिखित भाषाएँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन तीन वैचारिक सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र, अकादेमी के जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केंद्र, नई दिल्ली की निदेशक प्रो. अन्विता अब्बी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा ग़ैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया। डॉ. अवधेश कुमार मिश्र ने पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं पर बात करते हुए कहा कि यह प्रसन्नता की बात है पूर्वोत्तर की सभी भाषाएँ किसी-न-किसी लिपि में लिखी जा रही हैं। विभिन्न क्षेत्रों की बोली या स्थानीय भाषाएँ प्रायः अपने क्षेत्र की प्रमुख भाषा लिपि को अपनाती हैं। लेकिन पूर्वोत्तर को

अधिकांश भाषाओं को रोमन लिपि को विभिन्न संशोधनों के साथ अपनाया हुआ है। इंदिरा गाँधी अंतरराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने कहा कि वाचिक और लिखित में वे वाचिक को ही अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इस सत्र में प्रो. पुरुषोत्तम बिलिमाले और डॉ. शैलेंद्र मोहन ने क्रमशः तुलु और निहाली भाषाओं के संदर्भ में अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए विस्तार से उनकी विशिष्टताओं के बारे में बताया। प्रो. अन्विता अब्बी ने कहा कि भारत एक भाषा समृद्ध देश है तथा यहाँ के वाचिक साहित्य एवं परंपराओं को लिखित रूप में लाने के साथ-साथ उन्हें उनके वाचिक रूप में भी बचाकर रखने की ज़रूरत है।

इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित दो पुस्तकों *अनरिटेन लैंग्वेजेज़ ऑफ़ इंडिया* (संपा. : अन्विता अब्बी) तथा *कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य* (ले. : महेंद्र कुमार मिश्र, अनु. : दिनेश मालवीय) का लोकार्पण अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा किया गया। पुस्तकों का लोकार्पण करते हुए उन्होंने कहा कि एक समय था जब वाचिक ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता था, लेकिन आज जब लिखित महत्त्वपूर्ण हो गया है तब इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशित होना सुखदायी है।

परिसंवाद का दूसरा वैचारिक सत्र प्रो. सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. आनंद महानंद, प्रो. भक्तवत्सला भारती और प्रो. सी. महेश्वरन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. महानंद ने विशिष्ट आदिवासी वाचिक परंपराओं और आधुनिकता के संदर्भ में अपनी पावर-प्वाइंट प्रस्तुति की। प्रो. भारती और प्रो. महेश्वरन ने क्रमशः नीलगिरि पर्वत शृंखला के मध्य रहने वाली टोडा और अलु कुनवा जनजातियों और उनकी भाषाओं पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद का तृतीय सत्र 'अलिखित भाषाओं का वजूद' विषयक परिचर्चा का था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने की। इस परिचर्चा में श्रीमती आयेशा क़िदवई, श्रीमती कीर्ति जैन, श्रीमती वासमल्ली, श्री जोसेफ़ बरा और श्री कार्तिक नारायणन ने सहभागिता की।

अनुवाद पुरस्कार 2015

अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह

4 अगस्त 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा 24 भाषाओं के अनुवाद पुरस्कार विजेताओं को महाराजा चंद्रकीर्ति सभागार, इंफ़ाल में एक शानदार समारोह में 4 अगस्त 2016 को वर्ष 2015 के लिए अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह का प्रारंभ मणिपुरी में पारंपरिक स्तुति से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्यों, पुरस्कृत अनुवादकों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा यह भी बताया कि कैसे अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में शामिल हुआ और कैसे देश के सर्वत्र भागों में 24 अनुसूचित भाषाओं में अनुवाद के प्रचार के लिए अकादेमी ने अनेक क़दम उठाए। सुप्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य

अनुवाद पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव

प्रो. रघुवीर चौधरी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में अनुवाद के महत्त्व विशेषकर भारत जैसे बहुभाषी समाज में और उसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अनुवाद कैसे वास्तविक रूप से प्रायोगिक अनेकता में एकता के दर्शन को उजागर करती है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में क्षेत्रीय साहित्य के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं भारतीय साहित्य की संपन्नता में अनुवाद की क्या भूमिका है, के बारे में बात की। उन्होंने इस बात की भी प्रसन्नता ज़ाहिर की कि अकादेमी मणिपुर में पहली बार पुरस्कार महोत्सव का आयोजन कर रही है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम का सार प्रस्तुत करते हुए प्रशस्ति पाठ किया, वहीं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने पुरस्कार प्राप्त करने वाले अनुवादकों का बधाई दी। सभी पुरस्कृत अनुवादकों ने स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र और रु. 50,000/- का चेक प्राप्त किए। कार्यक्रम के अंत में प्रतिष्ठित नृत्यांगाना-द्वय नलिनी-कमलिनी द्वारा कृष्णमयी मीरा पर आधारित नृत्य प्रस्तुति की गई।

अनुवादक सम्मिलन

5 अगस्त 2016, इंफ़ाल

5 अगस्त 2016 को महाराजा चंद्रकीर्ति सभागार, इंफ़ाल में अनुवाद सम्मिलन का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. श्रीनिवासराव ने अनुवाद पुरस्कार विजेताओं, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा इस सम्मिलन को आयोजित किए जाने के उद्देश्य पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने ने कहा कि इस प्रकार के सम्मिलनों के आयोजन द्वारा एक भाषा क्षेत्र के अनुवादक को अन्य भाषाओं तथा क्षेत्रों के अनुवाद एवं तकनीकों को समझने में आसानी होती है तथा इसके साथ ही वह अन्य संस्कृतियों तथा भाषिकी परंपराओं के प्रति जागरूक होते हैं। साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अनुवादक सम्मिलन की अध्यक्षता की। इस सम्मिलन में उपस्थित समस्त अनुवाद पुरस्कार विजेताओं ने एक अनुवादक के रूप में तथा एक सृजनात्मक लेखक के रूप में भी अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने अपनी पुरस्कृत कृतियों के अनुवाद पर भी बात की। प्रो. बिहारी सिंह ने सम्मिलन का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि अनुवाद न सिर्फ़ भाषाओं और भाषिकी परंपराओं, वरन् संस्कृतियों तथा सांस्कृतिक परंपराओं के मध्य एक सेतु का काम भी करता है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समस्त प्रतिभागी अनुवादकों तथा सत्र की अध्यक्षता करने हेतु प्रो. बिहारी सिंह का भी धन्यवाद किया।

अभिव्यक्ति

5-6 अगस्त 2016, इंफ़ाल

अभिव्यक्ति कार्यक्रम में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन अनुवाद पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह के साथ ही महाराजा चंद्रकीर्ति सभागार, इंफ़ाल में किया गया। सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया, साथ ही पूर्वोत्तर क्षेत्र में अकादेमी द्वारा साहित्य के उन्नयन हेतु उठाए जा रहे क़दमों के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। उन्होंने अभिव्यक्ति कार्यक्रम के बारे में भी बताया। प्रो. एच. बिहारी सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल ने बताया कि यह कार्यक्रम कैसे अभिव्यक्ति का एक बेहतर माध्यम है। उन्होंने अपने कुछ सुझाव दिए। साथ ही इस बहुभाषिक कार्यक्रम का हिस्सा होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रो. तेमुसला आओ, प्रतिष्ठित कवि, लेखक और लोक कलाकार ने रचनात्मक अभिव्यक्ति के बारे में बताते हुए कहा कि केवल लेखक ही यह काम नहीं करते, बल्कि पृथ्वी पर रहने वाला प्रत्येक आम आदमी समाज का गहरे रूप में निरीक्षण करता है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने कहा कि 'अभिव्यक्ति' विचारों का अभिव्यक्तिकरण है और कविताओं का ईश्वर है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा मंच है, जहाँ रचनाकार अपने अनुभवों और भावों को अभिव्यक्त करते हैं। इस सत्र में आठ लेखकों ने अपने आलेख का वाचन किया, जिनमें पंकज गोविंद मेधी (असमिया), बिजॉय बग्लरी (बोडो), शिवदेव सुशील (डोगरी), हरिराम द्विवेदी (हिंदी), एल. इबोम्हल देवी (मणिपुरी), इंदु प्रभा देवी (नेपाली), यूमा वसुगी (तमिळ) और ए.एस.पी.एस. रवि प्रकाश (तेलुगु) शामिल थे। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अंत में प्रतिभागियों एवं गणमान्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में कहानियों का पाठ आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता के. राधा कुमार ने की जिसमें चार कथाकारों—जयप्रकाश माविनकुलि (कन्नड), शीला कोलंबकर (कोंकणी), के. ए. बीना (मलयाळम्) तथा जी. के. एनापुरे (मराठी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। अध्यक्ष के. राधाकुमार ने भी अपनी दो कहानियों का पाठ किया। वहीं दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. हरीश त्रिवेदी ने किया, जिसका विषय था 'लेखन में मेरी प्रेरणाएँ'। पाँच प्रख्यात लेखकों अमर मित्र (बाङ्ला), महेंद्र सिंह परमार (गुजराती), संतोष एलेक्स (हिंदी), एल. लोयाचंद्र सिंह (मणिपुरी) और सीतेश त्रिपाठी (ओड़िया) ने अपने आलेख पढ़े। प्रो. हरीश त्रिवेदी ने समापन वक्तव्य में अपने अनेक प्रकार के अनुभव और लेखन के लिए प्रेरक तत्त्वों को बताया। तृतीय सत्र में कविता पाठ का आयोजन था जिसकी अध्यक्षता डॉ. सुदीप सेन ने किया। इस सत्र में 9 कवियों रहीम रहबर (कश्मीरी), कुमार मनीष अरविंद (मैथिली), एन. किरनकुमार (मणिपुरी), बलजीत सिंह रैना (पंजाबी), मीठेश निर्मोही (राजस्थानी), बनमाली बिस्वाल (संस्कृत), जोबा मुर्मू (संताली), नामदेव ताराचंदाणी (सिंधी), शकील शम्सी (उर्दू) और तेमसुला आओ (अंग्रेज़ी) ने कविता-पाठ किया। श्री गोपाल च. बर्मन, क्षेत्रीय सचिव, कोलकाता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाल साहित्य पुरस्कार

14-16 नवंबर 2016, अहमदाबाद

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह एवं लेखक सम्मिलन

14 नवंबर 2016, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन गुजरात साहित्य परिषद्, अहमदाबाद के आर.वी. पाठक सभागार में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत रचनाकारों, अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए गुजरात साहित्य परिषद् का विशेष आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बच्चे किसी भी सभ्यता का स्वरूप होते हैं। उन्होंने कहा कि समृद्ध बाल साहित्य की रचना की आवश्यकता है, जिससे कि बच्चे भारतीय संस्कृति और विरासत को जानने को उत्सुक हों। उन्होंने आज के मुख्य अतिथि श्री यशवंत मेहता का भी स्वागत किया जो अकादेमी के बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि तथा अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव

अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पुरस्कृत रचनाकारों को बधाई देते हुए समारोह में सम्मिलित होने के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज बहुत ही संवेदनशील है। यह दुख का विषय है कि जहाँ एक पक्षी के वध पर एक महाकाव्य की रचना हो जाती है, वहीं बाल उत्पीड़न पर एक लेख भी नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय समाज की ग़रीबी इस प्रकार के दुरुपयोग का एक मुख्य कारण है। प्राचीन भारतीय समाज के एकल परिवार के बच्चे अधिक सुरक्षित थे, लेकिन आधुनिक विभाजित समाज में विभाजित परिवारों ने पश्चिमी संस्कृति को अपना लिया है। श्री तिवारी ने युवा लेखकों से आह्वान किया कि वे उत्कृष्ट बाल साहित्य की रचना भी करें।

मुख्य अतिथि श्री यशवंत मेहता द्वारा विजेताओं को सम्मान-पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर श्री मेहता ने कहा कि बच्चे भगवान के मानव रूप होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने 13 वर्ष की अवस्था से बाल साहित्य लेखन आरंभ किया था और आज भी बाल पत्रिका के संपादन से उन्हें आनंद मिलता है। श्री मेहता ने बाल साहित्य के विकास के लिए भारत के हर क्षेत्र में बाल साहित्य अकादमियों की स्थापना किए जाने पर बल दिया। उन्होंने प्रकाशन संस्थानों से अपील की कि वे प्रचुर मात्रा में सस्ती क़ीमतों पर बाल साहित्य उपलब्ध कराएँ। बहुत ही सरल और स्पष्ट भाषा में बाल साहित्य लिखने की उन्होंने अपील की। अकादेमी के सचिव ने आभार व्यक्त करते हुए अकादेमी द्वारा आयोजित 15-16 नवंबर 2016 के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहने का आग्रह किया।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2016, अहमदाबाद

पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन गुजराती साहित्य परिषद् के गोवर्धन स्मृति खंड सभागार में लेखक सम्मिलन का आयोजन 15 नवंबर 2016 को किया गया। बाल पुरस्कार से सम्मानित लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। सम्मिलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध गुजराती लेखक विनेश अंताणी ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भारत के विभिन्न क्षेत्र की संस्कृतियों के मध्य भाषा एक पुल का काम करती है, जो उन्हें एक-दूसरे के समीप लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय बच्चों को पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नहीं होना चाहिए, जो कि आज एक बड़ी चुनौती है। बचपन में बच्चों को लोक कथाएँ सुनना चाहिए जिसमें हमारी सभ्यता की जड़ें हैं।

बाङ्ला के श्री अमरेंद्र चक्रवर्ती ने कहा कि बाल साहित्य का एक छोटा अंश भी हमेशा महान होता है। इस बात की परवाह किये बिना कि उसमें पाठक की उम्र क्या है। प्रशंसा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में भिन्न हो सकती है, किंतु यह उन सभी को आकर्षित करेगा। यह जीवन को यहाँ तक कि वयस्क जीवन को राहत प्रदान करता है।

अंग्रेज़ी की रश्मि नाज़ारी ने कहा कि जब मैं कहानी पाठ और परस्पर संवाद के लिए जाती हूँ तो बच्चों से कहती हूँ, 'देखो, ठीक अभिव्यक्ति का कहानी कहने और साहित्य से कोई लेना देना नहीं है।' यह इंजीनियरिंग, चिकित्सा, मैनेजमेंट और अन्य तकनीकी धाराओं के साथ होता है। अतः आप जो कुछ भी कर रहे हों, उसमें अभिव्यक्ति का अच्छा कौशल महत्त्वपूर्ण है। गुजराती की सुश्री पुष्पा अंताणी ने कहा कि आज के बच्चों को सांस्कृतिक

मूल्यों को जानना चाहिए, साथ ही माता-पिता को भी अपने बच्चों के लिए समय निकालना चाहिए। एक लेखक को कहानी के रूप में कहानी लिखना चाहिए। यह उपदेशात्मक नहीं होना चाहिए। कहानी के द्वारा पारंपरिक विचारधारा की व्याख्या की जा सकती है।

श्री वीणेश अंताणी एवं श्रीमती रश्मि नाज़ारी

कन्नड के श्री सुमतींद्र नाडीग ने कहा कि मेरी कविताएँ बच्चों के अंतरंग दुनिया को प्रस्तुत करती हैं। वे वास्तव में बच्चों में मातृभाषा के प्रेम को विकसित करने, उनकी कल्पना को प्रोत्साहित करने, उनकी भावनाओं की सीमा को विस्तृत करने और दूसरों की भावनाओं को जाग्रत करने वाली होती हैं। कोंकणी के श्री दिलीप बोरकर का कहना था कि हमें बच्चों के लिए एक अच्छी कहानी बुनना चाहिए और खेलने के लिए लैपटॉप या मोबाइल नहीं देना चाहिए। हमें उन्हें एक रोबोट नहीं बल्कि उनके मानव स्वभाव को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। एक लेखक बच्चों में मानवता, समानता और भाईचारे का विकास कर सकता है।

मैथिली के प्रेम मोहन मिश्र ने कहा कि एक लेखक को बच्चों के लिए उत्कृष्ट, परिचित और दिलचस्प लेखन किया जाना चाहिए। बाल साहित्य की भाषा सरल और धाराप्रवाह होनी चाहिए। मलयाळम् के एन.पी. हाफ़िज़ मोहम्मद ने कहा कि बच्चे कहानियाँ पसंद करते हैं, उन्हें अच्छा साहित्य चाहिए। उनके दिल में कविता और गायन होता है।

मराठी से राजीव तांबे ने कहा कि क्या आज वास्तव में बच्चे पढ़ रहे हैं? हाँ, निश्चित हाँ। परंतु प्रश्न ये है कि क्या वे पढ़ते समय देखते हैं? क्या वे सुनते हैं? क्या वे जो पढ़ते हैं जीवन में उसका अनुभव करते हैं? ओड़िया के श्री बटकृष्ण ओझा ने कहा कि मैं अध्यापन के पेशे में हूँ। मैं अध्यापन करते हुए सूचनाओं, तथ्यों को जमा करता हूँ। मैं बच्चों के मन-मस्तिष्क को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में लेखन करता हूँ। पंजाबी के हिरदेपाल सिंह का कहना था कि मेरी रचनात्मकता का मुख्य क्षेत्र ऐसा गद्य है जो पंजाबी बच्चों की समझ में आ सके। कला की दुनिया के साथ दृढ़ संबंध होने के कारण मैं शब्द चित्र में अपने विचारों को प्रस्तुत करने में सहज महसूस करता हूँ। संस्कृत के श्री ऋषिराज जानी का कहना था कि पहला बाल साहित्य संस्कृत में लिखा गया। संस्कृत में रचित पशु कहानियों के आधुनिक रूप डिज्नी लैंड हैं। संताली के श्री कुहु दुलाड़ हांसदा ने कहा कि आज हम अपने बढ़ते लालच को पूरा करने के लिए अपमानजनक स्थिति तक युद्धरत हैं। उर्दू के श्री वकील नजीब ने कहा कि बच्चों की कहानियाँ हास्यपूर्ण और दिलचस्प होनी चाहिए। अकादेमी के सचिव द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

'बाल लेखन : अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर संगोष्ठी

15-16 नवंबर 2016, अहमदाबाद

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन साहित्य अकादेमी द्वारा 'बाल लेखन : अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 15-16 नवंबर 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत रचनाकारों, प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह आम धारणा है कि बाल साहित्य आसान होता है, इसीलिए हेय दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन इसके विपरीत यह अधिक यथार्थवादी और जटिल पैमाना है। सहज ढंग से संवेदनशीलता डालना एक कठिन काम होता है। बाल साहित्य का अधिक भाषाओं में अनुवाद करने की ज़रूरत है। स्रोत भाषा से लक्षित भाषाओं में अनुवाद करना अनुवादकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रसिद्ध गुजराती लेखक एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. रघुवीर चौधरी ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए आज की तारीख़ तक बाल साहित्य न लिखने के लिए खिन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बच्चे मासूम और शुद्ध मन के होते हैं। आज के लेखक आंशिक रूप से ही सही बाल साहित्य की रचना कर रहे हैं। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने के लिए युवा लेखकों को आगे आना होगा और इस चुनौती को स्वीकार करना होगा।

बाएँ से दाएँ : शशींद्र कुमार अधिकारी, दिननाथ बसुमतारी, उदयन ठक्कर

उद्घाटन सत्र में असमिया के शशींद्र कुमार अधिकारी, बोडो के दिननाथ बसुमतारी, गुजराती के उदयन ठक्कर, हिंदी के रमेश तैलंग, कन्नड के विजयकांत पाटिल, पंजाबी के इंडे, तेलुगु के वी.आर. शर्मा, सिंधी के रोशन गोलानी तथा उर्दू के असद रज़ा ने अपनी कविताओं, नज़्मों एवं ग़ज़लों का पाठ किया। सचिव, साहित्य अकादेमी के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र समाप्त हुआ।

उद्घाटन सत्र के बाद दूसरे दिन 16 नवंबर 2016 को प्रथम सत्र की अध्यक्षता गुजराती, संस्कृत एवं हिंदी के लेखक श्री भाग्येश झा ने की। सुश्री बुलू मुखोपाध्याय (बाङ्ला), सुश्री दक्षा दिनेश भवसार (गुजराती), श्री दिविक रमेश (हिंदी), श्री एस. आर. लाल (मलयाळम्) तथा श्री एल. जॉयचंद्र सिंह (मणिपुरी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री भाग्येश झा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बच्चों के लिए लिखना परंपरा तोड़ने के समान है।

कवि एक विक्रेता की भाँति होता है, जो मानव चेतना तक पहुँचता है। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य को हमेशा प्रवाह में रहना चाहिए और उसका प्राचीन और आधुनिक साहित्य में वर्गीकरण नहीं होना चाहिए। हमारे यहाँ श्रुति और स्मृति की परंपरा है, इसलिए साहित्य जटिल नहीं होना चाहिए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध तमिळ और अंग्रेज़ी विद्वान श्री इरा नटराजन ने किया। श्री सांतनु तामुले (असमिया), सुश्री रुना चक्रवर्ती (अंग्रेज़ी) सुश्री श्रद्धा त्रिवेदी (गुजराती) और श्री सूर्यकांत सर्राफ़ (मराठी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। यह सत्र प्रतिबद्ध पाठक न होने की चुनौती पर आधारित था। विद्वानों का कहना था कि बच्चों का धारा प्रवाह अंग्रेज़ी बोलना, परंतु अपनी मातृभाषा नहीं समझना, एक जटिल समस्या है।

तीसरा सत्र काव्य गोष्ठी का था, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी कवि श्री वासदेव मोही ने की। श्री शिवदेव सिंह मन्हास (डोगरी), श्री फिलिप क्लार्क (गुजराती), श्री सैयद अब्बास जौहर (कश्मीरी), सुश्री चंद्रिका पडगाँवकर (कोंकणी), श्री अनमोल झा (मैथिली), श्री शिशुपाल शर्मा (नेपाली), श्री राज किशोर पाढ़ी (ओड़िया), श्री नवनीत पांडे (राजस्थानी), श्री पीतांबर माझी (संताली) तथा श्री सुभाष शर्मा (सिंधी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

युवा पुरस्कार 2016

युवा पुरस्कार अर्पण समारोह एवं युवा लेखक उत्सव

2-3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य अकादेमी द्वारा 2 दिसंबर 2016 को युवा पुरस्कार 2016 के अर्पण समारोह तथा अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन का आयोजन अगरतला में किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए युवा पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में विजेताओं को बधाई दी। इस अवसर पर असम साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. ध्रुव ज्योति बर' मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित थे। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने समापन वक्तव्य दिया। अकादेमी के सचिव के धन्यवाद ज्ञापन के बाद एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें भगवत मेलम ग्रुप, कुचिपुड़ी द्वारा कुचिपुड़ी यक्षगान शैली में भक्त प्रह्लाद को प्रस्तुत किया गया।

युवा पुरस्कार विजेताओं के साथ मुख्य अतिथि तथा अकादेमी के अध्यक्ष एवं सचिव

पुरस्कार विजेता सम्मिलन

3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

युवा पुरस्कार 2016 अर्पण समारोह के अवसर पर 3 दिसंबर 2016 को पुरस्कृत रचनाकारों के सम्मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने युवा पुरस्कार विजेताओं, सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया। पुरस्कार विजेता सम्मिलन की अध्यक्षता अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरि दास ने किया। प्रार्थना शइकीया (असमिया), राका दासगुप्ता (बाङ्ला), बिजित गयारी (बोडो), ब्रह्म दत्त 'मगोत्रा' (डोगरी), रघु कारनाड (अंग्रेज़ी), अंकित त्रिवेदी (गुजराती), नीलोत्पल मृणाल (हिंदी), विक्रम हटवारा (कन्नड), आदिल मोहिउद्दीन (कश्मीरी), अन्वेषा अरुण सिंगबाळ (कोंकणी), दीप नारायण 'विद्यार्थी' (मैथिली), सूर्या गोपी (मलयाळम्), चोङथम दीपु सिंह (मणिपुरी), मनस्विनी लता रवींद्र (मराठी), संजीव क्षेत्री (नेपाली), ज्ञानी देवाशीष मिश्र (ओड़िया), रंजीत सरांवाली (पंजाबी), जितेंद्र कुमार सोनी (राजस्थानी), भारत भूषण रथ (संस्कृत), परिमल हांसदा (संताली), भारती सदारंगाणी (सिंधी), लक्ष्मी सरवण कुमार (तमिऴ), चैतन्य पिंगली (तेलुगु) और अब्दुस समी (उर्दू) ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया। सत्र के अध्यक्ष ने विजेताओं को बधाई देते हुए अपनी शुभकामनाएँ दीं। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव

3 दिसंबर 2016, अगरतला, त्रिपुरा

अखिल भारतीय युवा लेखक उत्सव के उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। आरंभिक वक्तव्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के सदस्य श्री ब्रजगोपाल राय ने दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के युवा पुरस्कार 2016 के विजेताओं को बधाई दी तथा अकादेमी द्वारा भव्य आयोजन पर संतोष व्यक्त किया। प्रसिद्ध तमिऴ लेखक सा. कंदासामी ने उद्घाटन व्यक्तव्य दिया। प्रसिद्ध लोक साहित्यकार, शिक्षाविद् प्रो. सरोज चौधरी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। मृदुल हलोई (असमिया), खोकन साहा (बाङ्ला), कुसुम चकमा (चकमा), प्रांजल धर (हिंदी), नारायण झा (मैथिली), बाङथोई खुमन (मणिपुरी), थैलो मोग (मोग), गौरीशंकर नेमिवाल (राजस्थानी), चिन्मयी मरांडी (संताली), अलीना इशरत (उर्दू) और संगीता खिलवानी (सिंधी) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से सत्र समाप्त हुआ।

अखिल भारतीय लेखक उत्सव के पहले 'कहानी पाठ सत्र' की अध्यक्षता त्रिपुरा के प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री शंकर बसु ने की। सायंतानी भट्टाचार्य (बाङ्ला), हांसदा सौभेंद्र शेखर (अंग्रेज़ी), अस्वाति शशिकुमार (मलयाळम्) एवं वेमपल्ली गंगाधर (तेलुगु) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। दूसरे कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता गौरहरि दास ने की तथा लेबेन लाल मशाहारी (बोडो), मोनेश बदिगर (कन्नड), सुजीत कुमार पंडा (ओड़िया) एवं वीरपांडियन एस. (तमिऴ) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

भाषा सम्मान अर्पण

8 फ़रवरी 2017, पुणे

साहित्य अकादेमी ने अपना प्रतिष्ठित भाषा सम्मान प्रो. आनंद प्रकाश दीक्षित तथा प्रो. एस.एस. बाहुलकर को भारतीय कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में दिए गए उनके योगदान के लिए प्रदान किया। दोनों विद्वानों को 8 फ़रवरी 2017 को पत्रकार भवन, पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में भाषा सम्मान प्रदान किया गया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं को विद्वानों का परिचय देते हुए कहा कि प्रो. आनंद प्रकाश दीक्षित ने बहुत से साहित्यिक कार्य किए हैं तथा अपने लंबे एवं विस्तृत कार्य-जीवन में उन्हें कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित किया गया। अपने कार्य-जीवन में उन्होंने जिस स्तर के विषयों पर कार्य किया तथा जिस प्रकार से उन्होंने समालोचनात्मक विश्लेषण किए वह आश्चर्यजनक हैं। उन्होंने कहा कि प्रो. दीक्षित ने जिस प्रकार से रस सिद्धांत पर कार्य किया वह अद्‌भुत है तथा उन्होंने मध्यकालीन साहित्य एवं भक्ति काव्य के नए तथ्यों को भी उजागर किया है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने बताया कि प्रो. बाहुलकर ने छह वैदिक पाठों पर कार्य करने के अलावा कई पुस्तकें, आलेख विनिबंध, मूल्यांकन, संस्कृत पुनर्सृजन, कविताएँ, कहानियाँ तथा निबंध आदि भी लिखे हैं। तीन दशकों से अधिक समय तक की गई आपके श्रमसाध्य शोध ने कई शोधकर्त्ताओं को प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत के जीवन एवं दर्शन को समझने में सहायता की है।

बाएँ से दाएँ : डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. आनंद प्रसाद दीक्षित एवं डॉ. एस.एस. बाहुलकर

उन्होंने आगे कहा कि उनके वैदिक अध्ययन तथा तंत्र के क्षेत्र में दिए गए उनके अथक प्रयासों के योगदान समकालीन भारतीय विचार में अतुलनीय हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि सभ्य समाज में सदैव विद्वानों का स्वागत किया है तथा इस प्रकार के व्यक्तियों को सम्मिलित करने का अर्थ है, सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देना। पुस्तक से प्रेम करना सामाजिक तत्त्वों को संरक्षित करने के समान है। प्राचीन तथा मध्यकालीन साहित्य पर एक गहन शोध करने की आवश्यकता है। हम ज़्यादातर समकालीन साहित्य की चर्चा करते हैं, यद्यपि महाकाली साहित्य अमूल्य रत्न है। उसका विकास तब हुआ जब मीडिया, संगोष्ठियाँ अथवा कोई भी विकसित तकनीक नहीं थी। मध्यकालीन साहित्य इसलिए जीवित रह सका, क्योंकि उसमें आम आदमी की सहभागिता तथा भावात्मक समतुल्यता थी। जिन विद्वानों को आज भाषा सम्मान से सम्मानित किया जाता है, वह मध्यकालीन युग के हैं। उन्होंने अपने साहित्य को बचाए रखने के लिए कड़ी मेहनत

की है। दोनों प्रख्यात विद्वानों ने साहित्य अकादेमी को उन्हें भाषा सम्मान से सम्मानित किए जाने हेतु धन्यवाद दिया। प्रो. दीक्षित ने कहा कि वह पहले एक साहित्य के शिक्षक थे तथा इसी से प्रेरित होकर उन्होंने लेखन प्रारंभ किया तथा एक प्रसिद्ध शिक्षक होने के नाते वह साहित्यिक समालोचना की ओर अग्रसित हुए। उन्होंने बताया कि जब वह जयकर पुस्तकालय, पुणे विश्वविद्यालय में 500 से अधिक पांडुलिपियों की विस्तृत सूचना रखने का कार्य करते थे, तब वह कुछ प्रमुख ऐतिहासिक मूल्य के कार्यों के पृष्ठों को मोड़कर रखते थे।

इससे उनका कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के प्रति रूझान बढ़ा तथा बाद में इससे उनकी भारतीय कविता तथा उसकी सौंदर्यपरकता में गहन रुचि हो गई। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि ज्ञान अभेद्य नहीं है, किंतु उसका विकास हमेशा होता रहता है तथा वह चलायमान है तथा उन्हें इस बात की ख़ुशी है कि एक निश्चित समय पर उनके शोध के लिए उन्हें सम्मानित किया गया। प्रो. बाहुलकर ने कहा कि वे साहित्य अकादेमी द्वारा उन्हें भाषा सम्मान प्रदान करने के लिए अत्यंत आभारी हैं। उन्होंने कहा कि इस सम्मान द्वारा उन्हें अपनी रुचि के कार्यक्षेत्र में कार्य करने हेतु और अधिक प्रोत्साहन मिला है। उन्होंने बताया कि वह विगत 40 वर्षों से वैदिक, कालजयी तथा बौद्ध हाईब्रिड संस्कृत साहित्य के अध्यापन का कार्य कर रहे हैं तथा वह कई पाठों पर कार्य कर रहे हैं। भारतीय कालजयी भाषाओं के अध्ययन, धार्मिक पक्षों तथा अज्ञात संप्रदायों लोक परंपराओं तथा उनके आपसी विमर्श हेतु उपयोगी है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें विभिन्न कालों में विभिन्न भाषाओं समुदायों की भाषाओं के उत्स, उनके विकास तथा विभिन्न परंपराओं, अवधारणाओं, मुहावरों तथा उनके शब्दों को जानने में भी विशेष रुचि है।

श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह

6 अगस्त 2016, कोलकाता

श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

साहित्य अकादेमी ने अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता प्रख्यात बाङ्ला कवि श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में 6 अगस्त 2016 को आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती का स्वागत किया और श्रोताओं को उनका परिचय दिया। उन्होंने महत्तर सदस्यता का प्रशस्ति-पत्र पढ़ा। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती को महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया और कहा कि नीरेंद्रनाथ जी को साहित्य अकादेमी का सर्वोच्च सम्मान प्रदान करते हुए उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। श्री तिवारी ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की आधुनिक भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा को रेखांकित करते हुए उनकी कुछ कविताओं का पाठ किया एवं उनकी कविताओं की अनेक अद्वितीय विशेषताओं को उजागर भी किया। अपने स्वीकृति वक्तव्य में श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती ने उन्हें यह सम्मान प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी का धन्यवाद किया। श्री चक्रवर्ती ने साहित्य अकादेमी के साथ अपने लंबे संबंध का स्मरण किया तथा अपनी पुस्तक 'उलंग राजा' को

अनेक भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करने के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कविता-युग के बारे में बात की और अपने कविता लेखन में प्लेटो, अरस्तु, शेली और कुछ अन्य लेखकों के प्रभाव को उद्धृत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य का समापन यह बताते हुए किया कि लोग कविता क्यों पढ़ते हैं और इसे रेखांकित किया कि कविता प्रसन्नता देती है, हमारे दर्द को शांत करती है तथा जीवन के साथ आशा को बनाए रखती है।

महत्तर सदस्यता कार्यक्रम के साथ ही 'संवाद' कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें सुप्रसिद्ध साहित्यकारों प्रो. नबनीता देव सेन, प्रो. पवित्र सरकार एवं श्री सुबोध सरकार ने भागीदारी की और श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती के जीवन और कार्य के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने की। प्रो. नबनीता देव सेन ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की हाज़िर जवाबी और उनकी संवेदनशीलता का उन पर प्रभाव के बारे में बात की। प्रो. पवित्र सरकार ने उनके दिलचस्प तथ्यों को उजागर किया, जैसे वे एक पत्रकार थे। उन्होंने गद्य एवं रोमांच तथा जी.के. चेस्टरटॉन सहित अनेक अनुवाद किए हैं। प्रो. सुबोध सरकार ने कहा कि श्री नीरेंद्रनाथ जी की कितनी कविताओं का अनुवाद अनेक भारतीय भाषाओं में हुआ है और अनेक उभरते कवियों को उन्होंने प्रेरित किया तथा श्री चक्रवर्ती की कविता की अनेक बारीकियों के बारे में बात की। श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने श्री नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती की मानवीयता, साहित्यकारों का समर्थन, पत्रिकाओं के संपादन में उनकी दक्षता को उजागर किया और रोचक यादों को भी साझा किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

'उन्नीसवीं सदी के बंबई प्रांत की साहित्यिक संस्कृति' पर संगोष्ठी

2-3 अप्रैल 2016, अहमदाबाद

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा फ़ोर्ब्स गुजराती सभा मुंबई, बलवंत पारेख सेंटर फ़ॉर जनरल सेमंटिक्स, वड़ोदरा तथा गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद के सहयोग से 2-3 अप्रैल 2016 को एच.के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जो उत्तरार्द्ध पूर्व उपनिवेश और पूर्व औपनिवेशिक काल में गुजराती साहित्य पर केंद्रित था, परंतु क्षेत्र की दूसरी भाषाओं को भी जैसे मराठी, सिंधी एवं कोंकणी पर पुर्तगाली औपनिवेशिक संदर्भ में लिया गया। संगोष्ठी का आयोजन अलेक्ज़ेंडर किनलोच फ़ोर्ब्स की 50वीं पुण्यतिथि पर किया गया था। फ़ोर्ब्स ने उन्नीसवीं सदी में गुजराती संस्कृति को दुनिया के सामने लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि गुजराती भाषा के उल्लेखनीय विद्वान और औपनिवेशिक प्रशासक फ़ोर्ब्स ने 19वीं सदी के बंबई प्रांत में संस्कृति के क्षेत्र में अपने बौद्धिक और शैक्षणिक कौशल को सिद्ध किया था। 1848 में उनके द्वारा स्थापित गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी ने गुजराती में एक पुनर्जागरण की पेशकश की। गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी ने पहले सार्वजनिक पुस्तकालय, कन्याओं के लिए विद्यालय, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और गुजरात की साहित्यिक पत्रिका को शुरू किया। फ़ोर्ब्स के अतुल्य योगदान को याद करते हुए उन्होंने बताया कि अकादेमी की गुजराती परामर्श मंडल की अनुशंसा के अनुसार अकादेमी राममाला को पुनर्मुद्रित कर रही है।

उद्घाटन सत्र में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी.के. ठक्कर एवं बॉम्बे उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मोहित शाह ने शोभा बढ़ाई। गुजराती कवि एवं विद्वान प्रो. निरंजन भगत ने बीज

बाएँ से दाएँ : शिरीष पांचाल, राजेश पंड्या, उषा उपाध्याय, बालकृष्ण दोषी, नवीनभाई दवे तथा सुभाष ब्रह्मदत्त

वक्तव्य दिया। फ़ोर्ब्स गुजराती सभा के अध्यक्ष एवं उद्योगपति श्री नवीन भाई दवे की गरिमामयी उपस्थिति रही। सत्र की अध्यक्षता गुजरात विद्यासभा के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध वास्तुकार डॉ. बालकृष्ण दोषी ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने उभरते आधुनिक भारतीय संस्कृति के लिए एक रहने की जगह को आकार देने में वास्तुकला की भूमिका की बात की और कहा कि भारत के सिविल सेवा में नियुक्ति से पहले श्री फ़ोर्ब्स इंग्लैंड में एक वास्तुकार के रूप में स्थापित थे। एच.के. आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य सुभाष ब्रह्मभट्ट ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के दो दिनों में पाँच तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया था, जिनमें 19वीं सदी के बंबई प्रांत के इतिहास, समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, मुद्रण संस्कृति और साहित्य पर विद्वत्तापूर्ण तथा जानकारी पूर्ण आलेख प्रस्तुत किए गए। गुजराती साहित्य के अध्यक्ष श्री चंद्रकांत टोपीवाला ने गुजराती साहित्य के 1850 के दशक से पहले पूर्व आधुनिक युग के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री प्रवीणचंद्र पटेल ने कहा कि बंबई प्रांत के कैसे सामाजिक धार्मिक सुधार राष्ट्रवाद के उदय द्वारा बँधा था और कैसे यह एक अधूरी परियोजना बनी रही। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री मकरंद मेहता ने 19वीं सदी में गुजरात के आर्थिक रुझान को प्रस्तुत किया और 20वीं सदी के विकास के लिए टी. गज्जर द्वारा स्थापित कला भवन की निर्णायक भूमिका को रेखांकित किया। लब्धप्रतिष्ठ सांस्कृतिक इतिहासकार श्री अच्युत याज्ञनिक के तर्क दिया कि सुधार उच्च वर्ग के लिए प्रतिबंधित था। अल्पसंख्यक, दलित, जनजातियाँ हाशिए पर ही बने रहे और उन्हें नई व्यवस्था का लाभ नहीं मिल सका। प्रसिद्ध आलोचक एवं संपादक श्री शिरीष पांचाल, श्री चंद्रकांत शेठ, सुश्री उषा उपाध्याय एवं राजेश पंड्या ने गुजराती साहित्य की उपलब्धियों को रेखांकित किया और उपेक्षित क्षेत्रों को रेखांकित किया। प्रसिद्ध आलोचक श्री दीपक मेहता ने 19वीं सदी में गुजरात में शिक्षा के विकास की रूपरेखा की व्याख्या की। प्रसिद्ध सांस्कृतिक इतिहासकार श्री वीरचंद धर्मसी ने बताया कि कैसे मनोरंजन के परंपरागत साधनों के विभिन्न रूपों ने अगली सदी की सिनेमा के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान की। श्री अरुण वघेला, जिनका आदिवासी संस्कृति पर उल्लेखनीय कार्य है, ने 19वीं सदी के आदिवासी इतिहास के स्रोत का विश्लेषण मुख्यतः अभिलेखीय आँकड़ों के आधार पर किया। श्री हासित मेहता ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में गुजराती साहित्यिक पत्रिका की एक समग्र तसवीर पेश की। हेमंत दवे, जिनकी ख्याति गुजरात के इतिहास लेखन और संस्कृति के अध्ययन में है, का तर्क था कि बंबई प्रांत में 19वीं सदी में आत्मचिंतन एवं आधुनिकता पूरी तरह ब्रिटिश प्रभाव के कारण नहीं था। प्रणामी एवं स्वामी नारायण संप्रदाय जैसे धार्मिक पंथों द्वारा नई अंग्रेज़ी शिक्षा लाने से पहले ही समाज में उपयोगितावादी सुधार किया जा चुका था।

उस समय का बंबई प्रांत, जिसे अब महाराष्ट्र कहा जाता है, में सिंध और कोंकण तथा कुछ भाग गुजरात का था, एक सत्र इन भाषाओं को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता कोंकणी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ लेखक दामोदर मावज़ो ने की। उन्होंने पुर्तगाली औपनिवेशिक संदर्भ में कोंकणी साहित्य के बारे में बात की। मराठी

और सिंधी साहित्यिक संस्कृति के बारे में मराठी आलोचक सुश्री पुष्पा राजापुरे तथा सुश्री नंदिता भवानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बहुभाषाविद् मुरली रंगनाथन ने तत्कालीन बॉम्बे के गुजराती, मराठी, उर्दू एवं फ़ारसी के प्रिंट संस्कृति के बारे में बात की।

गुजराती काव्यकार, गायक श्री अमर भट्ट ने 19 वीं सदी के कुछ श्रेष्ठ गुजराती गीतों को प्रस्तुत किया। द्वितीय प्रस्तुति युवा पारसी आर्किटेक्ट श्री कैवान मेहता की थी, जिन्होंने स्लाइड शो के द्वारा उन्नीसवीं सदी के बॉम्बे को प्रस्तुत किया, जिसे दर्शकों द्वारा बेहद सराहा गया।

'मैथिली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयक परिसंवाद

24 अप्रैल 2016, पटना

साहित्य अकादेमी द्वारा चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मैथिली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन 24 अप्रैल 2016 को विद्यापति भवन, पटना में किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। तत्पश्चात् एक मिनट का मौन रखकर हाल ही में दिवंगत हुए अकादेमी पुरस्कार प्राप्त दो प्रमुख मैथिली साहित्यकारों राजमोहन झा और सुरेश्वर झा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। परिसंवाद का उद्घाटन चेतना समिति के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मिश्र द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान और अकादेमी के भाषा सम्मान से विभूषित श्री मुनीश्वर झा ने किया। विषय प्रवर्तन करते हुए अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने समाज का वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करते हुए कहा कि वैश्वीकरण के प्रभाव में भावी पीढ़ी आ रही है साहित्य रचना का उद्देश्य इस पीढ़ी को बचाना है, इसे कुंठित होने से बचाना है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री मुनीश्वर झा ने कहा कि वैश्वीकरण के इस समय में अपनी मातृभाषा सहित सभी भाषाओं की सुरक्षा हो, यह हम सभी का दायित्व है। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन समिति के संयुक्त सचिव श्री रमानंद झा 'रमण' ने किया।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री सुकांत सोम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. धीरेंद्रनाथ मिश्र (वैश्वीकरण का स्वरूप और सरोकार), श्री श्याम दरिहरे (वैश्वीकरण और मैथिली साहित्य) तथा श्री अशोक (मैथिली भाषा परिवेश पर वैश्वीकरण का प्रभाव) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. मिश्र ने वैश्वीकरण के उपकरणों के उपयोग-दुरुपयोग को संदर्भित करते हुए दुरुपयोग से बचाव की अपेक्षा की। श्री दरिहरे ने भारतीय वैश्वीकरण को समग्रता में सर्वकल्याण में इसके अभाव को रेखांकित करते हुए मैथिली साहित्य में इसका चित्रण करने वाले लेखकों को संदर्भित किया। श्री अशोक ने कहा कि वैश्वीकरण के प्रभाव में स्थानिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है, संस्कृति और भाषा विकृत हो रही है। उन्होंने मैथिली साहित्य एवं इसके भाषिक परिवेश में हो रहे वैध-अवैध परिवर्तनों को उद्घाटित किया। सत्राध्यक्ष श्री सोम ने मैथिली पत्रकारिता के संदर्भ में वैश्वीकरण के प्रभाव पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम का संचालन समिति के संयुक्त सचिव श्री उमेश मिश्र ने किया।

राजिन्दर सिंह बेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

7-8 मई 2016, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा तेलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी, हैदराबाद के सहयोग से दो-दिवसीय राजिन्दर सिंह बेदी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन हैदराबाद के होटल ग्रांड प्लाज़ा में 7-8 मई 2016 को किया गया। 7 मई 2016 को उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दू कथाकार प्रो. अब्दुस्समद ने की। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने संगोष्ठी में आए अतिथियों का स्वागत किया। बीज-भाषण प्रसिद्ध उर्दू कहानीकार प्रो. बेग एहसास ने प्रस्तुत किए। उन्होंने राजिन्दर सिंह बेदी के उपन्यासों के हवाले से अपना लेख पढ़ा तथा उनके जीवन के अन्य पहलुओं को भी रेखांकित किया। संगोष्ठी में उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध उर्दू कथाकार रतन सिंह ने बेदी के साथ गुज़ारे अपने समय को याद किया तथा उनके साथ अपने परिवारिक संबंध को भी बताया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अब्दुस्समद ने राजिन्दर सिंह बेदी को उर्दू अफ़साने का रोल मॉडल क़रार दिया।

तेलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी, हैदराबाद के डायरेक्टर प्रो. एस. ए. शकूर ने बेदी पर अकादेमी के इस आयोजन पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की तथा साहित्य अकादेमी को हैदराबाद में ऐसे कार्यक्रम को बराबर आयोजित करने की सलाह दी और भरोसा दिलाया कि तेलंगाना स्टेट उर्दू एकेडमी साहित्य अकादेमी के साथ मिलकर आगे भी कार्यक्रम करेगी। उर्दू की प्रसद्धि लेखिका जीलानी बानो ने भी इस सत्र में भाग लिया तथा बेदी पर अपने ख़यालात का इज़्हार किया। सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने सभी का धन्यवाद किया।

8 मई 2016 को हुए पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की तथा तारिक़ छतारी, मौला बख़्श एवं फ़िरोज़ आलम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. ख़ालिद क़ादरी ने की, जबकि निज़ाम सिद्दीक़ी, शमीम तारिक़ एवं रहमान अब्बास ने अपने आलेख पढ़े। अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. अशरफ़ रफ़ी ने की जिसमें फ़ैयाज़ रिफ़अत, हबीब निसार एवं वसीम बेगम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'तुलनात्मक साहित्य' पर संगोष्ठी

14-15 मई 2016, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा कश्मीरी भाषा में 'तुलनात्मक साहित्य' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 14-15 मई 2016 को सेमिनार हॉल, जम्मू एंड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ में किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने मेहमानों का स्वागत किया। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं कश्मीरी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्रो. रहमान राही ने की। हिंदी के विद्वान प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था जिन्होंने तुलनात्मक साहित्य पर एक विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया। इस अवसर पर कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने आरंभिक वक्तव्य दिया और साहित्य अकादेमी की कश्मीरी भाषा में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। सत्र के अंत में सचिव महोदय ने अतिथियों का धन्यवाद किया।

बाएँ से दाएँ : प्रो. मो. ज़मां आज़ुर्दा, प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी, डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं प्रो. रहमान राही

संगोष्ठी के दूसरे दिन पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. मजरूह रशीद ने की तथा फ़ारूक़ फ़ैयाज़, ग़ुलाम रसूल जोश, सतीश विमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता कल्चरल एकेडमी के सचिव डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने की तथा इस सत्र में ग़ुलाम नबी ख़याल एवं शाद रमज़ान ने अपने आलेख पढ़े। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. ग़ुलाम नबी ख़याल ने की जबकि शफ़ी शौक़, बशर बशीर एवं वली मुहम्मद असीर ने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाद रमज़ान ने की। इस सत्र में फ़ारूक़ नाज़की, ओमकार एन. कौल एवं अब्दुर्रशीद लोन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में प्रो. मोहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने सभी प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया।

'ग़दर और ओड़िया साहित्य' पर संगोष्ठी

22-23 मई 2016, ख़ुर्दा, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बरौनी ओ खुर्दागढ़ विकास परिषद् के सहयोग से 22-23 मई 2016 को प्रसिद्ध विद्रोह की 200 वीं वर्षगाँठ पर 'ग़दर और ओड़िया साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ख़ुर्दा का प्रसिद्ध पाइका विद्रोह ओड़िशा इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय है। यह 1817 में आरंभ हुआ था तथा वर्षों तक जारी रहा। ओड़िया पाइका के प्रसिद्ध योद्धा बक्शी जगबंधु विद्याधर महापात्र के नेतृत्व में ब्रिटिश उत्पीड़न के विरुद्ध गंभीरता से लड़े।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया कथाकार विभूति पटनायक ने किया। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्रीदलगोबिंद प्रधान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने ग़दर साहित्य पर अपना आरंभिक वक्तव्य दिया तथा निवेदिता महांति ने बीज-वक्तव्य दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बरौनी ओ ख़ुर्दागढ़ विकास परिषद् के अध्यक्ष श्री दिलीप श्रीचंदन ने की। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल चंद्र बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में ओड़िशा राज्य अभिलेखागार के भाग्यलिपि मल्ला द्वारा पाइका विद्रोह पर एक ऑडियो विज़ुअल प्रस्तुत किया गया। प्रसिद्ध लेखक एवं आलोचक श्री प्रीतिश आचार्य एवं श्री लक्ष्मीनारायण सिंह ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता श्री देवाशीष पाणिग्रही ने की। दूसरे सत्र में श्री अशोक पटनायक, देवेंद्र

कुमार दाश एवं वंशीधर राउत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के अध्यक्ष श्री विजयानंद सिंह ने की।

तीसरे सत्र में सर्वश्री लालतंतु दास महापात्र एवं सत्यवादी बलियार सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र में सर्वश्री बाबाजी चरण पटनायक एवं गोपालकृष्ण दास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों सत्र की अध्यक्षता क्रमशः प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्रीमती आदरमणि बराल एवं श्री भीमसेन प्रधान ने की। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री नारायण राव ने की तथा समापन वक्तव्य श्री अतुलचंद प्रधान ने दिया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के अध्यक्ष श्री बनोज त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पारसमणि प्रधान पर संगोष्ठी

27-28 मई 2016, कैलिम्पोङ

बाएँ से दाएँ : एम.बी. प्रधान, मेहरमान सुब्बा, दिवाकर प्रधान, बी.बी. शर्मा एवं वीणेश प्रधान

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कैलिम्पोङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 27-28 मई 2016 को वर्शिप सेंटर, कैलिम्पोङ में नेपाली के प्रतिष्ठित साहित्यकार पारसमणि प्रधान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक तथा सिक्किम विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष प्रो. प्रतापचंद्र प्रधान ने किया।

संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर आरंभिक वक्तव्य देते हुए अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने पारसमणि प्रधान के साहित्यिक महत्त्व को उजागर किया। प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक डॉ. जस योञ्जन 'प्यासी' ने अपने बीज वक्तव्य में पारसमणि प्रधान के व्यक्तित्व का रेखांकन करते हुए उनके संपूर्ण साहित्य का आकलन प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अध्ययन समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञान सुतार ने की।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार डॉ. गोकुल सिन्हा ने की। इस सत्र में नवीन पौड्याल (नेपाली भाषा को पारसमणि प्रधान का योगदान), श्री परशुराम पौड्याल (नेपाली व्याकरण लेखन और कोश निर्माण में पारसमणि प्रधान की भूमिका), श्री महेश प्रधान (नीतिवादी साहित्यकार के रूप में पारसमणि प्रधान) तथा श्री भुवन खनाल (पारसमणि प्रधान की जीवनी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र श्री एम. बी. प्रधान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसके अंतर्गत श्री मेहमान सुब्बा, श्री बीनेश प्रधान और श्री दिवाकर प्रधान ने क्रमशः 'बालसाहित्यकार के रूप में पारसमणि प्रधान', 'नेपाली गद्य के विकास में 'चंद्रिका' और 'भारती' पत्रिका की भूमिका' तथा 'भाषा अध्यवसायी पारसमणि प्रधान' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का तृतीय सत्र दूसरे दिन प्रो. कृष्णराज घतानी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री संजय बिष्ट (संपादक के रूप में पारसमणि प्रधान) तथा श्री मेघनाथ छेत्री (पाठ्य पुस्तक लेखक के रूप में पारसमणि प्रधान) ने अपने आलेखों का पाठ किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता श्री कुमार छेत्री ने की। समापन व्याख्यान प्रख्यात नेपाली कवि और आलोचक डॉ. जीवन नामदुङ ने दिया। संपूर्ण संगोष्ठी का संचालन तथा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन अध्ययन समिति के महासचिव प्रो. बी.बी. शर्मा ने किया।

'वाचिक कविता : प्रदर्शन और सौंदर्य' विषयक संगोष्ठी

18 जून 2016, कोकराझार, असम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'वाचिक कविता : प्रदर्शन और सौंदर्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन कोकराझार में 18 जून 2016 को किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्यकार श्री जनिल कुमार ब्रह्म ने किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध बोडो कवि ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा बोडो वाचिक कविता के संरक्षण और अन्वेषण के महत्त्व को बताया। उन्होंने कई आधुनिक कवियों को उद्धृत किया, जिन्होंने व्यापक रूप से अपने लेखन में वाचिक सामग्री का प्रयोग किया है।

बीज वक्तव्य श्री अनिल बर' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो वाचिक कविता के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। यद्यपि लिखित बोडो साहित्य अब भी शैशवावस्था में है लेकिन वे वाचिक लोक आख्यान में बहुत समृद्ध हैं। यू. एन. एकेडमी के निदेशक कृष्ण गोपाल बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का एक सत्र

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता जनिल कुमार ब्रह्म ने की। इस सत्र में अदरम बसुमतारी ने 'बोडो क़सीदे : वाचिक गायन और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में दूसरा आलेख श्री नरेश्वर नार्जरी ने 'बोडो संस्कारिक गीत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में तीसरा आलेख गोपीनाथ बरगयारी ने 'बोडो

सागू गीत' विषय पर प्रस्तुत किया। सत्र में अंतिम आलेख संसुमा खुंगुर बर' ने 'रेडियो प्रस्तुति में बोडो लोकगीत' विषय पर प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री अनिल बर' ने की। इस सत्र में 'गीत/खेल गीत : प्रदर्शन और सौंदर्यशास्त्र' विषय पर इंदिरा बर' द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया। दूसरा आलेख तुलन मसाहारी 'मौखिक लिखित सातत्य : जीबी बिथाई और अन्य वाचिक कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख रहेंद्र ब्रह्म द्वारा 'नई मीडिया में बोडो मौखिक गीत' विषय पर प्रस्तुत किया गया। सत्र में अंतिम आलेख रवीरब ब्रह्म 'बोडो विवाह गीत और फुसली हबा गीत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता सुबंग बसुमतारी ने की। सत्र में प्रथम आलेख भूपेन बोरा ने 'रामू वाचिक कविता : प्रदर्शन एवं सौंदर्यशास्त्र' विषय पर प्रस्तुत किया। सत्र में अंतिम आलेख राजीव बरदलै द्वारा 'तिवा वाचिक कविता' विषय पर प्रस्तुत किया गया।

कलाचंद्र शास्त्री पर संगोष्ठी

21 जून 2016, इंफ़ाल

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा नहारोल साहित्य प्रेमी समिति, इंफ़ाल के सहयोग से 21 जून 2016 को दवे लिट्रेचर सेंटर इंफ़ाल में कलाचंद्र शास्त्री के कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नहारोल साहित्य प्रेमी समिति के अध्यक्ष प्रो. पी. नाबाचंद्र सिंह ने की तथा आरंभिक वक्तव्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने दिया। अकादेमी के सहायक संपादक गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान कलाचंद्र सिंह शास्त्री ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतियों से मणिपुरी साहित्य को समृद्ध करने में बड़ा योगदान दिया है। श्री शास्त्री को 'महाभारत' के मणिपुरी अनुवाद के लिए अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अपने उद्घाटन संबोधन में श्री एच. बिहारी सिंह ने कहा कि कलाचंद्र शास्त्री का व्यक्तित्व बहुमुखी था जिसने एक संस्कृत विद्वान की हैसियत से मणिपुरी साहित्य के विकास एवं संस्कृति में सराहनीय योगदान दिया।

प्रो. पी. नवचंद्र सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि यह संगोष्ठी एक संस्कृत विद्वान के उपलब्धियों पर आयोजित की जा रही है जिसने अपने लेखन से मणिपुरी साहित्य को समृद्ध किया। नाहारोल साहित्य प्रेमी समिति के महासचिव एच. विनोद कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित ख. प्रकाश सिंह ने की। श्री अभुसना शर्मा शास्त्री ने 'कलाचंद्र शास्त्री के संस्मरण', एलाङ्गम् दिनमणि ने 'कलाचंद्र शास्त्री एक अनुवादक के रूप में' तथा आई. एस. काङ्जम ने 'कलाचंद्र शास्त्री की भाषा और साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान अभुसना शर्मा ने कलाचंद्र शर्मा से व्यक्तिगत लगाव एवं विद्वान के जीवन की यादों को साझा किया।

दूसरे सत्र में पी. नवचंद्र सिंह ने कलाचंद्र शास्त्री की कृतियों पर, ना. प्रेमचंद सिंह ने 'कलाचंद्र शास्त्री : एक नाटककार और कलाकार के रूप में' तथा लनचेन माइती ने 'कलाचंद्र शास्त्री एक लेखक के रूप में' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता एवं संयोजन पुनः ख. प्रकाश सिंह ने की।

संगोष्ठी में भारी संख्या में मणिपुरी एवं संस्कृत विद्वान मौजूद थे।

जनजातीय कवि सम्मिलन (हो भाषा)

16 जुलाई 2016, बारिपदा (ओड़िशा)

साहित्य अकादेमी ने उत्तर ओड़िशा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 16 जुलाई 2016 को ओड़िशा के बारिपदा विश्वविद्यालय के ट्राइबल स्टडीज़ सेंट्रल हॉल में जनजातीय कवि सम्मिलन का आयोजन किया।

इस संगोष्ठी का उद्घाटन उत्तर ओड़िशा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्र द्वारा किया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में जनजातीय भाषाओं पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उस भाषा का नाश हो जाएगा यदि उस भाषा के लोग उसे नहीं बोलेंगे। उन्होंने हिब्रू भाषा का उदाहरण दिया कि कैसे यह एक विशिष्ट भाषा बनी। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया और अकादेमी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने अकादेमी द्वारा जनजातीय भाषाओं के उत्थान के लिए अकादेमी द्वारा उठाए गए क़दमों से भी अवगत कराया। संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने अपने बीज-वक्तव्य में हो भाषा एवं साहित्य का परिचय दिया। उन्होंने सूचित किया कि अकादेमी ने अनेक जनजातीय सम्मेलनों में कवियों/रचनाकारों को सम्मिलित किया है, किंतु पहली बार हो भाषा पर विशेष 'कवि सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। इस समारोह में दो विशिष्ट अतिथि थे— श्रीमती सुशीला तिरिया, भूतपूर्व सांसद (राज्य सभा) और वरिष्ठ पत्रकार श्री विजय कुमार अग्रवाल। श्रीमती तिरिया जो स्वयं हो समाज से संबद्ध हैं, ने कार्यक्रम के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं। श्री अग्रवाल जी की अनुपस्थिति में उनका संदेश श्री संतोष महांति द्वारा पढ़ा गया। साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान से सम्मानित श्री विनोद कुमार नायक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने हो भाषा और साहित्य पर विशेषकर वाचिक परंपराओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर दो कविता-पाठ सत्र भी हुए, जिनकी अध्यक्षता श्री रवींद्र कुमार कालुंदिया और श्री इशोरे बारदरा ने की। श्री प्रफुल्ल चंद्र तियु, श्री दिवाकर साय, श्री बुधन सिंह हेस्सा, श्री कैरा सिंह बदिया, श्री शंकरु सिंह, श्री जामिनीकांत तिरिया, श्री राठी बलाय और श्री जयपाल सिंह नायक ने कविता-पाठ किया। कवियों ने अपनी कविताएँ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ पढ़ीं। इस अवसर पर काफ़ी संख्या में श्रोता उपस्थित थे और उन्होंने कवियों की प्रशंसा की तथा इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन के लिए अकादेमी को धन्यवाद किया।

अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह

20-21 अगस्त 2016, लखनऊ

संस्कृति मंत्रालय, भारत-सरकार एवं साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी संस्थान, लखनऊ के निराला सभागार में आयोजित अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी समारोह के पहले दिन 20 अगस्त 2016 को बीज वक्तव्य देते हुए प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि नागर जी अकेले बहुविध साहित्यकार थे। उनका व्यक्तित्व एवं लेखन दोनों ही विपुलताओं से भरे थे। प्रो. दीक्षित ने अनेक अवसरों पर नागर जी के साथ गुज़ारे वक़्त के

अनेक संस्मरण भी सुनाए। नागर जी की सुपुत्री अचला नागर ने उनके व्यक्तित्व तथा लेखन के विभिन्न पक्षों को लेकर चर्चा की। अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि लेखक की उम्र बहुत लंबी होती है। वह साहित्य का दर्पण होने के साथ ही उसका निर्माता भी होता है। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त गुजराती साहित्यकार रघुवीर चौधरी भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि प्रयोगधर्मिता अमृतलाल नागर की पहचान थी। उन्होंने आम जन-जीवन को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में कठिन श्रम किया। समारोह के प्रारंभ में नागर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित चित्र प्रदर्शनी एवं पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं अन्य साहित्यकारों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। चित्र प्रदर्शनी में नागर जी की पूरी रचनात्मक जीवन-यात्रा को 21 पैनल में प्रदर्शित किया गया। नागर जी की लिखी और उन पर लिखी गई पुस्तकों की प्रदर्शनी ने एक ही जगह पर नागर जी की संपूर्ण रचनात्मक उपस्थिति को महसूस करवाया। यह प्रदर्शनी साहित्य प्रेमियों द्वारा ख़ूब सराही गई।

बाएँ से दाएँ : प्रो. रघुवीर चौधरी, प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्रीमती अचला नागर एवं प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित

इस विशेष अवसर पर अमृतलाल नागर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हिंदी विनिबंध (मोनोग्राफ) का गुजराती, तमिळ और मलयाळम् भाषा में अनूदित विनिबंध का लोकार्पण हुआ। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त नागर जी के उपन्यास 'अमृत और विष' के मराठी अनुवाद का भी लोकार्पण किया गया।

'अमृतलाल नागर की औपन्यासिक कृतियाँ' विषय पर केंद्रित प्रथम सत्र में प्रख्यात कथाकार ममता कालिया ने कहा कि नागर जी ने हिंदी गद्य को अभिव्यक्ति के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया। चर्चित साहित्यकार माधव हाडा ने रामविलास शर्मा के कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि उपन्यास उनकी प्रतिभा का उचित क्षेत्र था, और नागर जी के अंदर कथाकार हमेशा मौजूद रहा। वरिष्ठ आलोचक रोहिणी अग्रवाल ने कहा कि नागर जी ने समय से आगे की बात कही है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात कथाकार गोविंद मिश्र ने कहा कि नागर जी के व्यक्तित्व में खुलापन था और इसीलिए उनके लेखन में रेंज था।

'अमृतलाल नागर की कहानियाँ एवं बाल साहित्य' विषयक द्वितीय सत्र में वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति ने कहा कि कहानियाँ उनके साहित्य में हाशिए पर रहीं। प्रख्यात बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने कहा कि नागर जी उस्ताद क़िस्सागो थे, जिनको पाठक दीवानगी की हद तक प्यार करते थे। 'लमही' पत्रिका के संपादक विजय राय ने कहा कि बनारस का तत्त्व नागरजी की कहानियों में मौजूद है। नूर ज़हीर ने कहा कि नागर जी ने महिलाओं की विभिन्न समस्याओं को बेहद ख़ूबसूरती के साथ उभारा है, जिसकी कोई मिसाल नहीं है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए रमेशचंद्र शाह ने कहा कि भारतीय समाज में परिवर्तन न हो पाना नागर जी की प्रमुख चिंता थी।

तृतीय सत्र का विषय था 'अमृतलाल नागर का कथेतर गद्य एवं हास्य व्यंग्य', जिसमें इतिहासकार, उपन्यासकार योगेश प्रवीन ने अपने विशिष्ट अंदाज़ में नागर जी और तत्कालीन लखनऊ की तमाम ख़ूबियों के बयान से श्रोताओं को अचम्भित और प्रफुल्लित किए रखा। नागर जी की पौत्री और लोकभाषाविद् दीक्षा नागर ने इस बात पर चिंता जताई कि आज के दौर में साहित्य से जुड़ने की कोई कोशिश नहीं हो रही है। आलोचक योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि नागर जी का अध्ययन क्षेत्र व्यापक है। उनका साहित्य 'डिस्कवरी ऑफ़ अवध' है।

'नाटक, रंगमंच, फ़िल्म एवं रेडियो के क्षेत्र में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ रंगकर्मी प्रतिभा अग्रवाल ने लखनऊ के संदर्भ में उन्हें 'नाटकों का भरत मुनि' बताते हुए कहा कि वह नाटकों को लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत चिंतित रहते थे। वरिष्ठ रंगकर्मी उर्मिल कुमार थपलियाल ने कहा कि नागर जी गाँव-मुहल्ले के थियेटर को पेशेवर थियेटर मानते थे। इस बारे में उनका कहना था 'पश्चिमी थियेटर से सीखो, मगर अपने थियेटर को मत भूलो'। सिने निर्देशक एवं रंगकर्मी अतुल तिवारी ने सिनेमा के विभिन्न पक्षों की बात करते हुए उसमें नागर जी के विशिष्ट योगदान पर चर्चा की।

उसी दिन शाम को नागर जी की रचना 'युगावतार' का नाट्य मंचन भी ललित सिंह पोखरिया के निर्देशन में आयोजित हुआ। यह नाटक हिंदी लेखक भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन पर आधारित है।

समारोह के दूसरे दिन 'स्मृति में अमृतलाल नागर' विषयक चतुर्थ सत्र के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर ने कहा कि नागर जी ने अपने समय की बहुत बड़ी पीढ़ी का नेतृत्व किया। सत्र में रामविलास शर्मा के पुत्र व चर्चित साहित्यकार विजय मोहन शर्मा ने कहा कि उन्होंने अपना काफ़ी समय निराला जी के साथ और मेरे पिता के साथ गुज़ारा था। पुरातत्त्वविद राकेश तिवारी ने नागर जी के साथ अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि नागर जी युवाओं को बहुत प्रेरित करते थे। रंगकर्मी एवं नागर जी के परिवार के संदीपन नागर ने अमृतलाल जी की यादें ताज़ा करते हुए कहा कि वे किसी भाषा के विरोधी नहीं थे, बल्कि उन्हें अपनी मातृभाषा से बहुत प्यार था।

समारोह के छठे सत्र में 'भारतीय भाषाओं में अमृतलाल नागर की उपस्थिति' विषय पर परिचर्चा हुई, जिसमें गुजराती, मलयाळम्, तेलुगु एवं उर्दू के रचनाकारों ने अपने विचार रखे। सत्र की अध्यक्षता श्रीनिवास उद्गाता ने की। सत्र में साहित्यकार व अनुवादक आलोक गुप्त ने कहा कि नागर जी ने एक लेखक की ज़िंदगी जी है। नागर साहब ने कहा था कि 'लेखक की कमाई खाई है, जिसके लिए वह अपनी मेहनत व राम के सिवा किसी के एहसानमंद नहीं हैं। सुधांशु चतुर्वेदी ने मलयाळम्, एस. शेषारत्नम ने तेलुगु, शकील सिद्दकी ने उर्दू भाषा में नागर जी की उपस्थिति को रेखांकित किया। समापन सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना ने की और समापन वक्तव्य अचला नागर ने दिया। नरेश सक्सेना ने कहा कि अमृतलाल नागर आम आदमी को अपना मालिक मानते थे। अमृतलाल नागर की सुपुत्री अचला नागर ने संस्कृति मंत्रालय और साहित्य अकादेमी को इतने विशाल और सुंदर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए हार्दिक बधाई और धन्यवाद दिया। हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्यप्रसाद दीक्षित ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। दोनों दिवसों के कार्यक्रमों का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) कुमार अनुपम ने किया। शाम को नागर जी की कहानियों पर आधारित 'नागर कथा' नामक नाटक का चित्र मोहन के निर्देशन में मंचन संपन्न हुआ। इस नाटक में नागर जी की दो कहानियों—'शकीला की माँ' और 'क़ादिर मियाँ की भौजी' का कोलाज प्रस्तुत किया गया।

जम्मू एवं कश्मीर जनजातीय लेखक सम्मेलन

3-4 सितंबर 2016, कारगिल

लेखक सम्मिलन का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के सहयोग से 3-4 सितंबर 2016 को कारगिल में एक द्विदिवसीय जम्मू एवं कश्मीर जनजातीय लेखक सम्मिलन का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि अकादेमी ने पहली बार कारगिल में साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया है तथा जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के सहयोग के लिए उन्हें धन्यवाद भी किया। जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के सचिव डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी की कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा ने बीज-भाषण दिया। जाने-माने पुतर्गाली लेखक एवं कवि श्री काचो अस्फादंयार खान तथा जे.एण्ड के. विधानसभा के अध्यक्ष श्री हाज़ी इनायत अली ने भी इस सत्र में अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। एस.ओ.सी.ए-जी1, कारगिल के उपसचिव श्री नाज़िर हुसैन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जाति सादिक़ अली सादिक़ एवं मोहम्मद बाकिर ने की तथा चार प्रख्यात विद्वानों डॉ. जावेद राही, डॉ. कोनचोक रिगज़िन, श्री मोहम्मद सादिक़ हरदासी तथा श्री अब्दुल मजीद हसरत ने ''जे. एण्ड के. में जनजातीय भाषाएँ तथा साहित्य एक सिंहावलोकन'', ''जे. एण्ड के. में लद्दाख़ी भाषाओं और साहित्य का विकास'', ''जे. एण्ड के. में बाल्टी भाषाओं और साहित्य का विकास'' तथा ''जे. एण्ड के. में गोजरी भाषाओं और साहित्य का विकास'' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री रशीद क़मर तथा थुपस्तन पालदन ने की। पाँच प्रख्यात लेखकों श्री मोहम्मद जवाद जालिब, श्री अखोने असगर अली बशारत, श्री मोहम्मद रज़ा अमजद, श्री तसेरिंग नूरबू मरतसे तथा श्री मोहम्मद अमीन क़मर ने क्रमशः पुरगी, बाल्टी, दर्दी/शीना, लद्दाख़ी तथा गोजरी भाषाओं में कहानियाँ प्रस्तुत कीं। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. कोनचोक रिगज़िन तथा श्री मोहम्मद अमीन क़मर ने की तथा दो प्रख्यात विद्वानों श्री हाजी मोहम्मद पाशक्यूम तथा श्री मुख़्तार ज़ाहिद बुदगामी ने ''जे. एण्ड के. में पुरगी भाषाओं और साहित्य का विकास'' तथा ''जे. एण्ड के. में शीना/दार्दी भाषाओं और साहित्य का विकास'' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र कविता-पाठ पर आधारित था, इस सत्र में प्रख्यात 13 कवियों—श्री मोहम्मद अली ख़ान साबील, श्री नसीर-उ-द्दीन खाफ़ी, श्री हाजी सादिक़ अली सादिक़, श्री अशरफ अली सागर, श्री अब्दुल मजीद सेहरा, श्री आरिफ हुसैन आरिफ़, श्री थुपस्तन पलदान, श्री कोनचोक नवांग, श्री जिगमत नोरबू ख़याल लद्दाख़ी, श्री मोहम्मद राहुल्लाह रूहानी, श्री फाज़िल अबास फाज़िल, श्री जान मोहम्मद हक़ीम तथा श्री मोहम्मद इक़बाल अज़ीम ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा सप्ताह

14-21 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने अपने प्रधान कार्यालय में 14-21 सितंबर 2014 तक ''राजभाषा सप्ताह'' का सफल आयोजन किया। 14 सितंबर 2016 को पूर्वाह्न में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बल्देव भाई शर्मा थे। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिंदी भाषा ने हमें आपस में जोड़कर रखा है। हिंदी आज दक्षिण और पूर्वोत्तर में भी अपनी जगह बना रही है। मुख्य अतिथि श्री बल्देव भाई शर्मा ने हिंदी भाषा के प्रयोग को लेकर ग्लानि मुक्त होने की अपील की। उन्होंने कहा कि अब हिंदी के बहुत से शब्दों का प्रयोग हम नहीं करते, जबकि उनका प्रयोग अहिंदी क्षेत्रों और हमारी क्षेत्रीय भाषाओं में होता रहा है।

सप्ताह भर के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ, कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी निबंध लेखन, वाक्, अनुवाद तथा श्रुतलेखन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिताएँ हिंदी और हिंदीतर भाषी दो वर्गों में आयोजित की गई थीं। श्रुतलेखन प्रतियोगिता विविध कार्य कर्मचारियों के लिए थी, जबकि अन्य प्रतियोगिताएँ सभी के लिए। अकादेमी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार अन्य प्रतियोगिताओं में संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत दिल्ली स्थित कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया था। इनमें संगीत नाटक अकादेमी, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कर्मचारियों/अधिकारियों ने अपनी सहभागिता की।

20 सितंबर 2016 को 'हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन' विषयक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री वेद प्रकाश गौड़, राजभाषा निदेशक, संस्कृति मंत्रालय को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अकादेमी कर्मियों से हिंदी में कार्य संबंधी दिक़्क़तों के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा उनका व्यावहारिक समाधान करते हुए सबको हिंदी टिप्पण एवं पत्राचार के लिए प्रोत्साहित किया।

डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं डॉ. बल्देव भाई शर्मा

सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2016 को आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिष्ठित पत्रकार श्री राहुल देव उपस्थित थे। श्री राहुल देव ने कहा कि मेरी चिंता भाषा को लेकर है, मैं भाषा के लिए सोचता हूँ। उन्होंने सभी से अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ी को उसकी मातृभाषा में शिक्षा देने और

संवाद स्थापित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हमेशा सचेत होकर भाषा का प्रयोग करें तो भाषा का मान और सौंदर्य दोनों ही स्वतः बढ़ जाएगा। इस समारोह में राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को मुख्य अतिथि श्री राहुल देव तथा अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव के हाथों नक़द पुरस्कार और प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी की द्वैमासिक हिंदी पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के अतिथि संपादक डॉ. रणजीत साहा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर संक्षेप में अपने विचार रखे।

राजभाषा मंच

14 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा ज़ी इंटरटेनमेंट इंटरप्राइज़ेज़ लि. के संयुक्त तत्त्वावधान में अकादेमी में आयोजित राजभाषा सप्ताह के अंग के रूप में 'हिंदी की वर्तमान स्थिति : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक विशेष परिचर्चा का आयोजन 14 सितंबर 2016 शाम को हिंदी दिवस के अवसर पर किया गया। इसमें डॉ. सुभाष चंद्रा और प्रो. अशोक चक्रधर के बीच विमर्श हुआ। इस विशेष परिचर्चा में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि भाषा, विचार, साहित्य, संस्कृति आदि की सकारात्मकता को यदि मीडिया द्वारा प्रश्रय प्रदान किया जाए तो इससे अच्छी कोई बात नहीं हो सकती। डॉ. चंद्रा और डॉ. अशोक चक्रधर के विमर्श से यह बात सामने आई कि सबसे ज़्यादा ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षा का माध्यम, विशेषकर तकनीकी शिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाया जाना चाहिए। देश को एकसूत्र में बाँधने में हिंदी की भूमिका, तकनीकी स्तर पर हिंदी की सक्षमता तथा संयुक्त राष्ट्र की भाषा के रूप में इसकी मान्यता जैसे मुद्दे भी विमर्श में उठाए गए। डॉ. चंद्रा ने कहा कि अंग्रेज़ी कभी भी इस देश की संपर्क भाषा नहीं हो सकती। देश के जन-जन की भाषा हिंदी है और यही रहेगी। डॉ. चक्रधर ने कहा कि हिंदी को अति शुद्धता की बजाय सभी भाषाओं के आम बोलचाल के शब्दों को अपनाकर ज़्यादा लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

इस अवसर पर नोबल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी ने भी सभा को संबोधित किया। उन्होंने हिंदी भाषा के व्यवहार संबंधी अपने अनुभवों को साझा किया तथा ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए अकादेमी को बधाई दी।

राजभाषा मंच

19 सितंबर 2016, नई दिल्ली

राजभाषा सप्ताह के दौरान 19 सितंबर 2016 को 'राजभाषा मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत 'कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशाएँ' विषयक व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ. जयप्रकाश कर्दम को आमंत्रित किया गया था। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने डॉ. कर्दम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव को स्वागत भाषण के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत में हिंदी में कहीं भी संपर्क में कोई कठिनाई नहीं आती।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने कहा कि 'राजभाषा कार्यान्वयन' एक व्यापक विषय है। यह कार्यान्वयन है संघ की राजभाषा नीति का और यह संघ की नीति है, हम कैसे ज़्यादा से ज़्यादा काम हिंदी में कर सकते हैं। इसके लिए तीन आधार हैं : प्रशिक्षण, अनुवाद तथा फ़ाइलों पर कार्य।

हिंदी दिवस समारोह

20 सितंबर 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ, जो काफी उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावकारी रहा। इस हिंदी दिवस के अवसर पर अकादेमी के कर्मचारियों के लिए अनेक प्रतियोगिओं का अयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बहुत ही निष्ठा एवं उत्साह से बढ़-चढ़कर प्रतियोगिता में भाग लिया। निबंध लेखन, हिंदी अनुवाद एवं सुलेख प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस पावन अवसर पर हिंदी के विद्वान एवं अनुवाद विशेषज्ञ डॉ. रंजीत कुमार को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। समारोह का संचालन क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने किया तथा हिंदी प्रतियोगिताओं का संचालन कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने किया।

हिंदी दिवस समारोह

20 सितंबर 2016, चेन्नै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा कार्यालय परिसर में 20 सितंबर 2016 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध हिंदी विद्वान शौरिराजन को आमंत्रित किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने अतिथि एवं कार्यालय के सहयोगियों का स्वागत किया। श्री शौरिराजन ने 'हिंदी राजभाषा के रूप में' पर अपना व्याख्यान देते हुए रोज़मर्रा के कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया। इस अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया तथा विजेताओं को आमंत्रित अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। श्री इलंगोवन ने श्री शौरिराजन का आभार व्यक्त किया और विजेताओं को बधाई दी।

हिंदी दिवस समारोह

19 सितंबर 2016, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर अपने कर्मचारियों के बीच कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया के सहायक निदेशक श्री विनोद कुमार शर्मा को आमंत्रित किया गया। श्री शर्मा ने हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा दी और कहा कि हिंदी ही पूरे भारत को एक सूत्र में बाँधने में सक्षम है। उन्होंने विजयी प्रतिभागियों में पारितोषिक वितरित किए।

हिंदी दिवस समारोह

19 सितंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के सभी सहकर्मियों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय सचिव डॉ.गोपाल च. बर्मन ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय के अधिकारी श्री शिवनारायण सरोज थे।

राजभाषा संगोष्ठी : दक्षिण भारतीय राज्यों में राजभाषा कार्यान्वयन

26 अक्तूबर 2016, चेन्नै

साहित्य अकादेमी द्वारा 'दक्षिण भारतीय राज्यों में राजभाषा कार्यान्वयन' विषयक संगोष्ठी का आयोजन भारतीय विद्या भवन, चेन्नै में 26 अक्तूबर 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सम्मानित अतिथियों एवं हिंदी प्रेमियों का औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लोगों के बीच मौजूद भाषायी मतभेद को पाटने का काम कर रही है। उन्होंने अकादेमी द्वारा प्रकाशित तीन पत्रिकाओं—इंडियन लिटरेचर, समकालीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृत प्रतिभा का उल्लेख किया, जिनमें समकालीन भारतीय साहित्य में मूल हिंदी में लिखित तथा अन्य भारतीय भाषाओं की कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, साक्षात्कार एवं साहित्यिक विमर्श प्रकाशित होते हैं।

दक्षिण रेलवे के मुख्य प्रबंधक एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नै के अध्यक्ष श्री वशिष्ठ जौहरी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। श्री वेद प्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी के पुत्र श्री देवदास गाँधी दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के अग्रदूत थे। हर भाषा की अपनी एक पहचान होती है। उन्होंने स्वतः संज्ञान लेते हुए आदिवासी और अलिखित बोलियों सहित सभी भाषाओं को एक सूत्र में बाँधने के प्रयास हेतु अकादेमी की प्रशंसा की। वरिष्ठ हिंदी विद्वान श्री पी.के. बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि हिंदी की शिक्षा सहज अभिरुचि उत्पन्न करती है।

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री वशिष्ठ जौहरी डॉ. पी.के. बालसुब्रह्मण्यम एवं श्री वेदप्रकाश गौड़

पहले सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध हिंदी विद्वान प्रो. आर. शौरिराजन ने किया तथा सत्र का विषय था 'हिंदी अध्यापन और प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति'। इस सत्र में तीन विद्वान श्री नवनाथ कांबले, श्री एस. पार्थसारथी एवं श्री एस. बशीर सम्मिलित हुए और अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री नवनाथ कांबले ने कहा कि हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है और देश के लोगों को एकजुट करने में गर्व

होता है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को अकादमिक परिषद् के अध्यक्ष श्री पार्थसारथी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार के लिए 1918 में प्रचार सभा की स्थापना के लिए महात्मा गाँधी की दृष्टि की बात की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता टी.एस.के. कण्णन ने की तथा तीन विद्वानों श्री दीनानाथ सिंह, श्री नरेंद्र सिंह मेहरा और श्री शशांक दुबे ने भाग लिया। यह सत्र 'दक्षिण भारत में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति' पर आधारित था। प्रसिद्ध हिंदी अनुवादक श्री कण्णन ने बनारस यूनिवर्सिटी में हिंदी सीखने के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इस बात पर गर्व है कि उनके हिंदी अनुवाद को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि द्वारा सराहा गया था। दक्षिण रेलवे के उपमुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री दीनानाथ सिंह ने हिंदी में पत्राचार, टिप्पण लेखन आदि के बारे में बात की। श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन ने अकादेमी द्वारा हिंदी के विकास के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन की सराहना की। श्री शशांक दुबे ने खेल, राजनीति और सिनेमा के क्षेत्र में दक्षिण भारतीय योगदान को संदर्भित करते हुए हिंदी संबंधी वर्तमान स्थिति और चुनौतियों पर प्रकाश डाला। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

एन. कृष्ण पिल्लै जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

22 सितंबर 2016, तिरुवनंतपुरम

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु ने एन. कृष्ण विल्लै फाउंडेशन के सहयोग से 22 सितंबर 2016 को तिरुवनंतपुरम में एन. कृष्ण पिल्लै की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन केरल के माननीय राज्यपाल श्री पी. सतशिवम ने किया तथा इस सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने की। श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने माननीय राज्यपाल, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. कयामकुलम यूनुस ने आरंभिक वक्तव्य दिया। श्री सी. राधाकृष्णन ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। पूर्व सांसद श्री पनयम रविंद्रन ने बीज-भाषण दिया। डॉ. इज़हुमत्तोर राजराजा वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र का संचालन डॉ. जॉर्ज ओनाक्कूर ने किया। चार प्रख्यात लेखकों—डॉ. सीमा जेरोम, डॉ. राजा बारियर, डॉ. इज़हुमत्तोर तथा डॉ. जी. पदमा राव ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र का संचालन प्रख्यात आलोचक डॉ. एन. मुकुंदन ने किया। डॉ. एम.एम. बशीर ने एन. कृष्ण पिल्लै से अपने संबंधों की चर्चा की। इस सत्र में डॉ. डी. बेंजामिन, डॉ. सी.आर. प्रसाद, डॉ. ज्योतिष कुमार तथा डॉ. बी. शशिकुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'बहुसांस्कृतिकता, पहचान का संकट तथा पंजाबी साहित्य' पर संगोष्ठी

22-23 सितंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग के सहयोग से ''बहुसांस्कृतिकता, पहचान का संकट तथा पंजाबी साहित्य'' विषय पर 22-23 सितंबर 2016 को दिल्ली विश्वविद्यालय के सेमिनार हॉल में एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के मैनेजमेंट स्टडीज़ के डीन प्रो. एम. एल. सिंगला ने पंजाब की बहुसांस्कृतिकता के इतिहास के बारे में बताया। प्रो. खेल सिंह ने विद्वानों और प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संगोष्ठी के विषय के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उसके आधुनिक शैक्षिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में उसकी आवश्यकता पर बल दिया। यू.के. स्थित ऑक्सफोर्ड यूनिवसिटी में अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर, प्रो. प्रीतम सिंह ने बीज-भाषण दिया। डॉ. मनमोहन ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. परमिंदर सिंह ने की तथा डॉ. जसविंदर सिंह, प्रो. बूटा सिंह बरार, डॉ. देपिंदरजीत कौर रंधावा तथा डॉ. वनीता ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में डॉ. बलजिंदर सिंह, डॉ. बलदेव धालिवाल, डॉ. गुरमुख सिंह, डॉ. कुलवीर तथा डॉ. यादविंदर सिंह ने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. दीपक मनमोहन सिंह ने की। तृतीय तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. सतीश कुमार वर्मा ने की तथा प्रो. गुरपाल सिंह संधु, माधुरी चावला तथा डॉ. जसपाल कौर ने आलेख प्रस्तुत किए। समापन व्याख्यान डॉ. रवींद्र कुमार ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत भाटिया ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

तमिलनाडु आदिवासी वाचिक साहित्य

23-24 सितंबर 2016, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा पांडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर' (पी आई एल सी) के सहयोग से दो-दिवसीय 'तमिलनाडु आदिवासी वाचिक साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 23-24 सितंबर 2016 को किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने आरंभिक वक्तव्य दिया। पांडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर के निदेशक डॉ. भक्तवत्सल भारती ने विचारोत्तेजक बीज-वक्तव्य दिया। अकादेमी के प्रभारी श्री. ए.एस. इलंगोवन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री बी. नाज़िमदीन ने की। सुश्री जी. मुथुलक्ष्मी, डॉ. टी. विजयलक्ष्मी एवं श्री जन भारती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री सुंदर मुरुगन ने की। इस सत्र में तीन विद्वानों डॉ. ओ. मुथैया, प्रो. के. श्रीनिवास वर्मा एवं श्री दुरई मुरुगन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। शाम को विभिन्न आदिवासी संस्कृति को दर्शाते हुए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए. धनंजयन ने की। इस सत्र में श्री मनिक्को पनीरसेलवम ने 'मलइक्कुखर आदिवासी' तथा श्री का. इला. महेन्द्रन ने 'कोट्ठार आदिवासी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री जी. स्टेफेन ने की तथा 'कानिक्करार आदिवासी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री धर्मराज ने 'कानिक्कररगेलिन सातुप्पदलगल' श्री जय कृष्णन ने 'मुलुक्कुरुम्बर आदिवासी' एवं सुश्री दीपारानी ने 'थोंडइमंडल इरुलर आदिवासी' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. कामरासु ने किया। इस सत्र में श्री गोविंद राज ने जवाडी पहाड़ों में रहने वाले 'मलयाली आदिवासी' पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री वसमल्ली ने 'तोडा आदिवासी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. कोथंदरमन ने अपने समापन वक्तव्य में द्रविड़ समुदाय की भाषाओं के बारे में बात की।

प्यारी चाँद मित्र द्विजन्मशतवार्षिकी

23-24 सितंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा प्यारी चाँद मित्र के द्विजन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष में क्षेत्रीय कार्यालय के सभागार में 23-24 सितंबर 2016 को संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्यारी चाँद के साहित्यिक जीवन तथा बाङ्ला उपन्यास में उनके योगदान के बारे में संक्षेप में बताया। प्रसिद्ध विद्वान श्री आलोक राय ने अपने उद्घाटन भाषण किया, जबकि प्रसिद्ध विद्वान श्री स्वप्न बसु ने बीज वक्तव्य दिया।

साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रथम सत्र में श्री शक्ति सदन एवं शुभेंदु दासमुंशी ने 'प्यारी चाँद के शिक्षा' पर विचार विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए जबकि आभ्र घोष ने सत्र की अध्यक्षता की।

दूसरे सत्र में श्री अमित हाजरा और श्री पीयूषकांति पाणिग्रही ने प्यारी चाँद के कृषि एवं पुस्तकालय पर विचार व्यक्त किए जबकि श्री किशोर कृष्ण बंद्योपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री अमिताव खस्तगीर ने की तथा श्री देबाशीष राय और देवेंद्रनाथ ठाकुर ने प्यारी चाँद का ब्रह्म समाज से जुड़ाव के बारे में बात की।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री चिन्मय गुहा ने की तथा सुमन मुखोपाध्याय और सुमन गुन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र में अमिय देव तथा स्वप्नमय चक्रवर्ती ने आलेख प्रस्तुत किए जबकि भारती राय ने अध्यक्षता की। समापन सत्र की अध्यक्षता देवेश राय ने की।

पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन

26-27 सितंबर 2016, कारगिल

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली ने जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के सहयोग से 26-27 सितंबर 2016 को कारगिल लद्दाख में द्विदिवसीय ''पूर्वोत्तर तथा उत्तरी लेखक सम्मिलन'' का आयोजन किया। द्विदिवसीय सम्मिलन का उद्घाटन सत्र सैय्यद मेहदी मेमोरियल सभागार, कारगिल में साहित्य अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, साहित्य अकादेमी की कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दाह,

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं प्रख्यात उर्दू शायर श्री शीन काफ़ निज़ाम तथा जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति तथा भाषा अकादमी के सचिव श्री अज़ीज़ हाजिनी की उपस्थिति में आरंभ हुआ। कार्यक्रम के संयोजक तथा ज़िला सांस्कृतिक अधिकारी कारगिल श्री मोहम्मद अली टाक ने आरंभिक व्याख्यान दिया तथा डॉ. के. श्रीनिवासराव को स्वागत व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दाह ने आरंभिक व्याख्यान दिया तथा डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री शीनकाफ़ निज़ाम ने भी अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर समस्त उपस्थित प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति में पुतर्गाली लेखक काचो अस्फनदयार ख़ान द्वारा लिखित पुस्तक 'कश्मीरी कहावतुंकी डिक्शनेरी' का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन सत्र के अंत में डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। द्वितीय सत्र कहानी-पाठ का था तथा इस सत्र की अध्यक्षता डोगरी लेखक श्री ललित मगोत्रा ने की। सर्वश्री रहमान अब्बास, श्याम दरिहरे तथा सुदर्शन वशिष्ठ ने इस सत्र में क्रमशः अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। सत्रांत में सत्राध्यक्ष श्री ललित मगोत्रा ने लेखकों तथा श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया। तृतीय सत्र कवि सम्मिलन थिा। श्री आलमदर हुसैन शाह ने आरंभिक व्याख्यान दिया। राजस्थानी लेखक अर्जुन देव चारण ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रतिभागी कवि थे—निलिम कुमार, देवकांत रामचिआरी, रणधीर रायपुरिया, माधव कौशिक, अज़ीज़ हाजिनी, आनपोकोनचोक फानडी, कीरत सिंह इंक़लाबी तथा सूर्य काली। दूसरे दिन लेखक सम्मिलन का आयोजन टूरिस्ट फैसिलिटेशन सेंटर, बयामथांग कारगिल में किया गया। प्रथम सत्र कहानी-पाठ का था। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा श्री मोहम्मद अली टाक ने स्वागत व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात राजस्थानी लेखक श्री मालचंद तिवारी ने की। श्री इनायत गुल, श्री माधव कौशिक तथा प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा ने इस सत्र में अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय और तृतीय सत्र कवि सम्मिलन का था। दोनों सत्रों की अध्यक्षता काचो अस्फनदयार ख़ान ने की। द्वितीय सत्र में 6 लेखकों/कवियों—श्री सादिक़ अली सादिक, बोडो लेखक श्री बिजित गोयारी, डोगरी लेखक श्री निर्मल विनोद, अंग्रेज़ी लेखक सुश्री अखिया ज़हूर तथा शीना/दर्दी लेखक मोहम्मद शफ़ी सागर ने भाग लिया। तृतीय सत्र कवि सम्मिलन था तथा इसमें 7 लेखकों/कवियों—सर्वश्री निदा नवाज़, एन. विद्यासागर सिंह, डी. रामकृष्ण, आदित्य कुमार मांडी, यूनुस, ललित मगोत्रा तथा शीन काफ़ निज़ाम ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव तथा जिनला संस्कृति अधिकारी कारगिल श्री मोहम्मद अली टाक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

बाएँ से दाएँ : डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. मो. ज़मां आज़ुर्दा, श्री शीन काफ़ निज़ाम एवं डॉ. अज़ीज़ हाजिनी

संताली लोक और वाचिक साहित्य पर संगोष्ठी

28-29 सितंबर 2016, शांतिनिकेतन

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली तथा पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में संताली लोक एवं वाचिक साहित्य विषय पर द्वि-द्विवसीय संगोष्ठी का आयोजन 28-29 सितंबर, 2016 को श्रीजनी कॉम्पलेक्स शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल) में किया गया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी (प्रकाशन) डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण दिया, जबकि डॉ. धनेश्वर माझी ने बीज भाषण दिया। शांतिनिकेतन स्थित दूरदर्शन के निदेशक श्री वीरेंद्र टेटे विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. नाकु हांसदा ने की, जबकि श्री श्रीपति टुडु एवं श्रीमती दुली हेम्ब्रम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री रतन हेम्ब्रम ने की। इस सत्र में श्री मनसाराम मुर्मू, श्री तपन सोरेन, श्री रामू हेम्ब्रम तथा श्री सनत हांसदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे दिन दो अन्य सत्रों का आयोजन किया गया, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः प्रो. दमयंती बेशरा तथा श्री शोभानाथ बेशरा ने की। श्री जोगेंद्रनाथ मुर्मु, श्री कालिचरण हेम्ब्रम, श्री फटिक मुर्मु, श्री शंभूनाथ सोरेन, तथा श्री राजीव मुर्मु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के अंत में श्री मदन मोहन सोरेन ने संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए।

'महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में भक्ति आंदोलन' विषयक संगोष्ठी

3-4 अक्तूबर 2016, सोलापुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई तथा हीराचंद नेमचंद कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स के संयुक्त तत्त्वावधान में 'महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा कर्नाटक में भक्ति आंदोलन' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 3-4 अक्तूबर 2016 को कॉलेज परिसर, सोलापुर में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. भालचंद्र नेमाड़े ने की। श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र का विषय था 'महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का मूल्यांकन' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. कृष्ण इंगोले ने की। डॉ. इस सत्र में डॉ. अशोक बाबर तथा डॉ. विद्यासागर पडगाँवकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था 'कन्नड तथा आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में वाचनसाहित्य' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. इरेश स्वामी ने की। इस सत्र में श्री विट्ठलराव गायकवाड तथा श्री

बाएँ से दाएँ : संतोष कोटि, मो. आज़म, भालचंद्र नेमाड़े, के. श्रीनिवासराव, कृष्णा किंबहुने

बी.बी. पुजारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र का विषय था 'तेलुगु भक्ति संप्रदाय तथा बहुजन परंपरा' और सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मीनारायण बोल्ली ने की। श्री व्यंकटेश देवनपल्ली तथा डॉ. कंचन जटकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र का विषय था 'कर्नाटक में भक्ति आंदोलन तथा पददलितों की सहभागिता' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक बाबर ने की। इस सत्र में डॉ. शोभा नायक तथा डॉ. आनंद झुंझखाड ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र का विषय था 'थंजावुर में कीर्तन परंपरा तथा मराठी में संत-साहित्य' और सत्र की अध्यक्षता श्री राजशेखर शिंदे ने की। इस सत्र में श्री विवेकानंद गोपाल तथा श्री बी. रामचंद्र ने अपने आलेख प्रस्तत किए। छठे सत्र का विषय था 'मराठी में संत कविता तथा आधुनिक मराठी कविता : सह-संबंध' और सत्र की अध्यक्षता डॉ. शोभा नायक ने की। इस सत्र में डॉ. सतीश बाड़वे तथा डॉ. रणधीर शिंदे ने क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. जी.एम. पवार तथा श्री निशिकांत ठाकर ने समापन वक्तव्य दिया।

'आंध्र पत्रिका का साहित्यिक योगदान' पर परिसंवाद

6 नवंबर 2016, विजयवाड़ा

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु तथा कृष्ण युनिवर्सिटी एवं कृष्णा ज़िला लेखक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'आंध्र पत्रिका का साहित्यिक योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 6 नवंबर 2016 को विजयवाड़ा में किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. पापिनेनी शिवशंकर ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आंध्र प्रदेश राज्य विधानसभा के माननीय डिप्टी स्पीकर श्री मंडली बुद्धा प्रसाद तथा कृष्णा युनिवर्सिटी के कुलपति श्री एस. राव ने भी संक्षिप्त भाषण दिया। कृष्णा लेखक संघ के सामान्य सचिव डॉ. जी.वी. पूर्णचंद ने बीज वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र अध्यक्षता कृष्णा ज़िला लेखक संघ के अध्यक्ष श्री गुट्टीकोंडा सुब्बा राव ने की। इस सत्र में श्री कादियाल राम मोहन राय तथा श्री रपक एकमबारचार्यालु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कृष्णा युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री डी. सूर्य चंद्र राव ने की। इस सत्र में श्री पन्नालाल सुब्रह्मण्य भट्ट तथा पद्मश्री श्री एस.वी. रामा राव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'आंध्र पत्रिका' के पूर्व संपादक श्री वीरजी तथा श्री बुद्ध प्रसाद ने समापन वक्तव्य दिया।

'नेपाली साहित्य में युवा लेखन' पर परिसंवाद

6 नवंबर 2016, गांतोक

साहित्य अकादेमी तथा नेपाली साहित्य परिषद, गांतोक, सिक्किम के सहयोग से 'नेपाली साहित्य में युवा लेखन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन 6 नवंबर 2016 को गांतोक, सिक्किम में किया गया। सुप्रसिद्ध नेपाली लेखक श्री सानु लामा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र

कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दिया तथा अकादेमी द्वारा देश के युवा लेखकों के लिए संचालित किए जा रहे कुछ कार्यक्रमों का भी उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए कहा कि वे नेपाल तथा भारत के युवा लेखन में विद्यमान वर्तमान प्रवृत्तियों से संतुष्ट हैं, साथ ही यह भी कहा कि इन युवा लेखकों को उन संभावनाओं से लाभ उठाने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए, जो उन्हें आज प्रस्तुत की जा रही हैं। सत्र की अध्यक्षता श्री रुद्र पोंडयाल ने की तथा उन्होंने कहा कि युवाओं को और अधिक साहित्य पढ़ने तथा लिखने के लिए प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. प्रतापचंद्र प्रधान ने की तथा डॉ. राजकुमार छेत्री, श्री प्रवीण 'जुमैली' एवं श्री सपन प्रधान वक्ता के रूप में उपस्थित हुए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. अर्जुन प्रधान ने की तथा डॉ. गीता छेत्री एवं श्री ज्ञानबहादुर छेत्री वक्ता के रूप में उपस्थित हुए।

बलवंत गार्गी पर संगोष्ठी

7-8 नवंबर 2016, पटियाला

साहित्य अकादेमी तथा पंजाबी विभाग, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला के सहयोग से अनुभवी पंजाबी नाटककार बलवंत गार्गी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 7-8 नवंबर 2016 को पंजाबी युनिवर्सिटी के सेमिनार हॉल में किया गया। साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी मनजीत कौर भाटिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। पंजाबी युनिवर्सिटी के पंजाबी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जसविंदर सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बलवंत गार्गी के नाटकों तथा आधुनिक समय में उनकी प्रासंगिकता पर विस्तार से बात की। अपने बीज वक्तव्य में डॉ. आतमजीत सिंह ने बलवंत गार्गी के जीवन एवं कृतित्व तथा पंजाबी एवं भारतीय नाटक में उनके द्वारा दिए गए योगदान पर विस्तार से बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला के कुलपति डॉ. जसपाल सिंह ने की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. सतीश कुमार वर्मा ने की तथा डॉ. सुनीता धीर, गुपाल सिंह संधू, राजिंदर कुमार लहरी, उमा सेठी एवं अमरीक गिल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता तेजवंत सिंह गिल ने की तथा सुखदेव सिंह सिरसा, परमजीत सिंह ढींगरा, पाली भूपिंदर, योगराम एवं तसकीन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. मनजीत पाल कौर ने की तथा बलदेव सिंह धालीवाल, गुरमुख सिंह, यादविंदर सिंह, गुरप्रीत कौर एवं रुपिंदर सिंह ढिल्लों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'राष्ट्रीय भावात्मक एकता' पर संगोष्ठी

17-18 नवंबर 2016, नई दिल्ली

''सभी भारतीय भाषाओं का प्रारंभिक लेखन रामायण और महाभारत से किसी न किसी प्रकार प्रेरित है अतः समग्र भारतीय साहित्य का मुख्य स्वर भावात्मक एकता का ही है। इतिहास के विभिन्न चरणों में भी जीवन और साहित्य का मूल स्वर यही रहा है। लेकिन कुछ अन्य तात्कालिक प्रसंग भी उसमें जुड़े हैं।'' उपर्युक्त विचार साहित्य

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, डॉ. सीताकांत महापात्र एवं डॉ. चंद्रशेखर कंबार

अकादेमी द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय भावात्मक एकता' संगोष्ठी में अपना उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रसिद्ध ओड़िया कवि एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य सीताकांत महापात्र ने व्यक्त किए।

बीज वक्तव्य देते हुए श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कहा कि संस्कृति और भाषा की विविधता में एकता रखने वाले भारत का आधुनिक राष्ट्र के रूप में निर्माण पूरे विश्व के लिए एक बड़ी सीख थी। भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता की भावना शुरू से ही अंतर्निहित थी।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि भाव का निर्माण देश के भूगोल, इतिहास, समाज और परंपराओं के सम्मिश्रण से होता है। भारत का बहुलतावाद और वैविध्य परंपरा की एकता ही भावात्मक एकता की बुनियाद है। उन्होंने संस्कृत साहित्य का उदाहरण देते हुए कहा कि हमारे साहित्य में आत्मवादी चेतना, वैश्विक चेतना और नैतिक संवेदना के सूत्र हमेशा से ही निरूपित होते रहे हैं। इसलिए हमारी भावात्मक एकता राष्ट्र से उठकर वैश्विक स्वरूप की रही है।

इससे पहले अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी की विस्तृत परिकल्पना प्रस्तुत की। समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

संगोष्ठी के पहले सत्र का विषय 'भारतीय साहित्य की मूल भावना' था, जिसकी अध्यक्षता भालचंद्र नेमाड़े ने की और भगवान सिंह तथा लक्ष्मीनंदन बोरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। भगवान सिंह ने भारत के प्राचीन इतिहास, संस्कृति, जीवन व्यवहार की चर्चा करते हुए वर्तमान समय में भारतीय साहित्य और चिंतन के परिवर्तनों पर भी प्रकाश डाला। लक्ष्मी नंदन बोरा ने कहा कि भारत का उत्तर पूर्व का जीवन विभिन्न भाषाओं और बोलियों की विविधता के बावजूद सामंजस्य प्रस्तुत करने के लिए एक पर्याप्त उदाहरण है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में भालचंद्र नेमाड़े ने भारतीय परंपरा और संस्कृति की महत्ता पर प्रकाश डाला और कहा कि अपने इतिहास और परंपरा की गहन जानकारी के बिना अच्छा साहित्य नहीं लिखा जा सकता।

'भारतीय सांस्कृतिक वैविध्य और एकत्व' विषयक दूसरे सत्र की अध्यक्षता सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की और रोवेना राबिन्सन तथा बजरंग बिहारी तिवारी ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन का पहला सत्र 'आदर्श जीवनमूल्य एवं भारतीय साहित्य' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कन्नड साहित्यकार एस.एल. भैरप्पा ने की और के. इनोक (तेलुगु) तथा सा. कंदास्वामी (तमिऴ) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'भारतीय साहित्य में भारतीयता' विषय पर केंद्रित अगले सत्र में सितांशु यशश्चंद्र (गुजराती), बद्रीनारायण, (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी साहित्यकार नरेंद्र कोहली ने की।

समापन सत्र की अध्यक्षता कपिल कपूर ने की। नरेंद्र जाधव ने समापन वक्तव्य दिया।

'डोगरी लोक साहित्य : समकालीन समीकरण' पर संगोष्ठी

18-19 नवंबर 2016, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी विभाग, जम्मू यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'डोगरी लोक साहित्य : समकालीन समीकरण' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 18-19 नवंबर 2016 को जम्मू में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन यूनिवर्सिटी के अकादमिक कार्यों के अधिष्ठाता प्रो. देशबंधु ने किया। प्रो. देशबंधु ने ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी के आयोजन की सराहना की जो डोगरी भाषा के भोपल प्रकृति के अध्ययन के वातायन खोलती है।

इस अवसर पर अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने साहित्य अकादेमी का 2016 का बाल साहित्य पुरस्कार डॉ. ओम गोस्वामी को अर्पित किया। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया और संगोष्ठी के उद्देश्य एवं लक्ष्य पर प्रकाश डाला। प्रसिद्ध हिंदी विद्वान प्रो. नरेंद्र मोहन ने बीज वक्तव्य दिया। श्री मोहन ने वर्तमान समाज की जीवन शैली और समाज में लोक साहित्य की प्रासंगिकता के बारे में विस्तार से बात की। इससे पहले प्रो. ललित मंगोत्रा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि डोगरी में वाचक साहित्य की पुरानी परंपरा है और उसमें लोक कथा, लोकगीत, पहेलियों, मुहावरों और शैली के रूप में एक समृद्ध ख़ज़ाना मौजूद है, जो डोगरा जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। डोगरी विभाग के विभाध्यक्ष प्रो. परमेश्वरी शर्मा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की एवं धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र के बाद दो अकादमिक सत्रों का आयोजन किया गया जिनकी अध्यक्षता क्रमशः प्रो. चंपा शर्मा तथा प्रो. वीना गुप्ता ने की। प्रथम सत्र में डॉ. सुषमा शर्मा एवं डॉ. ओम गोस्वामी ने क्रमशः 'डोगरी लोकगीतों में नारी विमर्श' तथा 'डोगरी लोककथा में नारी विमर्श' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री मोहन सिंह ने चर्चक के रूप में भाग लिया। प्रो. चंपा शर्मा ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में पढ़े गए आलेखों पर टिप्पणी की।

बाएँ से दाएँ : श्री प्रीतम कटोच, श्री ब्रह्मदत्त, श्रीमती सुनीता भड़वाल, डॉ. रजनी बाला एवं डॉ. शशि पठानिया

दूसरे सत्र में प्रो. अशोक खजूरिया, प्रो. शिवदेव सिंह मन्हास एवं डॉ. जोगिंदर सिंह ने क्रमशः 'डोगरी लोककथा में नारी विमर्श', 'डोगरी मुहावरे व कहावतों में नारी विमर्श' तथा 'डोगरी लोक साहित्य में सती परिदृश्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तथा डॉ. जितेंद्र उधमपुरी ने चर्चा में भाग लिया।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की। डॉ. पदमदेव सिंह, श्री जगदीप दूबे तथा डॉ. चंचल भसीन ने क्रमशः 'डोगरी लोकगीतों में जातिगत समीकरण', 'डोगरी लोककथाओं में

जातिगत समीकरण' एवं 'डोगरी लोकगाथा में जातिगत समीकरण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री प्रकाश प्रेमी संवादी के रूप में सम्मिलित हुए। प्रो. केसर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पढ़े गए आलेखों की सराहना की तथा उनके लेखकों को बधाई दी।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. शशि पठानिया ने की। इस सत्र में सुश्री सुनीता भडवाल ने 'डोगरी लोक साहित्य के धार्मिक चरित/पौराणिक चरित', श्री ब्रह्मदत्त ने 'डोगरी लोक साहित्य में वीर चरित' तथा डॉ. रजनी बाला ने 'सूचना प्रौद्योगिकी में लोक साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री प्रीतम कटोच ने संवादी के रूप में भाग लिया। प्रो. शशि पठानिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इस संगोष्ठी के आयोजन में विभाग की भूमिका की सराहना करते हुए सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

संगोष्ठी का समापन वक्तव्य जम्मू यूनिवर्सिटी के डीन रिसर्च स्टडीज़ प्रो. जिगर मोहम्मद ने दिया जिसमें उन्होंने लोक साहित्य और इतिहास के बीच संबंधों के महत्त्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि जम्मू क्षेत्र का लोक साहित्य बहुत समृद्ध है और प्रमुखता से मानवीय और धर्मनिरपेक्ष है। प्रो. ललित मगोत्रा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए ज़ोर देकर कहा कि बुनियादी सामाजिक और मानवीय मूल्यों के आलोक में संग्रहीत और संरक्षित किए गए लोक साहित्य के अध्ययन के लिए यह उचित समय है।

आदिवासी साहित्य और संस्कृति

19-20 नवंबर 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा 'आदिवासी साहित्य और संस्कृति' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन सुरेंद्र गवास्कर हॉल, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय में 19-20 नवंबर 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य तथा आदिवासी आंदोलन के नेता श्री विनायक तुमराम ने आरंभिक वक्तव्य दिया।

वरिष्ठ लेखक और शोधकर्ता श्री मोतीराज राठौर ने उद्घाटन भाषण दिया। प्रसिद्ध आदिवासी कवि वाहरू सोनवने ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक भालचंद्र नेमाड़े ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि राष्ट्रीय अखंडता विदेशी तनाव के कारण ख़त्म हो गई है। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'आदिवासी साहित्य : प्रेरणा-स्वरूप और विस्तार'। सत्र की अध्यक्षता श्री विनायक तुमराम ने किया। सत्र में काशीनाथ बरहते, सुनील कुमरे और गोविंद गायकी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र का विषय था—'महाराष्ट्र में आदिवासी बोलियाँ' तथा सत्र की अध्यक्षता किरण कुमार कवठेकर ने की। श्री वैजनाथ अनमुलवाद, श्री वीर राठौर और सुश्री पुष्पा भगवती ने अपने आलेखों का पाठ किया।

तीसरे सत्र के दो विषय थे—'आदिवासी मौखिक परंपराएँ' और 'आदिवासी साहित्य - अस्तित्व और विद्रोह'। सत्र की अध्यक्षता श्री वाहरू सोनवने ने की। श्री विनोद कुमार और सुश्री उषा किरण अद्रम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र में आदिवासी लोक गीत और नृत्य की अध्यक्षता श्री मारुति शिंदे ने की। श्री शिरीष जाधव और धननजी गुरव ने आदिवासी परिधानों और नृत्य में प्रयोग होने वाले डंडों के बारे में प्रकाश डाला।

पाँचवाँ सत्र का विषय था 'आदिवासी कला' तथा इस सत्र की अध्यक्षता बी.एम. पार्सवले ने की। मुकुंद कुले और चंदोजी गायकवाड़ ने इस विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का छठा और अंतिम सत्र 'वैश्वीकरण और आदिवासी संस्कृति' विषय पर था जिसकी अध्यक्षता हेमंत खड़के ने की। श्री राजेंद्र गोनारकर और श्री पीतांबर कोडपे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

'तमिऴ साहित्य की आलोचना, सिद्धांत और दृष्टिकोण : प्राचीन और आधुनिक पर संगोष्ठी

23-24 नवंबर 2016, तंजावुर

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा तमिऴ यूनिवर्सिटी तजांवुर के साहित्य विभाग के सहयोग से 'तमिऴ साहित्य की आलोचना, सिद्धांत और दृष्टिकोण : प्राचीन और आधुनिक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन यूनिवर्सिटी के सिनेट हॉल में 23-24 नवंबर 2016 को किया गया। कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलंगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कामारासु ने आरंभिक वक्तव्य दिया। तमिऴ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. जी. भास्करन ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। तमिऴ यूनिवर्सिटी के कुल सचिव श्री एस. मुथुकुमार ने गर्मजोशी से प्रतिभागियों को बधाई दी। प्रसिद्ध तमिऴ लेखक श्री एस. रामकृष्णन ने बीज वक्तव्य दिया। तमिऴ यूनिवर्सिटी के साहित्य विभाग की प्रो. के. तिलकावती के धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. वी. षण्मुगम ने की। उन्होंने 'साहित्यिक आलोचना का भाषायी दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. इंद्रा मैनुवल ने 'आगम-पुरम सिद्धांत : उद्भव और विकास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. वाय. मनिकनंदन ने 'आलोचनात्मक सिद्धांत' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. भक्तवत्स्ला भारती ने की और 'मानवविज्ञान साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. वी. आनंदकुमार ने 'साहित्यिक आलोचना के उत्तर-औपनिवेशिक तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. आर. मुरली ने 'साहित्यिक आलोचना के दार्शनिक दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. थोताथरी ने की तथा 'मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. दुरई सीनीसामी ने 'साहित्यिक आलोचना का सामाजिक दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. आर. थियागराजन ने 'संस्कृत और तमिल-साहित्यिक सिद्धांत' और प्रो. आर. मनोहरण ने 'थिनाई सिद्धांत और तमिऴ व मलयाळम् में आधुनिक साहित्यिक आलोचना' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. पंजंगम ने की और उन्होंने तमिऴ की साहित्यिक आलोचना के इतिहास के बारे में बात की। डॉ. आर. संबंथ ने 'साहित्य और साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत' पर अपना आलेख प्रस्तुत

किया। श्री एच.जी. रजूल ने 'उत्तर आधुनिक आलोचनात्मक सिद्धांत और तमिऴ साहित्यिक आलोचना' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. स्टालिन राजगम ने 'आधुनिक तमिऴ साहित्यिक आलोचना और दलित दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. अरंगा मल्लिका ने 'आधुनिक साहित्यिक आलोचना और नारीवादी दृष्टिकोण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. ए. दक्षिणामूर्ति ने की और समापन वक्तव्य प्रो. पी. मरुथनक्यम ने दिया। तमिल यूनिवर्सिटी के तमिऴ विभाग के प्रो. रविचंद्रन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आदिवासी लेखक सम्मिलन

26-27 नवंबर 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी तथा ओड़िया स्नातकोत्तर विभाग, उत्कल युनिवर्सिटी, भुवनेश्वर के सहयोग से आदिवासी लेखक सम्मिलन का आयोजन 26-27 नवंबर 2016 को पी.जी. काउंसिल हॉल, उत्कल युनिवर्सिटी, वाणीविहार, भुवनेश्वर में किया गया। उद्घाटन सत्र का आयोजन 26 नवंबर 2016 को किया गया तथा साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने भाषण दिया। उत्कल युनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. अशोक कुमार दास ने उद्घाटन वक्तव्य देते हुए कहा कि जनजातीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने हेतु किए जा रहे प्रयासों की वे सराहना करते हैं तथा उन्होंने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है, जिसमें विभिन्न जनजातीय भाषाओं में अनुवाद किया जाना सम्मिलित है। साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने आरंभिक वक्तव्य दिया, जिसके अंतर्गत उन्होंने ओड़िशा के जनजातीय / आदिवासी समुदायों की विविधता तथा उनकी साहित्यिक उपलब्धियों को रेखांकित किया। लेखक तथा अकादेमी भाषा सम्मान विजेता विनोद कुमार नायक ने बीज वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक गौरहरि दास विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पी.जी. काउंसिल के अध्यक्ष रंजन कुमार बल ने की तथा उत्कल युनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के संयोजक अनादि चरण गैन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। आयोजन के चार सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः श्री कृष्ण चंद्र नायक, राजकिशोर नायक, राजेंद्र पाधी तथा आनपा मरांडी ने की। इन सभी सत्रों के अंतर्गत, चौदह लेखकों ने दस भाषाओं के साथ ही हिंदी, अंग्रेज़ी एवं ओड़िया अनुवाद में अपनी कहानियों तथा कविताओं का पाठ किया। लक्ष्मण मंदरा (वोंडा), धानु मुदुली (गाडव), सुग्रीव जुआंग/जुआंग), विधुलता हुईका (वांधा) सविता मुदुली (भोतरा), शरत चंद्र नायक (भाटुडी) तथा पूर्णचंद्र जुआंग (जुआंग) ने अपनी कहानियों, जबकि सविता मंदरा (बोंडा), रवींद्रनाथ नाइक (भाटुडी), जैमिनीकांत तिरिआ (हो), खग केंदु (भुमिया), गागारिन सबर (सौरा), पद्म चालन (गाडब), पूर्ण पेंथिया (पेंथिया) तथा आनपा मरांडी (संताली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

'अख़्तरुल ईमान : पुनर्पाठ' जन्मशतवार्षिकी

26-27 नवंबर 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा अकादेमी के सभागार में 'अख़्तरुल ईमान : पुनर्पाठ' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 26-27 नवंबर 2016 को किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष प्रो. गोपीचंद नारंग ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. नारंग ने कहा कि अख़्तरुल ईमान ने अस्तित्व की स्थिति और वक़्त की अहमियत को समझा, उनकी लगभग हर नज़्म में वक़्त की कल्पना मौजूद है। उन्होंने आगे कहा कि किसी अच्छी शायरी को अपने पूरे वजूद के साथ समझे बिना आनंदित नहीं हुआ जा सकता। विशेष व्याख्यान देते हुए प्रो. शाफ़े क़िदवई ने कहा कि अख़्तरुल ईमान की शायरी मानवीय जीवन के विरोधाभास का किसी केंद्रीय संदर्भ को नष्ट किए बिना प्रस्तुत करती है। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. अनीस अशफ़ाक़ ने कहा कि अख़्तरुल ईमान ने अपनी शायरी के सर्वज्ञ होने की बात बार-बार दुहराई है। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. मौला बख़्श ने अकादेमी की ओर से सभी मेहमानों का शुक्रिया अदा किया।

बाएँ से दाएँ : डॉ. मौला बख़्श, डॉ. शाफ़े किदवई, डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. गोपीचंद नारंग, डॉ. अनीस अश्फ़ाक़

संगोष्ठी के पहले सत्र की अध्यक्षता नेशनल काउंसल फ़ॉर प्रमोशन ऑफ़ उर्दू लैंग्वेज के निदेशक प्रो. इर्तिज़ा करीम ने की। इस सत्र में तीन आलेख पढ़े गए। डॉ. शाइस्ता यूसुफ़ ने 'अख़्तरुल ईमान का फ़न और आम क़ारी', डॉ. हुमायूँ अशरफ़ ने 'अख़्तरुल ईमान : इस आबाद ख़राबे की रौशनी में', और डॉ. रज़ा हैदर ने 'अख़्तरुल ईमान की अलामती नज़्में' शीर्षक से अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन डॉ. मौलबख़्श ने किया। सत्र के अंत में अकादेमी द्वारा निर्मित अख़्तरुल ईमान पर वृत्तचित्र भी प्रदर्शित की गई। संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अली अहमद फ़ातमी ने कहा कि बिना कोई लेबल लगाए आज के संदर्भ में अख़्तरुल ईमान को समझने की ज़रूरत है। प्रो. मुहम्मद ज़ाकिर ने अपने आलेख में कहा कि अख़्तरुल ईमान ने आज़ाद नज़्म से उसकी प्रासंगिकता और वैचारिक महत्त्व से अलग नहीं किया। इस सत्र में इक़बाल मसूद ने 'अख़्तरुल ईमान का तसव्वुरे इंसान', डॉ. अजय मालवी ने 'अख़्तरुल ईमान की मतरुका नज़्में' और डॉ. वसीम बेगम ने 'अख़्तरुल ईमान की नज़्म एक लड़का के हवाले से' शीर्षक से अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन के दूसरे सत्र की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. इब्ने कँवल ने की। इस सत्र में प्रो. मुहम्मद ज़ाकिर, प्रो. शहज़ाद अंजुम और प्रो. कौसर मज़हरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता जनाब निज़ाम सिद्दीक़ी ने की। इस सत्र में प्रो. मौला बख़्श ने 'उर्दू की तवील नज़्मों में अख़्तरुल ईमान की इन्फ़रादियत', प्रो. साहब आली ने 'अख़्तरुल ईमान की इश्क़िया शायरी' और सैफ़ी सरौंजी ने 'अख़्तरुल ईमान का फ़न' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने समस्त सहभागियों एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

कोंकणी में लोक साहित्य

17-18 दिसंबर 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गोवा सरकार के डायरेक्टरेट ऑफ़ आर्ट एवं कल्चर के सहयोग से कोंकणी में लोक साहित्य विषयक संगोष्ठी का आयोजन 17-18 दिसंबर 2016 को संस्कृति भवन, गोवा के लेक्चर हॉल में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा आर्ट एंड कल्चर के डायरेक्टर श्री प्रसाद लोलेकर ने अपने आरंभिक वक्तव्य में इस आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री विनायक खांडेकर ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्णकर ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्या श्रीमती हेमा नायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'कोंकणी में लोक साहित्य : क्षेत्रीय विविधता' की अध्यक्षता श्री पांडुरंग फलदेसाय ने की। श्री पायनूर रमेश पै, श्री लुईस रोड्रिग्स, श्री पॉल मोरेस, सुश्री जयंती नाइक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री एडवर्ड डीलिमा ने की। श्री संजय तलवाडकर ने अपने आलेख में कोंकणी लोक कथाओं से संबंधित मुहावरों, वाक्यांशों और असंख्य दंतकथाओं की चर्चा की। सुश्री सुनीता कानेकर और श्री पूरानंदचारी ने कोंकणी लोकगीत और कोंकणी नाटकों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री महाबलेश्वर सैल ने की। डॉ. प्रियदर्शिनी ताडकोदकर ने 'कोंकणी लोक साहित्य में पुरुषों का चित्रण' विषय पर तथा श्री सतीश दलवी ने 'कोंकणी लोक साहित्य में भगवान और नियति की अवधारणा' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री उदय भेंब्रे ने की। श्री नारायण देसाई ने '16वीं शताब्दी में कोंकणी में महाभारत' तथा श्री एस.एम. बोर्जेस ने '16वीं शताब्दी में कोंकणी में रामायण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सत्र के तुरंत बाद लोक-विविध स्वर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें श्री जॉन फर्नांडीस एवं उनके सहयोगी कलाकारों द्वारा कोंकणी क्रिश्चियन कुनाबी लोगों का विशिष्ट लोकनादी (मांद), लोकनृत्य और संगीत प्रस्तुत किया गया।

वर्णरत्नाकर का महत्त्व एवं उपादेयता

17-18 दिसंबर 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 'वर्णरत्नाकर का महत्त्व एवं उपादेयता' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 17-18 दिसंबर 2016 को अकादेमी सभागार, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी विद्वान प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद गुरुमैता ने की। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने 'वर्णरत्नाकर' में उल्लिखित मिथिला के तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक वैशिष्ट्य पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा कहा कि कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर की यह कृति वस्तुतः मिथिला के मध्ययुगीन समाज, सामाजिक और शासन व्यवस्था का आईना है। संगोष्ठी का बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रतिष्ठित मैथिली नाट्यकार श्री महेंद्र मलंगिया ने ज़ोर देकर कहा कि 'वर्णरत्नाकर' की मौलिकता को क़ायम रखते हुए इसकी व्याख्या की जानी चाहिए।

इस अवसर पर विषय प्रवर्तन करते हुए अकादेमी में मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने कहा कि यह मैथिली साहित्य के लिए निश्चय ही गौरव का विषय है कि कविशेखर ज्योतिरीश्वर रचित 'वर्णरत्नाकर' समस्त भारतीय भाषाओं के बीच आदि गद्य-ग्रंथ के रूप में समादृत है। आरंभ में क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल चंद्र वर्मन ने औपचारिक स्वागत भाषण किया। सत्रांत में मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य श्री कामदेव झा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र वरिष्ठ मैथिली लेखक एवं संपादक श्री राजनंदन लाल दास की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री ताराकांत झा और डॉ. रामनरेश सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री श्याम दरिहरे ने की, जिसमें डॉ. नरेश मोहन झा, श्री अमलेंदु शेखर पाठक एवं डॉ. योगानंद झा ने आलेख पाठ किया।

तृतीय सत्र श्री सुकांत सोम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्रीमती इंदिरा झा, श्री अशोक झा और श्री रमानंद झा 'रमण' ने अपने आलेख पढ़े।

संगोष्ठी का चतुर्थ एवं अंतिम सत्र श्री शिवचंद्र झा की अध्यक्षता में आयोजित हुआ, जिसमें श्री पंचानन मिश्र, डॉ. अशोक अविचल, श्री रामलोचन ठाकुर और डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने अपने आलेखों का पाठ किया।

भारतीय भाषाओं एवं साहित्य में शेक्सपियर

18-19 जनवरी 2017, कोलकाता

अंग्रेज़ी के महान रचनाकार विलियम शेक्सपियर के 450 वें जन्मदिन और 400 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि देने के लिए साहित्य अकादेमी द्वारा एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 18-19 जनवरी 2017 को अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत करते हुए विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्य में शेक्सपियर की रचनाओं के रूपांतरण एवं पुनर्रचनात्मकता में योगदान और शोध करने वाले उन विद्वानों को आगे लाने में संगठन की भूमिका पर ज़ोर दिया। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर संयुक्ता दासगुप्ता ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बताया

कि शेक्सपियर से उनकी पहली मुलाक़ात उनकी कृति *द कॉमेडी ऑफ़ ऐरर्स* के माध्यम से हुई। उन्होंने आगे कहा कि बंगाल में आज भी शेक्सपियर के नाटकों का चित्रांकन एवं मंचन जारी है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री भानु भारती ने अमृतराय के हेमलेट (हिंदी अनुवाद) के मंचन के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि शेक्सपियर एक जीवित घटना है और ठंडे अकादमिक बहस का विषय नहीं है। हमें थियेटर कविता, और कला को औचित्य के लिए इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर शर्मिष्ठा पांजा ने अपने बीज वक्तव्य में हाल ही में बॉलीवुड के प्रोडक्शन 'हैदर' के संदर्भ में शेक्सपियर की रचनाओं के रूपांतरण की आंतरिक पहचान पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान प्रो. हरीश त्रिवेदी ने की। श्री त्रिवेदी ने अपने ओजपूर्ण भाषण का आरंभ 'एक एशियन शेक्सपियर' के विकास से करते हुए कहा कि किस प्रकार शेक्सपियर की सर्वव्यापकता ने उसे वैश्विक परिदृश्य के एक अंतरिक्ष में विलीन कर दिया है। अकादेमी की उपसचिव श्रीमती गीतांजलि चटर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. पूनम त्रिवेदी ने की। प्रो. राजीव वर्मा ने शेक्सपियर के 'ऑल इज़ वेल दैट एंड्स वेल' और 'ए फॉक स्टोरी' का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रो. सुकांत चौधरी ने बाङ्ला भाषा में सोनेट के विकास में शेक्सपियर का प्रभाव पर तथा प्रो. महेश चंपकलाल ने दो रूपांतर मैकबेथ (बी. वी. कारंत का 'बरमन वाना' और लोकेंद्र अरंबम का 'स्टेज ऑफ़ ब्लड') पर आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. मालाश्री लाल ने की। प्रो. मुनमुन मजुमदार ने भारत के उत्तर-पूर्व में मैकबेथ के तीन रूपांतरण में सामाजिक विविधता और चुनौतियों के बारे में उपस्थित लोगों को जानकारी दी। डॉ. आशा देवी के नारीवादी अध्ययन ने शेक्सपियर में महिलाओं के चरित्र निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बात की। प्रो. सुमन्यु सत्पथी ने शेक्सपियर के टेंपसेट का ओड़िया के रामशंकरदास बलवाला के अंतःविषय पाठ को प्रस्तुत किया।

तीसरे अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजीव वर्मा ने की। प्रो. जतिंद्र कुमार नायक ने 1960-1980 में ओड़िशा में शेक्सपियर की उपस्थिति के बारे में चर्चा की। प्रो. तेजवंत सिंह गिल ने थियेटर आलोचक, भारत में मंच प्रस्तुतियों की आलोचना को साझा किया। संगोष्ठी के दूसरे दिन चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुकांत चौधरी ने की। प्रो. पूनम त्रिवेदी ने भारतीय साहित्य में शेक्सपियर की त्रासदी पर टिप्पणी की। प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने शेक्सपियर के भारतेंदु व मोती बी.ए. द्वारा किए गए अनुवादों पर टिप्पणी की। प्रो. एम. नरेंद्र ने आधुनिक तेलुगु साहित्य पर शेक्सपियर के प्रभाव को रेखांकित किया।

पाँचवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. शर्मिष्ठा पांजा ने की। प्रो. अमिताभ राय ने प्रो. अशीर वसु के नाटक 'कोलकाता हेमलेट' (हेमलेट) की प्रस्तुति के बारे में बात की। प्रो. सुप्रिया चौधरी ने शेक्सपियर के 'द टेम्पसेट' और बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के 'कपाल कुंडल' के माध्यम से शेक्सपियर और बंगाल के साहित्यिक संबंधों को स्थापित किया। प्रो. मालाश्री लाल ने राजस्थान के एक दूरदराज़ गाँव में बार्ड यानी शेक्सपियर के प्रभाव की व्याख्या की।

अंतिम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने दर्शकों को उनके वास्तविक जीवन के नाटकों और राजनीति के सहयोग पर समीक्षात्मक टिप्पणी की। इस सत्र में प्रो. विक्रम चोपड़ा ने शेक्सपियर के साहित्य में भारतीय तत्त्वों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। प्रो. अमिताभ राय और महेश चंपक लाल के दो शानदार प्रस्तुतियों से संगोष्ठी का समापन हुआ।

भाषांतर अनुभव

27 जनवरी 2017, पोलाची

कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु तथा अरुतचेलवर डॉ. एन. महालिंगम अनुवाद संस्थान पोलाची के संयुक्त तत्त्वावधान में भाषांतर अनुभव कार्यक्रम का आयोजन 27 जनवरी 2017, को न्यू सेमिनार हॉल, डॉ. महालिंगम कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, पोलाची, कोयम्बटूर में किया गया। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने कार्यक्रम में आए प्रतिभागियों तथा अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. कृष्णास्वामी नाचिमुथु ने आरंभिक वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का उद्घाटन अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने किया। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने की। एन.आई.ए. एजुकेशनल इंस्टीट्यूशंस, पोलाची के सचिव श्री सी. रामास्वामी तथा प्रतिष्ठित तमिळ कवि श्री पुवियारासु विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। एम.सी.ई.टी. पोलाची के सहायक प्रोफ़ेसर ए. सेंथिल कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. गोपी ने की। इस सत्र में श्री चवरा के.एस. पिल्लै (मलयाळम् कवि), श्रीमती शक्ति ज्योति (तमिळ कवयित्री) तथा डॉ. मामिदी हरिकृष्ण (तेलुगु कवि) ने भाग लिया तथा अपनी संबंधित भाषाओं, साथ ही अन्य भाषाओं में अनूदित अपनी कविताओं का पाठ किया। कन्नड कवि बी.आर. लक्ष्मण राव कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके परंतु उनकी कविताओं का भी पाठ किया गया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने की। इस सत्र में श्री श्रीजीत पेरुमतया (मलयाळम् कवि), श्री के. आनंद कृष्ण (तमिळ कवि) तथा डॉ. पी. जयाप्रदा (तेलुगु कवि) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कन्नड कवयित्री श्रीमती रूपा हसन कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सकीं परंतु उनकी कविताओं का पाठ किया गया।

हरि दरयाणी 'दिलगीर' पर संगोष्ठी

28-29 जनवरी 2017, आदिपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंथोलॉजी के संयुक्त तत्त्वावधान में हरि दरयाणी 'दिलगीर' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 28 जनवरी 2017 को आदिपुर, गुजरात में हुआ। सिंधी लेखक श्री लक्ष्मी खिलाणी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन वक्तव्य के पश्चात् श्री मोहन गेहाणी द्वारा लिखित तथा साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हरि दरयाणी 'दिलगीर' पर आधारित विनिबंध का विमोचन किया गया। डॉ. विम्मी सदारंगाणी तथा श्री कमल निहलानी ने 'दिलगीर' की कुछ

कविताओं का पाठ किया। डॉ. प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य दिया, जबकि श्री प्रीतम वरयाणी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ सिंथोलॉजी के निदेशक श्री कमल निहलानी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की, जिसमें सुश्री सीमा गुरनाणी, श्री मोहन गेहाणी, श्री मोहन हिमथाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की। इस सत्र में डॉ. विनोद असुदाणी, श्री कमल निहलानी तथा डॉ. विम्मी सदारंगाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. विनोद असुदाणी ने की। श्री मुरली गोविंदाणी, सुश्री वीणा शृंगी, डॉ. राम दरियाणी तथा सुश्री सरिता शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. राम दरियाणी ने की। इस सत्र में श्री वासदेव मोही, श्री सी.टी. ज्ञानचंदाणी तथा सुश्री आशा रंगवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पाँचवें सत्र की अध्यक्षता सुश्री सरिता शर्मा ने की, जिसमें श्री लक्ष्मण दुबे, श्री खीमण मुलाणी तथा डॉ. कमला गोकलाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र के अंतर्गत श्री साहिब बिजाणी तथा सुश्री सीमा गुरनाणी ने 'दिलगीर' के साथ जुड़ी हुई खूबसूरत यादों को सबके साथ साझा किया तथा डॉ. प्रेम प्रकाश ने समापन वक्तव्य दिया।

डोगरी युवा लेखन पर परिसंवाद

5 मार्च 2017, जम्मू

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा डोगरी संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में 'डोगरी युवा लेखन' पर परिसंवाद का आयोजन 5 मार्च 2017 को जम्मू में किया गया। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित हिंदी कवि तथा जे.के.ए.ए.सी.एल. के पूर्व सचिव श्री रमेश मेहता ने की, जबकि डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने उद्घाटन वक्तव्य दिया एवं साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अपने वक्तव्य के अंतर्गत डॉ. देवेश ने डोगरी भाषा तथा साहित्य को प्रोत्साहित करने हेतु अकादेमी द्वारा की जा रही पहलक़दमियों की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रो. मगोत्रा ने परिसंवाद की महत्ता पर बात करते हुए कहा कि इस प्रकार के परिसंवाद साहित्य की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने हेतु संभावनाएँ प्रदान करते हैं। बीज वक्तव्य डोगरी संस्था के अध्यक्ष श्री छत्रपाल ने दिया। इस अवसर पर, श्री छत्रपाल को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2016 भी प्रदान किया गया, चूँकि वे 22 फ़रवरी 2017 को नई दिल्ली में आयोजित अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके थे। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष की ओर से प्रो. ललित मगोत्रा ने श्री छत्रपाल को पुरस्कार प्रदान किया, जबकि डॉ. देवेश ने प्रशस्ति-पत्र पढ़ा। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शशि पठानिया ने की तथा प्रसिद्ध डोगरी लेखकों श्री सुरजीत होश एवं प्रो. शिवदेव मन्हास ने क्रमशः डोगरी कविता तथा डोगरी कहानियाँ पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

स्थापना दिवस

10 मार्च 2017, नई दिल्ली

प्रतिष्ठित ओड़िया लेखक, कवि, विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के फ़ैलो डॉ. सीताकांत महापात्र द्वारा 10 मार्च 2017 को नई दिल्ली में वार्षिक स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथि सत्ता का स्वागत किया तथा दर्शकों से उनका परिचय कराया। डॉ. सीताकांत महापात्र ने ''जीवन के

डॉ. सीताकांत महापात्र

प्रति आभार : भारत की प्राचीन जनजातियों के काव्य में प्रेम एवं प्रार्थना'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान के आरंभ में उन्होंने पूर्वी भारत में ओड़िशा के आदिवासी गाँव में मुंडा जनजाति के अत्यंत महत्त्वपूर्ण समारोह के दौरान बिताई गई रात का वर्णन करते हुए कहा ''यह वैसा गाँव नहीं था, जो मैंने दिन में देखा था 'कुरूप, मलिन तथा साधारण। रात में यह गाँव चाँद की चाँदनी के जादू तथा लोगों के उत्साह से पूरी तरह से बदल गया था। वे नाच रहे थे, गा रहे थे। प्राचीन, कालातीत गीत...''। उन्होंने आगे कहा, ''इसे रोमानी विरह के रूप में न समझा जाए। सभी जानते हैं कि संस्कृति न तो अचल है, न स्थिर, यह तो एक बहती धारा है; यह धारा के साथ परिवर्तित होती है। परंतु भावी पीढ़ी इस संस्कृति से वंचित हो जाएगी यदि हमारे पास यह ज्ञात करने का कोई माध्यम नहीं है कि हमारी पूर्व पीढ़ियाँ तथा अन्य समुदाय किन बातों में विश्वास रखते थे, उनके गीत, उनके नृत्य तथा जीवन जीने का तरीका क्या था...''। उन्होंने मार्टिन बुबर को उद्धृत करते हुए कहा कि मार्टिन का कहना था, ''गीत भाषा से पुराने हैं। गीतों के अंतर्गत मानव सदैव जोश एवं जीवन की संपूर्णता के साथ अपनी संबद्धता अभिव्यक्त करता है...।

गायन सभी के लिए आदिम समागम है, अति प्राचीन, मैत्रीपूर्ण प्रकृति के करीब रागात्मकता ज्ञान का स्फुरण। भाषण अर्जित अलगाव है... गीत जादू है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार, पिछले पच्चीस सालों से उत्तरी भारत की जनजातियों के वाचिक काव्य के संकलन एवं प्रलेखन में उनकी रुचि अब जुनून बन गई है। उन्होंने अभिव्यक्त किया कि, ''गीत मूलरूप से प्रारंभिक तथ्य है जिसे बाद में कविता के नाम से जाना गया।'' आगे उन्होंने सूचित किया कि, ''गायन वास्तव में जीवन जीने के संपूर्ण व्यवहार का प्रमुख भाग था। बच्चे के जन्म के समय, नामकरण के समय, कन्या के यौवन प्राप्ति के समय, प्रेम, विवाह, मृत्यु, कृषि सत्र की गतिविधियों के समय, शिकार, किसी बीमारी के इलाज हेतु, अदृश्य देवी एवं देवताओं को संतुष्ट करने तथा उन्हें धन्यवाद देने के लिए, प्रत्येक अवसर गीतों की मांग करता है...'' अपने व्याख्यान के दूसरे भाग में उन्होंने कोंध जनजाति तथा उनके अनुष्ठान मंगलाचारण गीत मेरिया श्लोक की विस्तृत चित्रण प्रस्तुत किया। आगे उन्होंने अभिव्यक्त करते हुए कहा कि ''गीत वाचिक परंपरा का हिस्सा हैं तथा आज उनका शीघ्र प्रलेखन किए जाने की आवश्यकता है चूँकि ये गीत युवा पीढ़ी द्वारा पूर्णतः भुला दिए जाने की प्रक्रिया में है। यह गीत अथवा श्लोक कल्याण एवं समृद्धि के लिए, भूमि देवी के प्रति एक प्रकार का आह्वान हैं। जनजाति के इन गीतों के सुरों की तुलना वैदिक भजनों से की जा सकती है...।

अपने व्याख्यान के तीसरे भाग में उन्होंने संताल मंगलाचरण गीत, जिन्हें बाखेन के जातिगत नाम से जाना जाता है, की संक्षिप्त अवधारणा प्रस्तुत की। बाखेन का संकलन पंडित रघुनाथ मुर्मु ने किया, जिन्हें गुरु गोमके (महान गुरु) 11 के नाम से जाना जाता है। अपने व्याख्यान के चौथे भाग के अंतर्गत उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ''आदिवासी कविताओं का सबसे चित्ताकर्षक पहलू है उनकी प्रतीकात्मकता। उन्होंने ओवन बारफील्ड को उद्धरित करते हुए कहा ''काव्य-शैली और कुछ नहीं बल्कि भाषा की प्राचीन, पृथक अवस्था है...'' अपने व्याख्यान में उन्होंने मुद्रा जनजाति के विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले कुछ गीतों/कविताओं का भी उल्लेख

किया। अपने व्याख्यान को अंत में उन्होंने कहा, ''मैंने आज के मौजूदा दौर की कविताएँ प्रस्तुत करने की मांग की है, महत्त्वपूर्ण एवं उष्ण, न कि जटिल एवं अपरिचित 'आदिम' संसार के मानव-जाति विज्ञान संबंधी डेटा की तरह। कवि होने के नाते, मैं उन्हें कविता की ही भाँति देखने एवं महसूस करने की कोशिश करता हूँ तथा कोई अन्य विचार अहमियत नहीं रखता - न तो नृजाति विज्ञान न ही धार्मिक संघ अथवा कोई अनुष्ठान...'' व्याख्यान का समाहार करते हुए उन्होंने ब्रेनडन को उद्धरित किया ''हम जो चाहते हैं वह है केवल कविता की भावना अथवा काव्यात्मक भावना। मानवजाति विज्ञानी अपने 'विज्ञान' को तथा भारतीय कवियों की भावी पीढ़ी अपने रहस्य को अपने पास रखें।''

लंदन पुस्तक मेला

14-16 मार्च 2017, लंदन

साहित्य अकादेमी ने अकादेमी लेखक प्रतिनिधिमंडल के चार सदस्यों डॉ. एस.एल. भैरप्पा, श्रीमती अरुंधती सुब्रमणियम, श्री कुलधर सइकिया तथा श्री येशे दरजे थोङ्‌ची के साथ 14-16 मार्च 2017 को केनसिंटन फ़ेयर ग्राउंडस, लंदन में आयोजित लंदन पुस्तक मेला में भाग लिया। लंदन अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला में भाग लेने का मुख्य उद्‌देश्य भारतीय लेखक प्रतिनिधिमंडल की सहभागिता के माध्यम से भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करना तथा भारत की प्रधान साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण कृतियों को प्रदर्शित करना था। अकादेमी ने दो साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया—''वर्तमान भारतीय लेखन'' पर परिसंवाद तथा ''मेरी दुनिया, मेरा लेखन भारतीय लेखकों द्वारा रचना-पाठ'' विषयक साहित्य मंच। ''वर्तमान भारतीय लेखन'' विषयक परिसंवाद में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अतिथि भारतीय लेखकों का परिचय कराया तथा श्रोतागणों का स्वागत किया। श्रीमती अरुंधती सुब्रमणियम ने समसामयिक भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य, श्री येशे दरजे थोङ्‌ची ने *उत्तर-पूर्वी भारत का साहित्य,* जबकि डॉ. एस.एल. भैरप्पा ने *समसामयिक कन्नड साहित्य पर बात की* तथा अपनी कुछ रचनाओं के अंश भी पढ़े। द्वितीय कार्यक्रम, मेरी दुनिया, मेरा लेखन : भारतीय लेखकों द्वारा रचना-पाठ के अंतर्गत, श्रीमती अरुंधती सुब्रमणियम ने अपनी कुछ अंग्रेज़ी कविताओं का पाठ किया तथा इसके पश्चात् श्रोतागणों से भी बात की। श्री कुलधर सइकिया ने अंग्रेज़ी में अनूदित अपनी एक कहानी तथा कविता पढ़ी तथा श्री येसे दरजे थोङ्‌ची ने अपनी अंग्रेज़ी में अनूदित असमिया कहानियों को पढ़ा। साहित्य अकादेमी ने अपनी इंडियन लिटरेचर एब्रॉड नामक परियोजना के लिए अनुवाद की संभावनाओं का अन्वेषण करने हेतु कुछ प्रकाशकों से भी संपर्क किया। इनमें से कुछ हैं—वातायन : पोएट्री ऑन साउथ बैंक, आई.आर.यू.एम. प्रॉडक्शंस, हर्ट केयर फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया, गोविंदाज एल. रॉन हबर्ड लिटज़रॉय हाउस इंडिया लिंक इंटरनेशनल। डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने लंदन में बसे भारतीय लेखकों के साथ संवादात्मक सत्र में भी भाग लिया,

डॉ. के. श्रीनिवासराव एवं प्रो. एस.एल. भैरपपा

जिसका संचालन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा किया गया था। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष श्री बलदेव भाई शर्मा ने सम्मान्य जनसमूह का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के कार्यों के बारे में बात की। सचिव, साहित्य अकादेमी ने अकादेमी की गतिविधियों तथा भारत में अनुवाद के क्षेत्र में इसकी प्रासंगिकता पर बात की एवं धन्यवाद ज्ञापन भी दिया। यह बहुत ही लाभदायक सत्र था, जिसमें विभिन्न प्रकाशकों, लेखकों तथा सामान्य जनता ने भागीदारी की।

नामवर सिंह को महत्तर सदस्यता

27 मार्च 2017, दिल्ली

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवास राव, डॉ. नामवर सिंह एवं डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

नामवर सिंह की आलोचना जीवंत आलोचना है। भले ही लोग या तो उनसे सहमत हुए अथवा असहमत, लेकिन उनकी कभी उपेक्षा नहीं हुई। पठनीयता उनकी आलोचना का सबसे बड़ा गुण है। एक मौलिक रचनाकार के बजाय एक आलोचक का शीर्ष पर बने रहना उनकी अपूर्व मेधा का ही प्रमाण है। यह बात साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने नामवर सिंह को महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए कही।

प्रख्यात आलोचक और नामवर सिंह के शिष्य विश्वनाथ त्रिपाठी ने नामवर सिंह की गरबीली गरीबी के दिनों को बहुत सम्मान से याद करते हुए कहा कि नामवर सिंह के छोटे भाई काशीनाथ सिंह और मुझे नामवर जी से पहले पक्की नौकरी मिल गई थी। उन्होंने कहा कि नामवर सिंह को ख्याति और यश तो समय से पहले ही मिलने लगा था लेकिन प्रतिष्ठानों से स्वीकृतियाँ देर से मिलीं। उन्होंने नामवर सिंह के आलोचकीय अवदान के बारे में कहा कि उन्होंने रचना के पाठ की विधि पाठकों को सिखाई तभी हम निर्मल वर्मा की कहानी के नएपन को समझ पाते हैं और धूमिल की कविता के असली तत्त्वों तक पहुँच पाए हैं।

प्रख्यात आलोचक निर्मला जैन ने कहा कि नामवर जी ने अपने समय के तीन महारथियों-नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेंद्र और हजारी प्रसाद द्विवेदी का सामना किया। उन्होंने नामवर सिंह के संघर्ष के दिनों का ज़िक्र करते हुए बताया कि नामवर सिंह ने जीवन के अनेक पड़ाव देखे हैं। उनके जीवन में जो समय संघर्ष का था वह हिंदी साहित्य के लिए सबसे मूल्यवान रहा है क्योंकि इसी समय में नामवर सिंह ने गहन अध्ययन किया और अपनी महत्त्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं। पान और पुस्तक के इस विलक्षण प्रेम ने उनकी ज्ञानगरिमा को जीवंत बनाया।

भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक और प्रतिष्ठित कवि लीलाधर मंडलोई ने कहा कि नामवर सिंह आधुनिकता में पारंपरिक हैं और पारंपरिकता में आधुनिक। उन्होंने नामवर सिंह के व्यक्तित्व के कुछ अनछुए पहलुओं का ज़िक्र करते हुए कहा कि नामवर सिंह ने पत्रकारिता, अनुवाद और लोक शिक्षण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, जिसका मूल्यांकन होना अभी शेष है। उन्होंने कहा कि नामवर सिंह का बोलना जितना महत्त्वपूर्ण है, उनका मौन उससे कम मूल्यवान नहीं है। उनकी चुप्पी का भी एक अर्थ है।

प्रतिष्ठित आलोचक और साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक सूर्य प्रसाद दीक्षित ने नामवर सिंह के व्यक्तित्व के कुछ अन्य आयामों पर प्रकाश डाला जिसमें उन्होंने नामवर सिंह के श्रेष्ठ अनुवादक, संपादक और सक्रिय प्रशासक के रूप में किए गए उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया और नामवर सिंह की प्रशस्ति का वाचन किया। तदुपरांत अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने महत्तर सदस्य नामवर सिंह को अंगवस्त्रम एवं ताम्रफलक प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन कुमार अनुपम ने किया।

स्नेहा देवी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 मार्च 2017, डिब्रूगढ़

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता तथा असमिया विभाग, डिब्रूगढ़ युनिवर्सिटी के सहयोग से स्नेहा देवी जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 27-28 मार्च 2017 को युनिवर्सिटी परिसर में किया गया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी, कोलकाता के प्रभारी अधिकारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों तथा दर्शकों का स्वागत किया। असमिया विभाग, डिब्रूगढ़ युनिवर्सिटी के प्रो. निरंजन महंत बेजबरुआ ने आरंभिक वक्तव्य दिया। डिब्रूगढ़ युनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. अलक कुमार बरगोंहाई ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने बीज वक्तव्य में, प्रतिष्ठित विद्वान श्री नगेन सइकिया ने स्नेहा देवी की साहित्यिक उपलब्धियों तथा उनकी मौलिक रचनाओं पर प्रकाश डाला। प्रतिष्ठित उपन्यासकार श्री लक्ष्मीनंदन बर' मुख्य अतिथि तथा अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. करबी डेका हाज़रिका ने सत्र की अध्यक्षता की तथा असमिया विभाग के प्रो. सत्यकाम वरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी ने की तथा तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों डॉ. अजीत भराली, डॉ. जयंत कुमार बोरा एवं श्री जयंत माधव बोरा ने क्रमशः 'दापोनत आनर छवि-स्नेहा देवी गलपत पुरुष', 'नाटक रचनात असोमिया नारी अरु स्नेहा देवीर नाटक', तथा 'स्नेहा देवीर गल्पर मनसत्व' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मृणाल तालुकदार ने की तथा तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों श्री अरविंद राजखोवा, सुश्री रतना भराली तालुकदार एवं सुश्री सुवासन महंत चौधुरी ने क्रमशः 'समकालीन सामाजिक प्रख्यापत आरु स्नेहा देवीर कृष्णा द्वितीयार जोनाक' 'लिंग बाधा को तोड़ना : समसामयिक असमिया कहानियों में नारी कथा ख्रेस देवीर छुटिगल्प-लागधारागता शैली प्रसंग विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता तरणी डेका ने की तथा तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों गीतांजलि वरपुजारी आईसेना बरगोहाईं एवं मौसमी हाज़रिका ने

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

क्रमशः 'स्नेहा देवीर गल्पर चरित', 'स्नेहा देवी अरु आशापूर्णा देवीर गल्पर तुलनात्मक आलोचना', तथा 'स्नेहा देवीर गल्पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापत्र सत्र की अध्यक्षता नव कुमार हांडिक ने की एवं श्री बसंत कुमार शर्मा ने समापन वक्तव्य तथा प्रो. सत्यकाम बोरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कर्नाटक के आदिवासी महाकाव्य' पर संगोष्ठी

27-28 मार्च 2017, सागर

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कर्नाटक के आदिवासी महाकाव्यों का पुनर्पाठ विषय पर द्वि-दिवसीय, संगोष्ठी का आयोजन 27-28 मार्च 2017 को कागोदू थिम्मपपा रंगमंदिर, सागर, ज़िला शिमोगा, कर्नाटक में किया। उद्घाटन सत्र में अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं दर्शकों का स्वागत किया। अपने बीज-वक्तव्य में कन्नड यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. एच.पी. बोरालिंगाह ने आधुनिक समय में आदिवासी महाकाव्यों की महत्ता एवं प्रासंगिकता पर बात करते हुए इस प्रकार के महाकाव्यों के तेजी से लुप्त होने पर शोक प्रकट किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रतिष्ठित आदिवासी विद्वान श्री हुचप्पा मास्टर ने समसामयिक संसार के प्रतिकूल वातावरण को ध्यान में रखते हुए आदिवासी समुदायों के प्रति समग्र/सर्वांगीण दृष्टिकोण अपनाने की अत्यावश्यकता पर बात की। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रतिष्ठित विद्वान श्री एच.पी. नागाराजैय्या ने अपने भाषण में आदिवासी महाकाव्यों में अंतर्निहित दूरदर्शिता एवं मानवता पर बात की, जो आज के आधुनिक समय में मिल पाना अपेक्षाकृत कठिन है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. ए.वी. नवादा ने की तथा तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों डॉ. प्रशांत नायक, श्री वीरेश बाडिगर तथा श्री चालुवाराजू ने क्रमशः 'आदिवासी महाकाव्य एवं प्राचीन महाकाव्य' 'आदिवासी महाकाव्य : प्रकार एवं विशेषता', तथा आदिवासी महाकाव्यों विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. श्रीकांत कुडिग ने की तथा तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों डॉ. मेती मल्लिकार्जुन, श्री कुमसी उमेश एवं श्री किरण गजनूर ने क्रमशः 'आदिवासी महाकाव्य : प्रतीकात्मक संसार', 'आदिवासी महाकाव्यों में प्रतिरोध' तथा 'आदिवासी महाकाव्यों में ज्ञान प्रवचन' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। पहले दिन की संध्या पर लोकः विविध स्तर कार्यक्रम के अंतर्गत वासवराजू एवं ट्रुप द्वारा बिलीगिरि रंग के महाकाव्य, शारदा एवं ट्रुप द्वारा कुवियार के महाकाव्य का पाठ किया गया तथा रमेश गोड़ा एवं ट्रुप द्वारा हल्ला की जनजाति के गुमते पंग का मंचन किया गया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री श्रीपद शेट्टी ने की, तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों श्री कुरुवा बासवराज, डॉ. मोहन चंद्रगुट्टी एवं डॉ. बी. रमेश ने क्रमशः 'तांत्रिक अनुष्ठान एवं वैज्ञानिक अवधारणा', 'आदिवासी महाकाव्यों में आध्यात्मिकता एवं ईश्वर की अवधारणा' तथा 'आदिवासी महाकाव्यों में लिंग व्यवहार एवं अवधारणा' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए.एस. प्रभाकर ने की, दो सुप्रसिद्ध विद्वानों श्री एस.एस. अंगदि तथा श्रीमती वत्सला मोहन ने क्रमशः 'आदिवासी महाकाव्यों का भाषायी

संदर्भ' एवं 'आदिवासी महाकाव्यों का विश्वदृष्टिकोण' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र के पश्चात् सुधाकर एवं टुप द्वारा हसालार हंतिके पंतिके तथा रामू एवं टुप द्वारा बुदुगा जंङ्मार का पाठ किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री कागोदु अन्नाजी ने की, श्री ना. डिसूजा एवं कारिगौड़ा बेचनहल्ली सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

अखिल भारतीय संताली लेखक सम्मिलन

30-31 मार्च 2017, नई दिल्ली

बाएँ से दाएँ : डॉ. के. श्रीनिवासराव, डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, श्री पूर्णचंद्र हेम्ब्रम, डॉ. सीताकांत महापात्र, श्री पृथ्वी माझी एवं श्री गंगाधर हांसदा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 30-31 मार्च 2017 को रवींद्र भवन, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली में ''अखिल भारतीय संताली लेखक सम्मिलन'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया कवि एक विद्वान डॉ. सीताकांत महापात्र के द्वारा किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण दिया, जबकि श्री पृथ्वी मार्क्स ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। आरंभिक वक्तव्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने दिया, जबकि श्री पूर्णचंद्र हेम्ब्रम ने बीज भाषण दिया। डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश, विशेष कार्याधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। उद्घाटन सत्र के पश्चात्, अकादेमी द्वारा शोभानाथ बेसरा, धीरेंद्र बास्के, भैया हांसदा तथा ठाकुर प्रसाद मुर्मू पर आधारित एवं संगीता दत्त द्वारा निर्देशित ''चार संताली साहित्यकार'' शीर्षक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया। प्रथम सत्र ''संताली साहित्य की वर्तमान स्थिति'', विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री विश्वनाथ हांसदा ने की। इस सत्र में श्री भोगला सोरेन, श्री नाकु हांसदा, श्री माधव चंद्र हांसदा एवं श्री अनपा मरांडी प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित हुए। द्वितीय सत्र कविता-पाठ पर आधारित था तथा चिन्मयीहांसदा, टी.सी. बास्के, भुजंग टुडु, गणेश मांडी, लक्ष्मण किस्कू एवं टुड़ा मुर्मू प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित हुए। इस सत्र की अध्यक्षता श्री गोविंद माझी ने की। इसके पश्चात्, मैसेज आर्टिस्ट एसोसिएशन ऑफ़ ट्राइबल, जमशेदपुर द्वारा संताली नाटक ''जुगी तिरियो'' का सफल मंचन किया गया। नाटक का लेखन एवं निर्देशन जीतराय हांसदा द्वारा किया गया था। तृतीय सत्र ''संताली समाज की विविध चुनौतियाँ'' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री नित्यानंद हेम्ब्रम ने की। इस सत्र के प्रतिभागी थे—रविलाल टुडु, गोपाल सोरेन तथा सलखू मुर्मू। चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री श्याम बेसरा ने की तथा प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित थे—निरंजन हांसदा, रानी मुर्मू एवं दिलीप हांसदा ''मेरी दुनिया, मेरा लेखन'' विषयक पाँचवे सत्र के अंतर्गत भोगला सोरेन एवं रघुनाथ मार्डी प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित थे, जबकि दमयंती बेसरा ने सत्र की अध्यक्षता की। अंतिम सत्र कविता-पाठ पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री भोलानाथ मुर्मू ने की। इस सत्र में सरोजिनी बेसरा, काशुनाथ सोरेन, सोमनाथ हांसदा, आदित्य मांडी, मानसिंह माझी एवं धुडु मुर्मू प्रतिभागियों के रूप में उपस्थित थे।

2016–2017 में पुस्तक मेले एवं पुस्तक प्रदर्शनियों आयोजन एवं सहभागिता

पुस्तक मेला एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची—आयोजन एवं सहभागिता : 2016-2017

मुख्यालय

1.	उज्जैन महाकुंभ, मध्य-प्रदेश	22-4-21.05.2016
2.	अहमदाबाद	01-07.05.2016
3.	शिमला पुस्तक मेला	20-31.05.2016
4.	सोलन पुस्तक प्रदर्शनी	11-19.06.2016
5.	लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत राष्ट्रीय विद्यापीठ, नई दिल्ली	04.07.2016
6.	वाराणसी	8.7.16
7.	दिल्ली पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी, चाँदनी-चौक, दिल्ली	15-16.07.2016
8.	दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली	22-23.07.2016
9.	कुरुक्षेत्र	24.07.2016
10.	मुज़फ़्फ़रपुर	28-29.07.2016
11.	अमृतलाल नागर जन्मशतवार्षिकी, लखनऊ	20-21.08.2016
12.	दिल्ली पुस्तक मेला	27.8-04.09.2016
13.	ग्रेटर नोएडा पुस्तक मेला (एन.बी.टी.)	12-18.09.2016
14.	अजमेर पुस्तक मेला (ऑक्टेव-डब्ल्यू. जेड.सी.सी.)	21-25.09.2016
15.	पुस्तक प्रदर्शनी, कारगिल	26-27.09.2016
16.	पटियाला	3-9.10.2016
17.	जालंधर	7-8.10.2016
18.	सेंट स्टीफेंस कॉलेज	20-21.10.2016
19.	सहारनपुर	16-23.10.2016
20.	शिमला पुस्तक प्रदर्शनी	03-04.11.2016
21.	कानपुर पुस्तक प्रदर्शनी	5-14.11.2016
22.	चंडीगढ़ पुस्तक प्रदर्शनी	16-20.11.2016
23.	दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तक प्रदर्शनी	15-19.11.2016
24.	दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सव (मुख्यालय)	16, 22 एवं 24.11.2016
25.	अख़्तर-उल इमान जन्मशतवार्षिकी आयोजन (मुख्यालय)	26-27.11.2016
26.	हरदयाल पब्लिक लाइब्रेरी, चाँदनी चौक, दिल्ली	09-10.12.2016
27.	वाराणसी पुस्तक प्रदर्शनी	17-24.12.2016
28.	उदयपुर पुस्तक प्रदर्शनी	21-30.12.2016
29.	नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला	07-15.01.2017
30.	भोपाल पुस्तक प्रदर्शनी	03-05.02. 2017
31.	पटना पुस्तक मेला	04-14.02.2017

32.	इंदौर पुस्तक मेला	03-12.02.2017
33.	हरियाणा पुस्तक मेला, कैथल	09-12.02-2017
34.	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय पुस्तक प्रदर्शनी	01-21.02.2017
35.	रेख्ता फ़ाउन्डेशन पुस्तक प्रदर्शनी	17-19.02.2017
36.	साहित्योत्सव	21-26.02.2017
37.	शीला भाटिया शताब्दी संगोष्ठी	03-04.03.2017
38.	जम्मू पुस्तक प्रदर्शनी, जम्मू	03-05.03.2017
39.	अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य सम्मेलन	10-12.03.2017
40.	लंदन पुस्तक मेला, लंदन	14-16.03.2017
41.	गाँधी समृति एवं दर्शन स्मृति पुस्तक प्रदर्शनी	21-28.03.2017
42.	हापुड़ पुस्तक प्रदर्शनी, हापुड़	26-27.03.2017

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

1.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	23.04.2016
2.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	25.04.2016
3.	दुमका, झारखंड	30.04.2016
4.	साहेबगंज, झारखंड	01.05.2016
5.	गोरखा जन पुस्कालय, खरसाङ, पश्चिम बंगाल	07-08-05.2016
6.	कालिम्पोङ, पश्चिम बंगाल	27-28.05.2016
7.	कोई स्थान उल्लिखित नहीं	19-20.6.2016
8.	बारिपदा, ओड़िशा	16-18.7.2016
9.	नेहू, शिलांग	30-31.7.2016
10.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	06.08.2016
11.	राँची	27-28.8.2016
12.	दार्जीलिङ	10.09.2016
13.	सिटोङ	11.09.2016
14.	विद्यासागर महिला कॉलेज, कोलकाता	26.09.2016
15.	दांतन कॉलेज, मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल	26-27.09.2016
16.	उदालगुड़ी और गुवाहाटी	25-28.09.2016
17.	विश्व-भारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल	27-28.9.2016
18.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	01.10.2016
19.	राँची	15-16.10.2016
20.	भुवनेश्वर	22.10.2016
21.	कटक	22-23.10.2016

22.	जोरथाङ	05.10.2016
23.	गांतोक	06.11.2016
24.	धर्मतला, कोलकाता	26-27.11.2016
25.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	17-18.12.2016
26.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	22.12.2016
27.	तेजपुर विश्वविद्यालय, उदालगुड़ी	29.12.2016
28.	तेजपुर विश्वविद्यालय, उदालगुड़ी	30.12.2016
29.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता	18-19.01.2017
30.	जे.एन.आर.एम., पोर्टब्लेयर	10-11.02.2017
31.	जमशेदपुर	18.03.2017
32.	बोकारो	19.03.2017

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

1.	चेन्नै पुस्तक मेला	01.6.2016-13.06.2016
2.	एन.ई.एस.सी.ओ. पुस्तक मेला	24.06.2016-28.06.2016
3.	नेयवेली पुस्तक मेला	01.07.2016-10.7.2016
4.	चेन्नै	19-20.7.2016
5.	त्रिची	22.07.2016
6.	होसुर पुस्तक मेला	15-07.2016-24.07.2016
7.	तंजावुर पुस्तक मेला	15.07.2016-25.07.2016
8.	मन्नारगुड्डी	05.8.2016
9.	त्रिची	06.08.2016
10.	मेट्टुप्पलायलम पुस्तक मेला	01.8.2016-10.08.2016
11.	इरोड पुस्तक मेला	05.08.2016-16.08.2016
12.	कोयंबटूर पुस्तक मेला	19.08.2016-28.08.2016
13.	नागेरकोइल	30.8.2016
14.	मदुरै पुस्तक मेला	2.9.2016-12.09.2016
15.	पोलाची	16.09.2016
16.	पांडिचेरी	23-24.09.2016
17.	ऑरोविल	15.10.2016
18.	कुंद्राकुदी	22.10.2016
19.	चेन्नै	26.10.2016
20.	चेन्नै	26.10.2016
21.	त्रिची	8.12.2016

22.	पवल्लम थिरुमना मंदप्पम, कुंबकोणम	14.20.11.2016
23.	कोषिकोड	14-20.11.2016
24.	कोट्टयम पुस्तक मेला	18.11.2016-27.11.2016
25.	तंजावुर	23-24.11.2016
26.	डिंडीगुल पुस्तक मेला	1.12.2016-11.12.2016
27.	कोच्चि अंतरराष्ट्रीय पुस्तकोत्सव	02.12.2016-12.12-2016
28.	करैकुड़ी	14.12.2016
29.	चेन्नै पुस्तक मेला	23.12.2016-3.01.2017
30.	चेन्नै	4.1.2017
31.	मदुरै	5.1.2017
32.	जी.आर.ई., डिंडीगुल	6.1.2017
33.	चेन्नै पुस्तक मेला	6.1.2017-19.1.2017
34.	पेरंबलूर पुस्तक मेला	27.01.2017-05.2.2017
35.	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नै	21.02.2017
36.	भारतीय विद्या भवन, चेन्नै	8.3.2017
37.	भारतीय विद्या भवन, चेन्नै	10.3.2017

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

1.	मराठवाड़ा साहित्य परिषद, औंरगाबाद	14-18.05.2016
2.	राजे वाकाटक पब्लिक लाइब्रेरी, वाशिम	20-22.05.2016
3.	गुजराती साहित्य परिषद्, अहमदाबाद	25-26.06.2016
4.	इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेनेनज़िज़ ब्रेगेंजा, पणजी	9-10.07.2016
5.	संस्कृति भवन, पट्टो प्लाज़ा, पणजी	23-24.07.2016
6.	केंद्रीय विद्यालय, सिओन कोलीवाडा, मुंबई	4-5.08.2016
7.	परमानंद साहित्य सभा, वड़ोदरा	11-15.08.2016
8.	के.जे. चोस्की पब्लिक लाइब्रेरी, भरुच	17-21.08.2016
9.	प्रमिलाताई ओक पब्लिक लाइब्रेरी, अकोला	21-25.08.2016
10.	गुजराती साहित्य परिषद्, अहमदाबाद	24-25.08.2016
11.	आबिदा इनामदार सीनियर कॉलेज, पुणे	27.08.2016
12.	अंकुशराव टोपे महाविद्यालय, जालना	16-18.9.2016
13.	हीराचंद नेमचंद कॉलेज ऑफ़ कामर्स, सोलापुर	3-4.10.2016
14.	सीनियर आर्ट्स महिला कॉलेज, शाहदा, नंदुबार	15-17.10.2016
15.	वल्लभ वालजी वाचनालय, जलगाँव	19-23.10.2016
16.	रवींद्र नाट्य मंदिर, मुंबई	15-19.10.2016

17.	गुजराती साहित्य परिषद्, अहमदाबाद	14-16.11.2016
18.	क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई	14-20.11.2016
19.	गोएथे इंस्टीट्यूट, मुंबई	26-27.11.2016
20.	डी.वाई.एफ.ई., ज़िला ठाणे	2-4.12.2016
21.	संस्कृति भवन, पट्टो प्लाज़ा, पणजी, गोवा	17-18.12.2016
22.	उर्दू किताब मेला, राइज़ हाईस्कूल, भिवंडी, महाराष्ट्र	17-25.12.2016
23.	महात्मा गाँधी अंतरर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा	27-30.12.2016
24.	डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर राष्ट्रीय स्मारक, महाद	6-8.01.2017
25.	शिक्षण निरीक्षा कार्यालय, मुंबई	10-11.01.2017
26.	सतारा ज़िला ग्रंथ महोत्सव, सतारा	13-16.01.2017
27.	श्री राम वचन मंदिर, ज़िला सिंधुदुर्ग	14-15.01.2017
28.	अखिल महाराष्ट्र इतिहास परिषद्, बाबूजी अवहद महाविद्यालय, अहमदनगर	20-21.01.2017
29.	अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, डोम्बिवली	3-5.02.2017
30.	भालेराव पब्लिक स्कूल, बल्लारपुर, ज़िला चंद्रपुर	11-12.02.2017
31.	द गेटवे लिटफ़ेस्ट, एन.सी.पी.ए., नरीमन प्वाइंट, मुंबई	25-26.02.2017
32.	साने गुरुजी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट और द मैसूर एसोसिएशन, माटुंगा, मुंबई	24-25.02.2017

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

1.	कन्नड साहित्य परिषद्, बेंगळूरु	19.05.2016
2.	भारतीय विद्या भवन, बेंगळूरु	11-12.6.2016
3.	सुचित्रा फ़िल्म चैंबर, बेंगळूरु	25-26.06.2016
4.	विशाखापट्टनम	21.08.2016
5.	क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगळूरु	26.8.2016
6.	होनावर	17-18.09.2016
7.	एन.बी.टी. गुलबर्ग महोत्सव पुस्तक	20-25.09.2016
8.	नेशनल कॉलेज, बेंगळूरु	16.09.2016
9.	क्राइस्ट विश्वविद्यालय, बेंगळूरु	3-4.11.2016
10.	कन्नड़ विश्वविद्यालय, हंपी	3-5.11.2016
11.	नेशनल कॉलेज, बेंगळूरु	14-20.11.2017
12.	अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी केंद्र, बेंगळूरु	7-9.01.2017
13.	कारैकल	18.3. 2017
14.	सिरसी	19.03.2017
15.	सगरा	27 एवं 28.3. 2017

2016–2017 के दौरान प्रकाशित पुस्तकें

वर्ष 2016–2017 में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

अनलिमिटेड एक्स (नवोदय योजना)
ले. सिद्धार्थ गोस्वामी
पृ. 86, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-4972-1

विष्णु प्रसाद राभा (विनिबंध)
ले. इस्माइल हुसैन
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3197-9 (पुनर्मुद्रण)

संजीवन
ले. लियो तोल्स्तोय
अनु. अनु बरुआ
पृ. 572, रु. 310/-
ISBN: 978-81-260-1279-4 (पुनर्मुद्रण)

असमिया शिशु साहित्य निर्वाचित छुटि गल्प
संक. एवं संपा. शांतनु तामुलि
पृ. 336, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-5019-2

जनजातीय साधु
संक. एवं संपा. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
पृ. 106, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-0201-6 (पुनर्मुद्रण)

कांदीद
ले. वाल्तेयर
अनु. रेहान शाह
पृ. 122, रु. 110
ISBN: 978-81-260-5021-5 (पुनर्मुद्रण)

बार माहर तेर गीत
संक. एवं संपा. प्रफुल्लदत्त गोस्वामी
पृ. 248, रु. 130/-
ISBN: 978-81-7201-551-0 (पुनर्मुद्रण)

पद्मनाथ गोहाईं बरुआ (विनिबंध)
ले. प्रफुल्ल चंद्र बर'
पृ. 72, रु, 50/-
ISBN: 978-81-260-0216-0 (पुनर्मुद्रण)

असमिया उपन्यासर गतिप्रकृति
संपा. शैलेन भराली
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2815-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिश्रुति
ले. काशी बहादुर श्रेष्ठ
अनु. पूर्ण कुमार शर्मा
पृ. 80, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5015-4

गणदेवता
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. सुरेन तालुकदार
पृ. 288, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-3110-8 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

नीलमास्टरनी ओ अन्यान्य गल्प
ओड़िया संस्करण का संक.
एवं संपा. विभूति पट्टनायक
अनु. भारती नंदी
पृ. 136, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-4884-7

रोद वृष्टि झड़
ले. आनंद यादव
अनु. नीता सेन समर्थ
पृ. 364, रु. 210/-
ISBN: 978-81-260-1207-7 (पुनर्मुद्रण)

चलंति ठाकुर
ले. शांतनु कुमार आचार्य
अनु. श्याम सुंदर महापात्र एवं
अमित्रसूदन भट्टाचार्य
पृ. 76, रु, 70/-
ISBN: 978-81-260-4736-9

कविता चर्या
विभिन्न लेखकों द्वारा
पृ. 148, रु.120/-
ISBN: 978-81-260-5020-8 (पुनर्मुद्रण)

छायारेखा
ले. अभिताभ घोष
अनु. मौसुमी बोस
पृ. 300, रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-2217-5 (पुनर्मुद्रण)

श्रीराधा
ले. रमाकांत रथ, अनु. कालीपद कोनार
पृ.116, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5027-7 (पुनर्मुद्रण)

अचिंत्य कुमार सेनगुप्त
ले. रॉबिन पाल
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2907-5 (पुनर्मुद्रण)

जतींद्रमोहन बागची
ले. ईशिता भादुड़ी
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5031-4

ईश्वर चंद्र विद्यासागर
ले. हिरण्मय बंद्योपाध्याय
अनु. सुधीर कुमार चौधुरी
पृ. 78, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2125-3 (पुनर्मुद्रण)

राहुल सांकृत्यायन
ले. प्रभाकर माचवे,
अनु. स्नेहलता चट्टोपाध्याय
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5018-5 (पुनर्मुद्रण)

ज्योतिर्मयी देवी (विनिबंध)
ले. सुदक्षिणा घोष
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5159-5

पर्व
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. पुष्पा मिश्रा एवं कणिका बोस
पृ. 564, रु. 240/-
ISBN: 978-81-260-3377-5 (पुनर्मुद्रण)

विभूतिभूषण बंधोपाध्याय (विनिबंध)
ले. सुनीलकुमार चट्टोपाध्याय
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1507-8

सत्येंद्रनाथ दत्त (विनिबंध)
ले. आलोक राय
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2501-5 (पुनर्मुद्रण)

नटसम्राट
ले. वी.वी. शिरोडकर
अनु. जगत देवनाथ
पृ. 96, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-5156-4

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड I
संक. एवं संपा.
असित कुमार बंद्योपाध्याय
एवं अजित कुमार घोष
पृ. 244, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-2655-5 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला एकांकी नाट्य संग्रह
संक. एवं संपा. अजित कुमार घोष
पृ. 560, रु. 210/-
ISBN: 978-81-260-515-7 (पुनर्मुद्रण)

चैतन्यचरितामृत
ले. कृष्णदास कविराज
संपा. सुकुमार सेन
पृ. 276, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2721-7 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला संताली शब्दकोश
मुख्य संपा. अशोक मुखोपाध्याय
पृ. 400, रु. 320/-
ISBN: 978-81-260-4076-6

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड IV
संक. एवं संपा. सुनील गंगोपाध्याय
पृ. 424, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-2726-2 (पुनर्मुद्रण)

सत्येर अन्वेषण
ले. एम. के. गाँधी, अनु. गीता चौधुरी
पृ. 488, रु. 240/-
ISBN: 978-81-260-3301-0 (पुनर्मुद्रण)

हेमंतेर कान्ना
ले. कुर्तुलेन हैदर
अनु. पुष्पिता मुखोपाध्याय
पृ. 216, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-0764-6 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब
ले. एम. मुजीब
अनु. मणिभूषण भट्टाचार्य
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4517-4 (पुनर्मुद्रण)

अरुण मित्र : सहजेर दुरुह साधना
संक. एवं संपा. सव्यसाची देव
पृ. 136, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5035-2

एकटि इलिशेर स्वाद ओ अन्यान्य गल्प
ले. नोंङ्थोमबम कुंजमोहन सिंह
अनु. लाङ्जोनबम बीरमंगल सिंह
पृ.112, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5030-7 (पुनर्मुद्रण)

गोदान (उपन्यास)
ले. प्रेमचंद, अनु. रणजीत सिन्हा
पृ. 410, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-2319-6 (पुनर्मुद्रण)

विष्णु दे (विनिबंध)
ले. एवं अनु. अरुण सेन
पृ. 123, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2279-3 (पुनर्मुद्रण)

गठनवाद, उत्तर-गठनवाद एवं प्राच्य काव्यतत्त्व
ले. गोपीचंद नारंग
अनु. सोमा *बंद्योपाध्याय*
पृ. 464, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-4217-3 (पुनर्मुद्रण)

रक्तमणिर हारे, खंड-I
संक. एवं संपा. देवेश राय
पृ. 434, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2111-6 (पुनर्मुद्रण)

मिर्ज़ा ग़ालिब ओ ताँर समय
ले. पवन के. वर्मा
अनु. मंदार मुखोपाध्याय
पृ. 265, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5168-7
(प्रथम संशोधित मुद्रण)

जसीमुद्दीन
संक. पुलक चंदा
पृ. 168, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-5029-1

चंडीमंगल
संपा. सुकुमार सेन
पृ. 464, रु. 430/-
ISBN: 978-81-260-2588-6 (पुनर्मुद्रण)

न्यू यॉर्के कवि
ले. फ़ेडेरिको गार्सिया लोर्का
अनु. देवीप्रसाद बंद्योपाध्याय
पृ. 156, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-1973-1 (पुनर्मुद्रण)

हवार ओपर हस्ताक्षर
ले. कैलाश वाजपेयी
अनु. उज्ज्वल सिंह
पृ. 105, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5158-8

संताली गान ओ कविता संकलन
संक. संपा. एवं अनु.
सुहृद कुमार भौमिक
पृ. 360, रु. 170/-
ISBN: 978-81-260-4218-0 (पुनर्मुद्रण)

रामप्रसादी
संपा. सर्वानंद चौधुरी
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2918-1 (पुनर्मुद्रण)

निकोबारी लोककथा
ले. एवं अनु. रॉबिन रॉयचौधुरी
पृ. 104, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-2440-7 (पुनर्मुद्रण)

ताओ-ते-चिंग
ले. लाओ-त्से
अनु. अमितेंद्रनाथ टैगोर
पृ. 120, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-2507-7 (पुनर्मुद्रण)

पनबंदि रग्घु
ले. काशीनाथ सिंह, अनु. ननी शूर
पृ. 144, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-5033-8

मैथिली गल्प संकलन
संक. एवं संपा. कामाख्या देवी
अनु. गौरी सेन
पृ. 132, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-2910-5 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी गल्प संकलन
संक. एवं संपा. भीष्म साहनी
अनु. सुविमल बसाक
पृ. 430, रु. 220/-
ISBN: 978-81-260-3103-0 (पुनर्मुद्रण)

बनफूल (विनिबंध)
ले. विप्लव चक्रवर्ती
पृ. 76, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2117-8 (पुनर्मुद्रण)

बंगीय शब्दकोश-खंड I एवं II
ले. हरिचरण बंद्योपाध्याय
पृ. 1278+1194 रु. 1000/-
ISBN: 978-81-260-2661-6 (पुनर्मुद्रण)

बोडो

बाङ्ला गल्प संकलन- खंड III
संक. एवं संपा. अनिल कुमार बर'
तथा इंदिरा बर'
पृ. 476, रु. 280/-
ISBN: 978-81-260-5025-3

खंथाई बिहुं
संक. एवं संपा. अनिल बर'
पृ. 216, रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-2808-5 (पुनर्मुद्रण)

बिफा-फ़िसा
ले. होमेन बरगोहाईं, अनु. इंदिरा बर'
पृ. 336, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-3202-0 (पुनर्मुद्रण)

बिनदिनी
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर, अनु. नवीन ब्रह्म
पृ. 224, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4730-7 (पुनर्मुद्रण)

नैजिसे सुंद सल
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. स्वर्णप्रभा चैनारी
पृ. 472, रु. 320/-
ISBN: 978-81-260-4651-5 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली खंथाई बिदां
संक. एवं संपा. आर.पी.लामा
अनु. संपा. अनिल बर'
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 196, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4714-7 (पुनर्मुद्रण)

जिंज़िरि
ले. भवेंद्रनाथ सइकिया
अनु. बीरहास गिरि बसुमातारी
पृ. 200, रु. 195/-
ISBN: 978-81-260-3201-3 (पुनर्मुद्रण)

फुथुला मोसानायनि सल'
ले. माणिक बंद्योपाध्याय
अनु. गोविंद बसुमातारी
पृ. 248, रु. 220/-
ISBN: 978-81-260-4731-4 (पुनर्मुद्रण)

मोदाय थुंग्री
ले. रीता चौधुरी
अनु. प्रतिमा नंदी नाज़ारी
पृ. 432, रु. 320/-
ISBN: 978-81-260-4792-5 (पुनर्मुद्रण)

आबौनि हारा
ले. नवकांत बरुआ
अनु. बिरूपाक्षगिरि बसुमातारी
पृ. 100, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-4716-1 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन, खंड IV
संक. एवं. संपा. अनिल कुमार बर' एवं स्वर्णप्रभा चैनारी
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 528, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5026-0

डोगरी

इक छिट्ट चाननी दी
ले. करतार सिंह दुग्गल
अनु. शशि पठानिया
पृ. 148, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5039-0

कोहरे च कैद रंग
ले. गोविंद मिश्र, अनु. उषा व्यास
पृ. 198, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-4940-0

ब्हाउ च दस्तख़त
ले. कैलाश वाजपेयी
अनु. पद्मा सचदेव
पृ. 112, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-4952-3

किशन स्मैलपुरी रचना संचयन
संपा. नरसिंह देव जम्वाल
पृ. 248, रु. 220/-
ISBN: 978-81-260-4947-9

देहरा च अज्ज बी उगदे न सारहे बूटे
ले. रस्किन बॉण्ड, अनु. निर्मल विनोद
पृ. 119, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-5040-6

बाणभट्ट दी आत्मकथा
ले. हजारी प्रसाद द्विवेदी
अनु. ओम गोस्वामी
पृ. 256, रु. 240/-
ISBN: 978-81-4031-5044-4

रामनाथ शास्त्री (विनिबंध)
ले. वीणा गुप्ता
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81- 260-5120-5

यश शर्मा (विनिबंध)
ले. बिशन सिंह दर्दी
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5121-2

रोमाल सिंह भड़वाल (विनिबंध)
ले. अर्चना केसर
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5122-9

बेड़ी डुब्बी
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. छत्रपाल
पृ. 258, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5257-8

अंग्रेज़ी

मेड ऑफ़ आइस
(पुरस्कृत सिंधी काव्य-संग्रह)
ले. वासदेव मोही
अनु. विनोद असुदानी एवं राम दरयाणी
पृ. 84, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-4713-0

हरिकांत जेठवाणी
ले. लक्ष्मण भाटिया 'कोमल'
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4909-7

अमृतर संतान
ले. गोपीनाथ महांति
अनु. विधुभूषण दास, प्रभात नलिनी दास एवं ऊपाली अपराजिता
पृ. 640, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-4746-8

गंगापुत्र एंड अदर स्टोरीज़
ले. मनमोहन झा
अनु. विजय मिश्र
पृ. 72, रु. 75/-
ISBN: 978-81-260-4753-6

भुवनेश्वर बेहरा (विनिबंध)
ले. ममता दाश
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4974-5

लवंगलता
ले. ख. चाओबा सिंह, अनु. भवेंद्र सिंह
पृ. 88, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4737-

द बिलेटेड स्प्रिंग
ले. असमय, अनु. नीता सेन समर्थ
पृ. 289, रु. 75/-
ISBN: 81-260-0664-1 (पुनर्मुद्रण)

अ सर्टेन सेंस : पोयम्स बाय जीवनानंद दास
संपा. एवं अनु. सुकांत चौधुरी
पृ. 127, रु. 50/-
ISBN: 81-260-1515-2 (पुनर्मुद्रण)

नेशनल बिब्लिओग्रॉफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर : सेकेंड सीरीज़ (1954-2000) खंड XI (भाग II) सिंधी
एम. के. जेटली
(संक. एवं ग्रंथ-सूचीकार)
पृ. 290, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-4759-8

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर खंड-3 (संबोधित संस्करण)
मुख्य संपा. इंद्रनाथ चौधुरी
पृ. 3376, रु. 1000/-
ISBN: 978-81-260-4758-1

सबद (विश्व कविता संचयन) 21-24 मार्च 2014 को आयोजित विश्व काव्योत्सव में पठित कविताओं का संकलन
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 270, रु. 375/-
ISBN: 978-81-260-4745-1

मधुपुर बहुदूर एंड अदर स्टोरीज़
ले. शीलभद्र अनु. ज्योतिर्मय प्रधानी
पृ. 132, रु. 85/-
ISBN: 978-81-260-4065-0

इन द ह्यूमन हर्ट
(नवोदयांतर्गत कविता-संग्रह)
ले. श्रीमंत भट्टाचार्य
पृ. 42, रु. 65/-
ISBN: 978-81-260-4990-5

शंकराचार्य (विनिबंध)
ले. एस. बी. रघुनाथाचार्य
पृ. 182, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1575-7

न्यू दर्शन्स
ले. पोन्नीलन, अनु. एस. नागराजन
पृ. 936, रु. 555/-
ISBN: 978-81-260-4980-6

सुब्रह्मण्य भारती, खंड-I
संपा. सिर्पी बालसुब्रह्मणियम
पृ.637, रु. 950/-
ISBN: 978-81-260-5008-6

लेटर्स फ्रॉम द विलेज
ले. रघु लेईशाङ्थम
अनु. सलाम रूपचंद्र सिंह
पृ. 80, रु.90/-
ISBN: 978-81-260-5155-7

लाइक मिस्ट थ्रू वैलीज़
ले. एच. एस. शिवप्रकाश
पृ. 48, रु. 85/-
ISBN: 978-81-260-4996

बैक अगेन एंड अगेन
ले. राजम कृष्णन
अनु. आर. बालचंद्रन
पृ. 183, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-4244-1

द हंट
ले. फणि महांति
अनु. जतींद्र मोहन महांति
पृ. 97, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-4256-2

एंथोलॉजी ऑफ़ बाङ्ला शॉर्ट स्टोरीज़
संपा. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 519, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-4254-8

ह्यूमेनिस्ट सोशल विजन ऑफ़ 'अ जंगल पोएट' (कन्नड कविता सचंयन कुवेम्पु)
अनु. एन. एस. रघुनाथ
पृ. 178, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-4852-2

गोरा (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. सुजीत मुखर्जी
पृ. 498, रु. 170/-
ISBN: 978-81-260-1801-7 (पुनर्मुद्रण)

दि कम्पलीट वर्क्स ऑफ़ कालिदास खंड II (पुनर्मुद्रण)
अनु. चंद्र राजन
पृ. 398, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-1484-2

23 हिंदी शॉर्ट स्टोरीज़
संपा. जैनेंद्र कुमार
पृ. 224, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0126-2 (पुनर्मुद्रण)

एन एसेंस ऑफ़ इटर्निटी
(नवोदय शृंखला)
ले. अकुंश बनर्जी
पृ. 84, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5186-1

मोहम्मद मुजीब (विनिबंध)
ले. मेहर फ़ातिमा हुसैन
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5185-4

द विलेज वेल एंड अदर स्टोरीज़
ले. कोलकालुरी इनोक,
अनु. पी. जयालक्ष्मी
पृ. 248, रु.180/-
ISBN: 978-81-260-5145-8

द टावर एंड द सी
संक. एवं संपा. चिन्मय गुहा
पृ. 364, रु. 170/-
ISBN: 978-81-260-2922-8 (पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ असमीज़ लिटरेचर
ले. विरंची कुमार बरुआ
पृ. 210, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-2640-1 (पुनर्मुद्रण)

द सनसेट सोनाटा
(नवोदय शृंखला में कविता-संग्रह)
ले. रति अग्निहोत्री
पृ. 58, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-5095-6

पर्व (कन्नड उपन्यास)
ले. एस. एल. भैरप्पा
अनु. के. राघवेंद्र राव
पृ. 950. रु. 450/-
ISBN: 978-81-7201-659-3 (पुनर्मुद्रण)

एन आफ़्टर नून विद शकुंतला एंड अदर स्टोरीज़
ले. वैदेही, अनु. सुकन्या कानरल्ली
पृ. 228, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-4998-1

अब्दुल माजिद दरयाबंदी (विनिबंध)
ले. एवं अनु. सलीम किदवई
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5101-4

मॉडर्न इंडियन पोएट्री इन इंगलिश
संपा. के. अयप्पा पणिक्कर
पृ. 180., रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-123-9

कंटेंपरेरी कश्मीरी पोएट्री (1947-2010)
संक. अज़ीज हाज़िनी, अनु. शफ़ी शौक़
पृ. 134, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-5188-5

एंडलेस अडॉर्नमेंट
ले. प्रमोद कुमार महांति
अनु. मैरी महांति
पृ. 154, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-5099-4

इंटिमेट एज़ द स्काय
ले. सौरींद्र बारिक
अनु. रवींद्र के. स्वान
पृ. 70, रु. 75/-
ISBN: 978-81-260-4756-7 (पुनर्मुद्रण)

बाबासाहेब आंबडेकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
पृ. 90, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-152-9 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदी
ले. यारलागड्डा लक्ष्मी प्रसाद,
अनु. के. वी. पूर्णेश्वर राव
पृ. 260, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4257-9 (पुनर्मुद्रण)

संस्कृत इन द ट्वेंटी फ़र्स्ट सेंचुरी
संपा. सी. राजेंद्रन
पृ. 202, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-4783-3 (पुनर्मुद्रण)

कंटेंपरेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ इन इंगलिश
संक. शिव के. कुमार
पृ. 242, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-059-1 (पुनर्मुद्रण)

नेशनल बिब्लिओग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिटरेचर
प्रधान संपा. ज़ेड ए. बर्नी
संक. एवं ग्रंथसूचीकार—एम. शंकर रेड्डी
पृ.804, रु. 600/-
ISBN: 978-81-260-4954-7 (पुनर्मुद्रण)

भरत द नाट्यशास्त्र
ले. कपिला वात्स्यायन
पृ. 218, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-1808-9 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ टैगोर
संपा. एवं अनु. अभिताभ चौधुरी
पृ. 296, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-4568-6 (पुनर्मुद्रण)

ढोड़ाय चरित मानस
ले. सतीनाथ भादुड़ी
अनु. इप्शिता चंदा
पृ. 344, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-3333-1 (पुनर्मुद्रण)

मंटो माई लव (उर्दू रचना संचयन)
ले. सआदत हसन मंटो
अनु. हरीश नारंग
पृ. 236, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4752-9

कल्हण'स राजतरंगिणी
ले. रणजीत सीताराम पंडित
पृ. 784, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-1236-6 (पुनर्मुद्रण)

बिधर : ऑन द मूव
ले. भालचंद्र नेमाडे
अनु. संतोष भूमकर
पृ. 254, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-2845-0

कंटेंपरेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़-सीरीज़ I
(एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़)
(अकादेमी के विविध परामर्श मंडलों द्वारा चयनित)
पृ. 142, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-4690-4 (पुनर्मुद्रण)

कंटेंपरेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़-सीरीज़ II
(एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़)
संपा. भवानी भट्टाचार्य
पृ. 230, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-4691-1 (पुनर्मुद्रण)

कंटेंपरेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़-सीरीज़ III
(एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़)
(अकादेमी के विविध परामर्श मंडलों द्वारा चयनित)
पृ. 218, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-4692-8 (पुनर्मुद्रण)

कंटेंपरेरी इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़-सीरीज़ IV
(एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़)
संपा. शांतिनाथ के. देसाई
पृ. 310, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-4693-5 (पुनर्मुद्रण)

तेलुगु दलित पोएट्री टुडे
(तेलुगु दलित कविता संचयन)
संपा. थुम्मापुडी भारती
पृ. 170, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-4055-1

ए हाउस ऑन द आउटस्कर्ट्स एंड अदर स्टोरीज़
ले. देवराकोंडा बालगंगाधर तिलक
अनु. के. सुनीता रानी
पृ. 200, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260- 4843-3

मिसिंग फ़ॉक टेल्स (लोककथा संचयन)
संक. एवं संपा. टाबू टाईद
पृ. 184, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-4439-9

श्री रामायण दर्शनम्
ले. के. वी. पुट्टप्पा (कुवेम्पु)
अनु. शंकर मोकाशी पुणेकर
पृ. 684, रु. 560/-
ISBN: 978-81-260-1728-7

पेंसिल एंड अदर पोएम्स (कविता-संग्रह)
ले. जयंत परमार, अनु. निशात ज़ैदी
पृ. 160, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4330-9 (पुनर्मुद्रण)

ज़ूल
ले. भालचंद्र नेमाड़े
अनु. संतोष भूमकार
पृ. 274, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4063-6

मनोहर मालगाँउकर (विनिबंध)
ले. उषा बंदे
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5100-7

मिथ्स, लीजेंडस, कंसेप्ट्स एंड लिटरेरी एंटीक्यूटीज़ ऑफ़ इंडिया
ले. मनोज दास
पृ. 420, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5113-7

पतंजलि ऑफ़ योगसूत्राज़ (विनिबंध)
ले. चंद्रमौली एस. नायकर
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1285-5 (पुनर्मुद्रण)

ज़रीला
ले. भालचंद्र नेमाड़े
अनु. संतोष भूमकर
पृ. 348, रु. 230/-
ISBN: 978-81-260- 4062-9

द ऑवर ऑफ़ गॉड
संक. मनोज दास
पृ. 336, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-888-7 (पुनर्मुद्रण)

एस. राधाकृष्णन (विनिबंध)
ले. प्रेमा नंदकुमार
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-117-8 (पुनर्मुद्रण)

कस्तूरी मृग 289
ले. चेतन स्वामी
अनु. ज्योतिका एल्हांस
पृ. 88, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4253-1

माई फ़ादर्स फ्रेंड एंड अदर स्टोरीज़
ले. अशोकमित्रन
अनु. लक्ष्मी हॉम्स्टोर्म
पृ. 20, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-1347-0 (पुनर्मुद्रण)

क्रिएशन मिथ्स ऑफ़ द सेवेन ट्राइब्स ऑफ़ द नार्थ ईस्ट इंडिया
संपा. केरोलीन आर. मराक
पृ. 92, रु. 95/-
ISBN: 978-81-260-5103-8

द साउंड ऑफ़ फ़ॉलिंग लीव्स
ले. एवं अनु. कुर्रनतुलऐ हैदर
पृ. 250, रु. 120/-
ISBN: 978-81-7201-3 (पुनर्मुद्रण)

हरि दरयाणी दिलगीर
ले. मोती प्रकाश
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5132-8

इलाङ्बम नीलकांत (विनिबंध)
ले. लोङ्जम जॉयचंद्र सिंह
पृ. 77, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5163-2

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-6 (पुनर्मुद्रण)

कल्हण (विनिबंध)
ले. सोमनाथ धर
पृ. 86, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5201-2 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. प्रकाश चंद्र गुप्ता
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2428-5 (पुनर्मुद्रण)

कालिदास
ले. के. कृष्णमूर्ति
पृ. 140, रु. 80/-
ISBN: 978-81-7201-688-3

अभिनवगुप्त (पुनर्मुद्रण)
ले. जी. टी. देशपांडे
पृ. 180, रु. 90/-
ISBN: 978-81-260-2431-5

द अयोध्या कंटो ऑफ़ द रामायण
ले. कंबन; अनु. सी. राजगोपालाचारी
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5200-4 (पुनर्मुद्रण)

भास (विनिबंध)
ले. वी. वेंकटाचलम
पृ. 180, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-675-3 (पुनर्मुद्रण)

इन द शैडो ऑफ़ मेमोरीज़
ले. चंपा शर्मा; अनु. सुमन के. शर्मा
पृ. 110, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-5190-8

श्री अरविंद (विनिबंध)
ले. मनोज दास
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-595-4 (पुनर्मुद्रण)

फ़ॉक टेल्स ऑफ़ बिहार
ले. पी. सी. रॉय चौधुरी
पृ. 132, रु. 80/-
ISBN: 978-81-7201-629-6

उपरा
ले. लक्ष्मण माने; अनु. ए. के. कामत
पृ. 212, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0231-3 (पुनर्मुद्रण)

फ़ॉक टेल्स ऑफ़ निकोबार
ले. रॉबिन रॉयचौधुरी
पृ. 88, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-1299-2 (पुनर्मुद्रण)

द डॉउरी एंड अदर जापानी स्टोरीज़
संपा. एवं अनु. अनिता खन्ना
पृ. 120, रु. 115/-
ISBN: 978-81-260-5178-6 (पुनर्मुद्रण)

पिचामूर्ति'ज़ सेलेक्टेड शॉर्ट स्टोरीज़
संक. वेंकट स्वामीनाथन;
अनु. एस. थिल्लैनायकम
पृ. 288, रु.140/-
ISBN: 978-81-260-5216-5 (पुनर्मुद्रण)

कीरत बबानी (विनिबंध)
ले. मोहन गेहाणी
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5256-1

मनोहर राय सरदेसाई
ले. माधव बोरकर
पृ. 124, 50/-
ISBN: 81-260-5169-4

अ हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंगलिश लिटरेचर
संक. एवं संपा, एम. के. नाइक
पृ. 344, रु.150/-
ISBN: 978-81-260-1872-7 (पुनर्मुद्रण)

गुरु प्रसाद महांति (विनिबंध)
ले. जितेंद्र नारायण पटनायक
पृ. 74, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5213-4

लोटस ब्लूम्स इन द गार्डन ऑफ़ द ईस्ट
ले. एल. समरेंद्र; अनु. थ. रतनकुमार
पृ. 64, रु.70/-
ISBN: 978-81-260-5235-6

वाणीकांत काकती
ले. अनुराधा शर्मा
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5247-9

वाल्मीकि (विनिबंध)
ले. आई. पांडुरंग राव
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-680-7 (पुनर्मुद्रण)

एन एंथोलॉजी ऑफ़ इंडियन फ़ैंटेसी राइटिंग
संपा. मालाश्री लाल एवं दीपा अग्रवाल
पृ. 244, रु.175/-
ISBN: 978-81-260-5098-7

कंटेंपरेरी इंडियन पोएट्री इन इंगलिश
संपा. मोहन रामानन, अफ़ीफ़ा बानू, प्रमोद नायर
पृ. 244, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2670-8 (पुनर्मुद्रण)

ब्लैक विद 'इक्वल'
संपा. आलोक भल्ला एवं अंजु मख़ीजा
पृ. 130, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2423-0 (पुनर्मुद्रण)

रिफ़्लेक्शंस
ले. ललित मगोत्रा
अनु. सुमन के. शर्मा
पृ. 144, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5234-9 (पुनर्मुद्रण)

मीरा बाई (विनिबंध)
ले. उषा एस. नीलस्सोन
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0411-9 (पुनर्मुद्रण)

मिथ इन कंटेंपरेरी इंडियन लिटरेचर
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 300, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2841-2 (पुनर्मुद्रण)

जे. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
ले. शांता रामेश्वर राव
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1997-7 (पुनर्मुद्रण)

इस्मत चुग़ताई (विनिबंध)
ले. एम. असदुद्दीन
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0862-9 (पुनर्मुद्रण)

गोल्ड नगेट्स (पुनर्मुद्रण)
संक. एवं संपा. भ. कृष्णमूर्ति एवं सी. विजयश्री
पृ. 472, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-1930-4

ग्रोइंग अप एज़ ए वीमैन राइटर
संपा. जसबीर जैन
पृ. 530, 3. 300/-
ISBN: 978-81-260-2547-3 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब (विनिबंध) (पुनर्मुद्रण)
ले. एम. मुजीब
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-708-8

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी; अनु. जय रतन
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0863-6 (पुनर्मुद्रण)

पाश (विनिबंध)
ले. तेजवंत सिंह गिल
पृ. 110, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0776-9 (पुनर्मुद्रण)

द रामायण ट्रेडिशन इन एशिया
संपा. वी. राघवन
पृ. 728, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-2736-1

निस्सीम इज़ेकील (विनिबंध)
ले. शकुंलता भरवाणी
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2583-1 (पुनर्मुद्रण)

टेन शॉर्ट स्टोरीज़ (पुनर्मुद्रण)
ले. सुरेश जोशी
संपा. जे. बिरजेपाटिल
पृ. 80, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1159-9

सरस्वती चंद्र
ले. गोवर्धन त्रिपाठी
अनु. विनोद मेघाणी
पृ. 274, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2482-7

अ हिस्ट्री ऑफ़ उर्दू लिटरेचर
ले. अली जावेद ज़ैदी
पृ. 460. रु. 250/-
ISBN: 978-81-7201-291-5 (पुनर्मुद्रण)

जीव नरन दुरैक्कन्नन (विनिबंध)
ले. रामा गुरुनाथन
अनु. एन. मुरुगय्यन
पृ. 160, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5267-7

नारायण सुर्वे (विनिबंध)
ले. प्राची गुर्जरपाध्ये
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5170-0

नेशनल बिब्लिओग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन
लिटरेचर, द्वितीय शृंखला (1954-2000)
संपा. जेड. ए. बर्नी
संक. मिताली चटर्जी
पृ. 416, रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-5230-1

वी स्पीक इन चेंजिंग लैंग्वेजेज़
संपा. ई.वी. रामाकृष्णन एवं अनुज मखीजा
पृ. 282, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2673-9 (पुनर्मुद्रण)

नेटिविज़्म : एस्से इन क्रिटिसिज़्म
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. मकरंद परांजपे
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-0168-2 (पुनर्मुद्रण)

मॉडर्निज़्म एंड टैगोर
ले. अबु सैयद अयूब
अनु. अमिताभ राय
पृ. 224, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-851-1 (पुनर्मुद्रण)

मोइन अहसान जज़्बी (विनिबंध)
ले. मुश्ताक़ सदफ़
अनु. अ. नसीब ख़ान
पृ. 132, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5237-0

के. अयप्प पणिक्कर
ले. के. अयप्प पणिक्कर
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 254, 3. 250/-
ISBN: 978-81-260-4755-0

टेल्स ऑफ़ टुमॉरो
संक. राना नायर
पृ. 264, रु. 200/-
ISBN; 978-81-260-2350-9 (पुनर्मुद्रण)

राभा फ़ोक टेल्स
संक. जयकांत शर्मा
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2950-1 (पुनर्मुद्रण)

हब्बा ख़ातून (विनिबंध)
ले. एस.एल. साधु
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1954-0 (पुनर्मुद्रण)

क्रिएटिव एस्पेक्टस ऑफ़ इंडियन इंग्लिश
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. शांतिनाथ के. देसाई
पृ. 174, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-924-2 (पुनर्मुद्रण)

रिफ़्लेक्शंस एंड वेरिएशंस ऑन द महाभारत
संपा. टी.आर.एस. शर्मा
पृ. 390. रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-2671-5 (पुनर्मुद्रण)

द ब्लाइंड एलि
ले. अखिल मोहन पटनायक
अनु. चंद्रमौली नारायणस्वामी
पृ. 174 रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-17912-8 (पुनर्मुद्रण)

चतुरंग
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर अनु. अशोक मित्र
पृ. 92, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-400-1 (पुनर्मुद्रण)

अनरिटेन लेंग्वेज़िज़ ऑफ़ इंडिया
संपा. अन्विता अब्बी
पृ. 214, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260- 5266-0

बलवंत सिंह सेलेक्टड शॉर्ट स्टोरीज़
संक. एवं संपा. गोपीचंद नारंग
अनु. जय रतन
पृ. 306, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-687-6

द महाभारत रीविज़िटेड
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. आर. एन. दांडेकर
पृ. 306, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2872-6 (पुनर्मुद्रण)

अर्ली नोवेल्स इन इंडिया
संपा. मीनाक्षी मुखर्जी
पृ. 278, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-1342-5 (पुनर्मुद्रण)

इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़ (1900-2000)
संपा. ई. वी. रामाकृष्णन
पृ.536. रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-1091-2 (पुनर्मुद्रण)

इंडियन पोएट्री मॉडर्निज़्म एंड आफ्टर
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. के. सच्चिदानंदन
पृ. 370, रु.200/-
ISBN: 978-81-260-1091-2 (पुनर्मुद्रण)

जीवनस्मृति
ले. सीतादेवी खडेंजा
अनु. पूरबी दास एवं रत्नमाला स्वैन
पृ. 136, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4892-2 (पुनर्मुद्रण)

गुजराती

मालिनी
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर, अनु. शैलेश पारिख
पृ.48
ISBN: 978-81-260-4680-0

सामान्य असामान्य
ले. ब्रजनाथ रथ, अनु. रेणुका सोनी
पृ. VIII+72, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4922-6

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
अनु. आलोक गुप्त एवं गार्गी शाह
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5191-5

हुन आम गढ़ायो
ले. भालचंद्र मुंगेकर
अनु. अश्विनी एस. बापत
पृ. 228, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4921-6

हिंदी

सुनो कहानी
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ. 60, रु. 25/-
ISBN: 978-81-7201-092-3 (पुनर्मुद्रण)

मोरों वाला बाग़
ले. अनिता देसाई; अनु. विमला मोहन
पृ. 39, रु. 30/-
ISBN: 978-81-7201-491-0 (पुनर्मुद्रण)

जलपरी का मायाजाल
ले. वेबस्टर डेविस जीरवा
अनु. अलमा सोहिल्या
पृ.48, रु. 30/-
ISBN: 978-81-260-1817-8 (पुनर्मुद्रण)

बिल्ली हाउस बोट पर
ले. अनिता देसाई
अनु. विमला मोहन
पृ. 32, रु. 25/-
ISBN: 978-81-7201-492-9 (पुनर्मुद्रण)

सुकुमार राय : चुनिंदा कहानियाँ
ले. सुकुमार राय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 78, रु. 30/-
ISBN: 978-81-260-1415-6 (पुनर्मुद्रण)

सबद
(साहित्य अकादेमी एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित विश्व काव्योत्सव के अंतर्गत भारतीय तथा विदेशी कवियों द्वारा प्रस्तुत कविताओं का संकलन)
संपा. मंगलेश डबराल
पृ. 188, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-4689-8

भारतीय बाल साहित्य
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 618, रु. 450/-
ISBN: 978-81-260-4566-2

क्षमा देवी राव (विनिबंध)
ले. राधावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4989-9 (पुनर्मुद्रण)

मुरझाए वृक्ष (पुरस्कृत नेपाली उपन्यास)
ले. प्रेम प्रधान
अनु. ओम नारायण गुप्ता
पृ. 152, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-4557-0

टीका स्वयंवर
ले. भालचंद्र नेमाड़े
अनु. सूर्यनारायण रणसुभे
पृ. 392, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260- 4993-6

केसरी सिंह बारहट (विनिबंध)
ले. फतेह सिंह मानव
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1617-4 (पुनर्मुद्रण)

मछुआरे
ले. तकषी शिवशंकर पिल्लै
अनु. भारती विद्यार्थी
पृ. 168, रु. 75/-
ISBN: 978-81-260-2609-8 (पुनर्मुद्रण)

पाँच दशक
ले. डी. एस. राव
अनु. भारत भारद्वाज
पृ. 352, रु. 650/-
ISBN: 978-81-260-4995-0

हजारी प्रसाद द्विवेदी (विनिबंध)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 94, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0016-6 (पुनर्मुद्रण)

परम अभिचंदाणी
ले. नामदेव ताराचंदाणी
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4916-5

केतु विश्वनाथ रेड्डी की कहानियाँ
ले. केतु विश्वनाथ रेड्डी
अनु. चागंति तुलसी
पृ. 251, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260- 4791-8

मॉरिशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य
संपा. विमलेश कांति वर्मा
पृ. 475, रु. 320/-
ISBN: 978-81-260-4985-1

एक ग्रामीण नदी
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
अनु. वी. पद्मावती
पृ. 105, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260- 5055-0

पहाड़ गाथा (कहानी-संग्रह)
संक. एवं संपा. सुदर्शन वशिष्ठ
पृ. 480, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-4994-3

हरिवंश राय बच्चन रचना-संचयन
संक. एवं संपा. अजित कुमार
पृ. 544, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-4767-3

सुधार घर (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. मित्र सेन मीत
अनु. किरण बंसल
पृ. 312, रु.225/-
ISBN: 978-81-260-4986-8

मोहन राकेश (विनिबंध)
ले. प्रतिभा अग्रवाल
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2607-4 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. एवं अनु. प्रभाकर माचवे
पृ. 55, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2426-1 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. एम. मुजीब, अनु. रमेश गौड़
पृ. 97, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0424-9 (पुनर्मुद्रण)

सूर्यकांत त्रिपाटी 'निराला' (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 95, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260- 2736 (पुनर्मुद्रण)

समकालीन हिंदी कविता (संचयन)
संपा. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 267, रु. 115/-
ISBN: 978-81-260-2739-2 (पुनर्मुद्रण)

तौशाली की हंसो
ले. जसवंत सिंह कँवल
अनु. रणजीत कौर
पृ. 248, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5057-9

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-I)
संपा. कमलेश्वर
पृ. 498, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5049-5

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-II)
संपा. कमलेश्वर
पृ. 498, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5050-5

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-III)
संपा. कमलेश्वर
सहायक : गायत्री कमलेश्वर
पृ. 340, रु. 275
ISBN: 978-81-260-5051-2

बीसवीं सदी की हिंदी कथा यात्रा (खंड-IV)
संपा. कमलेश्वर
सहायक : गायत्री कमलेश्वर
पृ. 368, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5052-9

पाकिस्तानी कहानियाँ
ले. इंतिज़ार हुसैन एवं आसिफ़ फ़ारुक़ी
अनु. अब्दुल बिस्मिल्लाह
पृ. 312, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-1199-5 (पुनर्मुद्रण)

मैथिलीशरण गुप्त (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-756-9 (पुनर्मुद्रण)

सुगम हिंदी ज्ञानेश्वरी
ले. संत ज्ञानेश्वर
अनु. मोरेश्वर गणेश तपस्वी
पृ. 852. रु.300/-
ISBN: 987-81-7201-756-9 (पुनर्मुद्रक)

फ़िनिक्स की राख़ से उगा मोर (हिंदी)
ले. जयंत पवार, अनु. प्रकाश भातंब्रेकर
पृ. 172, रु. 145/-
ISBN: 978-81-260-5064-2

आँख हृदय के हरियल सपने (हिंदी)
ले. आईदान सिंह भाटी
अनु. जेठमल एच. मारू
पृ. 136, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-5059-8

महाकंपन
ले. दर्शन बुट्टर
अनु. राजेंद्र तिवारी
पृ. 140, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-5065-9

श्री नारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
अनु. एच. बालसुब्रह्मणियम
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5061-1

ईसुरी (विनिबंध)
ले. अयोध्या प्रसाद कुमुद
पृ. 148 रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5062-8

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
पृ.106, रु. 50/-
ISBN: 81-7201-658-1 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधि कश्मीरी कहानियाँ
संपा. अज़ीज हाज़िनी
अनु. बीना बुडकी
पृ. 98, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4742-0

घर
ले. कुँवर वियोगी
अनु. छत्रपाल
पृ. 68, रु. 85/-
ISBN: 978-81-260-5194-6

तुकाराम (विनिबंध)
ले. भालचंद्र नेमाड़े
अनु. चंद्रकांत पाटिल
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1914-4 (पुनर्मुद्रण)

श्री अरविंद (विनिबंध)
ले. मनोज दास, अनु. सदाशिव द्विवेदी
पृ.96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2601-2 (पुनर्मुद्रण)

त्रिलोचन (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3188-7 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद (विनिबंध)
ले. कमल किशोर गोयनका
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4023-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ की कहानियाँ, खंड I
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. राम सिंह तोमर
पृ. 364, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-0323-5 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ की कहानियाँ, खंड II
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. कणिका तोमर
पृ. 272, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1409-1 (पुनर्मुद्रण)

यशपाल (विनिबंध)
ले. कमला प्रसाद
पृ. 74, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2729-3 (पुनर्मुद्रण)

सर्वपल्ली राधाकृष्णन (विनिबंध)
ले. प्रेमानंद कुमार
अनु. जवाहलाल द्विवेदी
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0435-5 (पुनर्मुद्रण)

मुक्तिबोध (विनिबंध)
ले. नंद किशोर नवल
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0018-0 (पुनम्मुद्रण)

गोस्वामी तुलसीदास (विनिबंध)
ले. रामजी तिवारी
पृ. 140, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0517-3 (पुनर्मुद्रण)

अवतार चरित्र, खंड I
ले. बारहठ नरहरिदास
संपा. भँवरदान रतनू 'मधुकर'
पृ. 726, रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-4885-4

अवतार चरित्र, खंड II
ले. बारहठ नरहरिदास
संपा. भँवरदान रतनू 'मधुकर'
पृ. 81, रु. 765/-
ISBN: 978-81-260-4886-1

आदिम बस्ती
(प्राकृत नेपाली कविता-संग्रह)
ले. मनप्रसाद सुब्बा
अनु. बीना क्षेत्री
पृ. 120, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-5074-1

क्रांति कल्याण
ले. बी. पुट्टासामैया
अनु. एन. डी. कृष्णमूर्ति
पृ. 328, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5083-3

कारा
ले. वनीरा गिरि
अनु. प्रदीप बिहारी
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5066-6

मुनि जिनविजय (विनिबंध)
ले. माधव हाड़ा
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5180-9

ओ. एन. वी. कुरुप. प्रतिनिधि कविताएँ
ले. ओ.एन. वी. कुरुप
अनु. पी. लता
पृ. 112, रु. 145/-
ISBN: 978-81-260-5076-5

अंडमान तथा निकोबार की लोककथाएँ
संक. एवं संपा. डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी
पृ. 132, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2542-5 (पुनर्मुद्रण)

समकालील हिंदी ग़ज़ल संग्रह
संक. एवं संपा. माधव कौशिक
पृ. 240, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-4019-3 (पुनर्मुद्रण)

सुदामा पांडे 'धूमिल' (विनिबंध)
ले. अवधेश प्रधान
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2893-1 (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मीनारायण मिश्र का रचना संसार
(संगोष्ठी के आलेख)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 120, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-2556-5 (पुनर्मुद्रण)

उल्लंघन
ले. प्रतिभा राय
अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ. 264, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-2857-3(पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधि नेपाली कहानियाँ
संपा. दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ
पृ. 158, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260- 5056-7

विचित्रवर्ण
ले. रवि पटनायक
अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ. 144, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-2140-6 (पुनर्मुद्रण)

अंधी गली
ले. अखिल मोहन पटनायक
अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ. 144, रु.120/-
ISBN: 978-81-7201-767-5 (पुनर्मुद्रण)

सुमित्रा कुमारी सिनहा (विनिबंध)
ले. अभिताभ राय
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5182-3

अंबिका प्रसाद वाजपेयी (विनिबंध)
ले. कुमुद शर्मा
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5104-5

अब मुझे सोने दो
ले. पी.के. बालकृष्णन
अनु. जी. गोपीनाथन
पृ. 180. रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-5071-0

फ़ीजी का सृजनात्मक हिंदी साहित्य
संपा. विमलेश कांति वर्मा
पृ. 296, रु. 140/-
ISBN:978-81-260-4001-8 (पुनर्मुद्रण)

लक्ष्मीनारायण मिश्र (विनिबंध)
ले. जय शंकर त्रिपाठी
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0508-6 (पुनर्मद्रण)

भारत भूषण अग्रवाल (विनिबंध)
ले. मूलचंद गौतम
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0952-7 (पुनर्मुद्रण)

रामकुमार वर्मा (विनिबंध)
ले. कृष्ण चंद्र लाल
पृ. 122, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5073-4

सिर्फ़ घास नहीं
(नवोदय के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. राहुल राजेश
पृ. 152, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4016-2 (पुनर्मुद्रण)

केशव प्रसाद पाठक (विनिबंध)
ले. सत्येंद्र शर्मा
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260- 5210-3

हिंदी कहानी संग्रह
संक. एवं संपा. भीष्म साहनी
पृ. 384, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-657-9 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड I)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे,
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2676-0 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड II)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 88, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2678-4 (पुनर्मुद्रण)

जंगल की एक रात
ले. लीलावती भागवत
अनु. अरुंधती देवस्थले
पृ. 48, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0228-3 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली लोक कथाएँ (खंड I)
अनु. प्रकाश प्रसाद उपाध्याय
पृ. 88, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2673-9 (पुनर्मुद्रण)

वनदेवी
ले. कल्वी गोपालकृष्णन
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 56, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-576-3 (पुनर्मुद्रण)

मनास
अनु. वरयाम सिंह
पृ. 288, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-0257-3 (पुनर्मुद्रण)

बुलबुल की क़िताब
ले. उपेंद्र किशोर रायचौधुरी
अनु. स्वप्न दत्ता
पृ. 76, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-481-0 (पुनर्मुद्रव)

जंगल टापू
ले. जसबीर भुल्लर
अनु. शांता ग्रोवर
पृ. 64, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-482-7 (पुनर्मुद्रण)

सूरज और मोर
ले. वेबस्टर डेविस जीरवा
अनु. अलमा सोहिल्या
पृ. 71, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1818-5 (पुनर्मुद्रण)

तीर्थ बसंत (विनिबंध)
ले. एम. के. जेटली
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5138-0

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-I)
संपा. एवं संक. कमल किशोर गोयनका
पृ. 560, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2942-6 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-II)
संपा. एवं संक. कमल किशोर गोयनका
पृ. 496, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2943-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-III)
संपा. एवं संक. कमल किशोर गोयनका
पृ. 538, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2944-0 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-IV)
संपा, एवं संक, कमल किशोर गोयनका
पृ. 524, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2945-7 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-V)
संपा. एवं संक. कमल किशोर गोयनका
पृ. 470, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2946-4 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद कहानी रचनावली (खंड-VI)
संपा. एवं संक.कमल किशोर गोयनका
पृ. 668. रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2947-1 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (खंड-II)
संक. अमृत राय
पृ. 98, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-993-8 (पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह (खंड-I)
संक. एवं संपा. जयमंत मिश्र
अनु. रेखा व्यास
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1219-0 (पुनर्मुद्रण)

सुमित्रानंदन पंत (विनिबंध)
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0428-7 (पुनर्मुद्रण)

अबुल कलाम आज़ाद (विनिबंध)
ले. अब्दुल कावी डेज़नवी
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 128, रु. 104/-
ISBN: 978-81-260-1408-8 (पुनर्मुद्रण)

रसलीन (विनिबंध)
ले. कैलाश नारायण तिवारी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3228-0 (पुनर्मुद्रण)

दलित कहानी संचयन
संपा. रमणिका गुप्ता
पृ. 400, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-1700-3 (पुनर्मुद्रण)

नागार्जुन रचना संचयन
संपा एवं संक. राजेश जोशी
पृ. 328, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-1907-6 (पुनर्मुद्रण)

प्रतिनिधि आप्रवासी हिंदी कहानियाँ
संक. एवं संपा. हिमांशु जोशी
पृ. 472, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-2349-3 (पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब और उनका युग
ले. पवन कुमार वर्मा
अनु. निशात ज़ैदी
पृ. 240, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2554-1 (पुनर्मुद्रण)

छह बीघा ज़मीन
ले. फ़कीरमोहन सेनापति
अनु. युगजित नवलपुरी
पृ. 144, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2129-1 (पुनर्मुद्रण)

मुक्ति स्वप्न
ले. होस्से रेसाल, अनु. प्रयाग शुक्ल
पृ. 360, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-1905-2 (पुनर्मुद्रण)

महादेवी वर्मा (विनिबंध)
ले. जगदीश गुप्त
पृ. 164, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-474-2(पुनर्मुद्रण)

आधुनिक भारतीय कविता संचयन
संक. एवं संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं रेवती रमण
पृ. 248, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-4012-4(पुनर्मुद्रण)

बौद्ध संग्रह
संपा. नलिनाक्ष दत्त
अनु. राममूर्ति त्रिपाठी
पृ. 144, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-344-8 (पुनर्मुद्रण)

सादा लिफ़ाफ़ा
ले. मति नंदी, अनु. सिद्धेश
पृ. 108, रु. 120/-
ISBN: 978-81-7201-523-7 (पुनर्मुद्रण)

आंगलियात
ले. जोसफ़ मैकवॉन
अनु. मदन मोहन शर्मा
पृ. 184, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-1903-8 (पुनर्मुद्रण)

अब भी बसंत को तुम्हारी ज़रूरत है
ले. रिल्के, संपा. एवं अनु. अनामिका
पृ. 84, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1899-4 (पुनर्मुद्रण)

भाई वीर सिंह (विनिबंध)
ले. हरबंस सिंह
अनु. प्रदीप मांडव
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0429-4 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (भाग-I)
सं. अमृत राय
पृ. 98, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-975-9 (पुनर्मुद्रण)

चंद्र पहाड़
ले. विभूति भूषण बंधोपाध्याय
अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 120, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-575-6 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य (भाग-I)
संक. एवं संपा. क्षितिज राय एवं लीला मजुमदार
अनु. युगजित नवलपुरी
पृ. 146, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-0009-8 (पुनर्मुद्रण)

गणनायक
ले. साकेतानंद, अनु. प्रतिमा पांडे
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-2521-3 (पुनर्मुद्रण)

राजा शिवप्रसाद सितारै-हिंद
(विनिबंध)
ले. वीर भारत तलवार
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2047-8 (पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानियाँ
संक. एवं अनु. गौरी शंकर रैना
पृ. 184, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5075-8 (पुनर्मुद्रण)

अँधेरे में अपना चेहरा
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. नगेन सइकिया
अनु. सत्यदेव प्रसाद
पृ. 128, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-1289-3 (पुनर्मुद्रण)

किसे कहते हैं नाट्यकला?
ले. शंभु मित्र, अनु. प्रतिभा अग्रवाल
पृ. 48, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-679-1 (पुनर्मुद्रण)

शिक़स्ता बुतों के दरमियान
ले. एवं अनु. सलाम बिन रज़ाक
पृ. 248, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-2499-5 (पुनर्मुद्रण)

शृंखल
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. भवेंद्रनाथ सइकिया
अनु. पापोरी गोस्वामी
पृ. 176, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2879-9 (पुनर्मुद्रण)

किशोरी लाल गोस्वामी (विनिबंध)
ले. गरिमा श्रीवास्तव
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5215-8

दो गज़ ज़मीन
ले. एवं अनु. अब्दुस्समद
पृ. 204, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-775-0 (पुनर्मुद्रण)

बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' (विनिबंध)
ले. भारतेंदु मिश्र
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5214-1

गुरु गोविंद सिंह (विनिबंध)
ले. महीप सिंह
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0330-3 (पुनर्मुद्रण)

जंगल-कथा
ले. होरासियो किरोगा
अनु. प्रीति पंत
पृ. 60, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2555-8 (पुनर्मुद्रण)

वैदिक संस्कृति का विकास
ले. मोरेश्वर दिनकर पराड़कर
अनु. तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी
पृ. 360, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-2170-3 (पुनर्मुद्रण)

वेदशास्त्र संग्रह
संपा. विश्वबंधु
अनु. प्रभुदयालु अग्निहोत्री
पृ. 524, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-1023-3 (पुनर्मुद्रण)

रेणु रचना संचयन
संक. एवं संपा. भारत यायावर
पृ. 336, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-0433-1 (पुनर्मुद्रण)

सुर्ख़ तवी का सच
ले. आतमजीत, अनु. बलराम
पृ. 72, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-3094-1 (पुनर्मुद्रण)

अग्निसाक्षी
ले. ललितांबिका अंतर्जनम
अनु. सुधांशु चतुर्वेदी
पृ. 100, रु. 100/-
ISBN: 978-81-7201-764-4 (पुनर्मुद्रण)

गुबार-ए-ख़ातिर
ले. मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'
पृ. 290, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-0010-4 (पुनर्मुद्रण)

नेमिचंद्र जैन (विनिबंध)
ले. ज्योतिष जोशी
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2345-5 (पुनर्मुद्रण)

पृथ्वी की पीड़ा
ले. जोगेश दास, अनु. सत्यदेव प्रसाद
पृ. 224, रु. 150/-
ISBN: 978-81-7201-676-0 (पुनर्मुद्रण)

मास्टर दीनदयाल (बाल साहित्य)
ले. परशुराम शुक्ल
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-4014-8 (पुनर्मुद्रण)

चंदवरदाई (विनिबंध)
ले. शांता सिंह
पृ. 76, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0865-0 (पुनर्मुद्रण)

ओथेलो
ले. शेक्सपीयर
अनु. दिवाकर प्रसाद विद्यार्थी
पृ. 124, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2150-5 (पुनर्मुद्रण)

कृश्न चंदर (विनिबंध)
ले. जीलानी बानो
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 60, रु. 50/-
ISBN: 978-81-7201-147-5 (पुनर्मुद्रण)

आज-कल-परसों
ले. राजमोहन झा
अनु. शुभंकर मिश्र
पृ. 144, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2382-0 (पुनर्मुद्रण)

पितरों के हाड़
ले. नवकांत बरुआ
अनु. नवारुण वर्मा
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1031-8 (पुनर्मुद्रण)

राम पंजवाणी
ले. जगदीश लछाणी
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5270-7 (पुनर्मुद्रण)

विद्यापति (विनिबंध)
ले. रमानाथ झा
अनु. महेंद्र कुमार वर्मा
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1708-9 (पुनर्मुद्रण)

पाटदेई
ले. वीणापाणि महांति
अनु. दीप्ति प्रकाश
पृ. 114, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-1680-8 (पुनर्मुद्रण)

शाहज़ादा दाराशिक़ोह (खंड-I)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 548, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-0744-8 (पुनर्मुद्रण)

शाहज़ादा दाराशिक़ोह (खंड-II)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ममता खरे
पृ. 558, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-0744-8 (पुनर्मुद्रण)

हिमाचली (विनिबंध)
ले. मोलूराम ठाकुर
पृ. 128, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-3229-7 (पुनर्मुद्रण)

ठाकुर गोपालशरण सिंह (विनिबंध)
ले. सत्येंद्र शर्मा
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2349-3 (पुनर्मुद्रण)

ग्यारह लातिन अमेरिकी कहानियाँ
संक. एवं संपा. राजीव सक्सेना
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5211-0 (पुनर्मुद्रण)

बाद-ए-सबा का इंतज़ार
ले. मुहम्मद अशरफ़
अनु. सीमा सगीर
पृ. 168, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2415-4 (पुनर्मुद्रण)

बलवंत सिंह की श्रेष्ठ कहानियाँ
संक. एवं संपा. गोपी चंद नारंग
अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 304, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-0180-4 (पुनर्मुद्रण)

दीवारों से पार आकाश
ले. कुंदनिका कापड़िया
अनु. नंदिनी मेहता
पृ. 276, रु. 200/-
ISBN: 978-81-7201-030-0 (पुनर्मुद्रण)

स्वतंत्रता के पश्चात सिंधी नयी कविता के संचयन
संपा. प्रेम प्रकाश
पृ. 332, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5135-9 (पुनर्मुद्रण)

फुलवाड़ी, (खंड-10)
ले. विजयदान देथा
अनु. कैलाश कबीर
पृ. 208, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2049-2 (पुनर्मुद्रण)

अँधेरे में सुलगती वर्णमाला
ले. सुरजीत पातर, अनु. चमन लाल
पृ. 200, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2859-7 (पुनर्मुद्रण)

कन्नड लोक कथाएँ
संक. सिंपी लिंगण्णा एवं
जे.एस. परमशिवय्या
अनु. बी.आर. नारायण
पृ. 222, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5259-2 (पुनर्मुद्रण)

अनुवाद के सिद्धांत
ले. रा. रामचंद्र रेड्डी
अनु. जे.एल. रेड्डी
पृ. 180, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-0511-6 (पुनर्मुद्रण)

वैकम मुहम्मद बशीर (विनिबंध)
ले. एम.एन. कर्शेरी
अनु. के.एम. मालती
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5238-7 (पुनर्मुद्रण)

साहित्य सिद्धांत विमर्श (खंड-I)
संपा. रीतारानी पालीवाल
पृ. 576, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5081-9

साहित्य सिद्धांत विमर्श (खंड-II)
संपा. रीतारानी पालीवाल
पृ. 608, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5082-6 (पुनर्मुद्रण)

भोजपुरी (विनिबंध)
ले. नगेंद्र प्रसाद सिंह
पृ. 102, रु. 80/-
ISBN: 978-81-260-5179-3 (पुनर्मुद्रण)

वह लंबी खामोशी
ले. शशि देशपांडे
अनु. लक्ष्मीचंद जैन
पृ. 204, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-0642-7 (पुनर्मुद्रण)

कालाहांडी के वाचिक महाकाव्य
ले. महेंद्र कुमार मिश्र
अनु. दिनेश मालवीय
पृ. 468, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5176-2

लालन शाह फ़कीर के गीत
ले. लालन शाह फ़कीर
संपा. एवं अनु. मुचकंद दुबे
पृ. 376, रु. 500/-
ISBN: 978-81-260-5273-8

मेरा नाम है (बाल कहानियाँ)
ले. आबिद सुरती
पृ. 86, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5077-2

कन्नड

सिद्धरा माटू टेवाराम कवितैगळु
संपा. एस. कार्लोस
पृ. 72, रु. 65/-
ISBN : 978-81-260-4955-3

भविष्यतु कथैगळु
ले. राना नायर
अनु. एच.एस. मंजूनाथ
पृ. 296, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-5153-3

आलापने
(पुरस्कृत तमिऴ काव्य-संग्रह)
ले. अब्दुल रहमान
अनु. तमिऴ सेलवी
पृ. 128, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-4679-1

कवितै उदयिसिडगा (व्हेन पोएट्री कम्स : समकालीन बाङ्ला कवयित्रियों का काव्य-संचयन)
संपा. मरियन मैडर्न
अनु. लता गुत्थी
पृ. 152, रु. 105/-
ISBN : 978-81-260-4958-8

वेलाकिगिंथा बैलेज
कर्नाटक की वचन कवयित्रियाँ एवं मध्यकालीन आध्यात्मिक कवयित्रियों का नारीवादी विमर्श (टैगोर नेशनल रिसर्च फ़ैलोशिप के अंतर्गत)
ले. एम.एस. आशा देवी
पृ. 208, रु. 130
ISBN : 978-81-260-4959-1

कृष्णमूर्ति पुराणिक (विनिबंध)
ले. एस.एम. कृष्ण राव
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2508-0

जनवाणी बेरु
संक. एवं परिचय : सिद्धलिंगय्या
पृ. 384, रु. 95/-
ISBN : 978-81-260-4960-X

एम.वी. सीतारमय्या (विनिबंध)
ले. पी.वी. नारायण
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5207-3

के. कृष्णमूर्ति (विनिबंध)
ले. एवं अनु. के.जी. नारायण प्रसाद
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5206-6

बी. वेंकटाचार्य (विनिबंध)
ले. लक्ष्मण कोडासे
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5206-6

अद्भुत ग्रहद कथे मट्टु इतर कथैगळु
ले. ताजिमा शिंजी
अनु. टी.एस. नागराज शेट्टी
पृ. 112, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5209-7

प्रपथ
ले. अरुण जोशी
अनु. बी. आर. जयरामराजे उर्स
पृ. 216, रु. 135/-
ISBN : 978-81-260-5254-6

नेरलीना रेखेगळु
ले. अमिताभ घोष
अनु. एम.एस. रघुनाथ
पृ. 252, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5252-X

रेवेरंड हर्मन मोग्लिंग (विनिबंध)
ले. दिनेश नायक
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5251-1

अलेया मोरेथा
ले. कल्कि, अनु. शशिकला राजा
पृ. 704, रु. 420/-
ISBN : 978-81-260-5250-3

कश्मीरी

अर्जन देव मजबूर (विनिबंध)
ले. प्रेमी रोमानी
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5085-7

सैयद मीराक शाह काशानी (विनिबंध)
ले. ईशान शालीमारी
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-8085-7

अख़ हाथ अख़ नज़्मे
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. शफ़ाकत अल्ताफ़
पृ. 304, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4963-9

मिसिंग क़बीला चु लुक कथ
संक. एवं अनु. टाबूराम टाईद
पृ. 216, रु. 310/-
ISBN: 978-81-260-2129-1 (पुनर्मुद्रण)

पीर गुलाम हसन शाह खोयाहामी (विनिबंध)
ले. अब्दुल अहद हाज़िनी
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5232-5

मीर गुलाम रसूल नाज़्की (विनिबंध)
ले. अज़ीज़ हाज़िनी
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5231-8

लद्दाखिच चट्ठे
ले. भवानी भट्टाचार्य
अनु. शफ़ी शौक़
पृ. 444, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-1365-9 (पुनर्मुद्रण)

वारिस शाह (विनिबंध)
ले. गुरचरण सिंह
अनु. अज़ीज़ हाज़िनी
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0455-3

ईडिपस
ले. सोफ़ोक्लीज़
अनु. नाजी मुनब्बर
पृ. 154, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-0694-6 (पुनर्मुद्रण)

शम्स फ़कीर (विनिबंध)
ले. शम्सुद्दीन अहमद
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1293-0 (पुनर्मुद्रण)

अब्दुल अहद ज़रगर (विनिबंध)
ले. गुलाम मोहम्मद शाह
पृ. 89, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0176-7 (पुनर्मुद्रण)

मायनिस दून्स चो वोनी सबज़ार
ले. रस्किन बॉण्ड, अनु. बशर बशीर
पृ. 240, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5286-8 (पुनर्मुद्रण)

कोंकणी

एका शहराचे मंथन
ले. ओ.पी. शर्मा 'सारथी'
अनु. शकुंतला भरने
पृ. 76, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4923-3

भारतीय साहित्यशास्त्र
(मराठी में काव्यशास्त्र पर लिखित निबंध)
ले. जी. डी. देशपांडे
अनु. प्रियदर्शिनी तडकोडकर
पृ. 632, रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-4920-2

कितने पाक़िस्तान
ले. कमलेश्वर, अनु. हेमा नायक
पृ. 400, रु. 225/-
ISBN : 978-81-260-5124-3

आगंतुक
ले. धीरूबेन पटेल
अनु. ज्योति कुंकोलिंबूकर
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5131-1

काल्लक निधुंक दिवचो न
ले. एन. गोपी
अनु. रमेश बी. वेलुरकर
पृ. 88, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5263-9

मनिसखयारो
ले. नानक सिंह
अनु. पांडुरंग गावडे
पृ. 392, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4924-0

मैथिली

हेरायल अर्थ (पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. निरंजन तसनीम, अनु. पंकज पराशर
पृ. 164, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4951-6

तत्त्वमसि (गुजराती उपन्यास)
ले. ध्रुव भट्ट, अनु. नरेश कुमार विकल
पृ. 184, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4941-7

कठपुतरीनाचक इतिकथा
(बाङ्ला उपन्यास)
ले. माणिक बंधोपाध्याय
अनु. राम लोचन ठाकुर
पृ. 210, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4953-0

मैथिली उपन्यासक विकास
संपा. अशोक अविचल
पृ. 274, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-5042-0

विद्यापति गीत रत्नावली
संक. एवं संपा. वीणा ठाकुर
पृ. 112, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5032-1

ओ समय (खंड-I)
ले. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. ताराकांत झा
पृ. 447, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5041-3

ओ समय (खंड-II) (बाङ्ला उपन्यास)
ले. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. ताराकांत झा
पृ. 616, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5114-4

हर्षनाथ झा (विनिबंध)
ले. उदयनाथ झा 'अशोक'
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5184-7

आधुनिक भारतीय कविता संचयन-हिंदी
संक. एवं संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं रेवती रमण
अनु. वीणा ठाकुर
पृ. 248, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5258-5

मैथिली प्रबंध-काव्यक उद्भव ओ विकास
(संगोष्ठी के आलेख)
संपा. वीणा ठाकुर
पृ. 192, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-52585

निवडक मराठी आत्मकथा
(मराठी में लिखित आत्मकथात्मक रचना-संकलन)
संक. एवं संपा. राम शेवालकर
पृ. 228, रु. 175/-
ISBN: 978-81-7201-464-3 (पुनर्मुद्रण)

अपन जे पाहतो
(समस्त हिंदी कविता-संग्रह)
ले. मंगलेश डबराल
अनु. बलवंत जेऊरकर
पृ. 72, रु. 60/-
ISBN : 81-260-2026-1 (पुनर्मुद्रण)

दोन ओलिंच्या दरम्यान
(समस्त हिंदी कविता-संग्रह)
ले. राजेश जोशी
अनु. बलवंत जेऊरकर
पृ. 108, रु. 80/-
ISBN : 81-260-2683-9 (पुनर्मुद्रण)

स्वरालय (पुरस्कृत तेलुगु निबंध-संग्रह)
ले. सामल सदाशिव
अनु. लक्ष्मीनारायण बोल्ली
पृ. 164, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4916-6

गुरु
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. वीणा अलासे
पृ. 52, रु. .....
ISBN : 978-81-260-4686-7

पानगळीची सळसळ
(उर्दू कहानी-संग्रह 'पतझर की आवाज़' का अनुवाद)
ले. कुर्रतुलऐन हैदर
अनु. डी.पी. जोशी
पृ. 244, रु. 175/-
ISBN : 81-7201-967-X (पुनर्मुद्रण)

अजुनी वाखाती झाड़े
ले. रस्किन बॉण्ड
अनु. शैला सायनाकर
पृ. 200, रु. 150/-
ISBN : 81-7201-956-4 (पुनर्मुद्रण)

फ़ु. शी. रेगे यांची निवडक कविता
संक. प्रकाश देशपांडे
पृ. 208, रु. 175/-
ISBN : 81-7201-262-4

वन-हंसी
ले. इब्सन
अनु. मामा वरेरकर
पृ. 140, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5127-4

प्रेमचंद : लेखनीचे शिलेदार
ले. अमृत राय
अनु. बलवंत जेऊरकर
पृ. 692, रु. 375/-
ISBN : 978-81-260-4926-4

अमृत आणि विष
ले. अमृतलाल नागर
अनु. उर्मिला जावड़ेकर
पृ. 524, रु. 250/-
ISBN: 978-81-7201-283-7 (पुनर्मुद्रण)

कारमेलीन
ले. दामोदर मावज़ो
अनु. नरेश कवडी
पृ. 248, रु. 185/-
ISBN: 978-81-260-5171-7 (पुनर्मुद्रण)

सात शिखर
ले. अख़्तर मोहिउद्दीन
अनु. दत्ता भगत
पृ. 56, रु. 125/-
ISBN: 978-81-260-5127-4 (पुनर्मुद्रण)

आरोग्य निकेतन
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. श्रीपाद जोशी
पृ. 396, रु. 200/-
ISBN : 81-260-1255-2

जीवी
ले. पन्नालाल पटेल
अनु. आनंदीबाई शिर्के
पृ. 216, रु. 150/-
ISBN : 81-260-1050-9

मामा वरेरकर (विनिबंध)
ले. सदा करहाड़े
अनु. राजा होलकुंडे
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5173-1

ज्ञानदेव
ले. पी.वाई. देशपांडे
अनु. विलास साळुंके
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5137-3

एनिमल फ़ॉर्म
ले. जॉर्ज ऑरवेल
अनु. श्रीकांत लागू
पृ. 90, रु. 75/-
ISBN : 81-7201-088-5 (पुनर्मुद्रण)

एस.वी. केतकर (विनिबंध)
ले. डी.पी. जोशी
अनु. मैत्रेयी एस. जोशी
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5134-2

सावरकर (विनिबंध)
ले. सुधाकर देशपांडे
अनु. शैलजा वाडिकर
पृ. 56, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5153-4

बाघा टापुरे राति
ले. अपूर्व शर्मा
अनु. ज्योत्स्ना बिस्वाल राउत
पृ. 172, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-4087-2 (पुनर्मुद्रण)

मंडन मिश्र
ले. उदयनाथ झा 'अशोक'
अनु. श्रीनिवास आचार्य
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-4971-4

भिजा भिजा ऋतु
ले. पल्लवी नायक
पृ. 91, रु. 100/-
ISBN: 978-81-260-5022-2

आदिवासी मौखिला साहित्य परंपरा
संक. एवं संपा. चित्रसेन पसायत
पृ. 144, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-4457-5 (पुनर्मुद्रण)

संताली लोक कहानी
संक. एवं संपा. जितेंद्रनाथ मुर्मु
अनु. दमयंती बेशरा
पृ. 140, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-5023-9

जगन्मोहन लाल चयनिका
संक. एवं संपा. विजयानंद सिंह
पृ. 264, रु. 240/-
ISBN: 978-81-260-5017-8

अस्पृश्य
ले. लक्ष्मण गायकवाड
अनु. अर्जुन सत्पथी
पृ. 216, रु. 140/-
ISBN: 978-81-260-2445-2 (पुनर्मुद्रण)

शाश्वत विवेकानंद एक संकलन
संक. एवं संपा. स्वामी लोकेश्वरानंद
अनु. श्रीनिवास मिश्र
पृ. 344, रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-5028-4

लघुकथा संग्रह, (खंड-I)
ले. विभिन्न लेखक
अनु. कनक मंजरी साहु
पृ. 128, रु. 110/-
ISBN: 978-81-260-5024-6

योगायोग
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
अनु. गोपीनाथ महांति
पृ. 222, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-1424-8 (पुनर्मुद्रण)

श्रद्धाकर सुपकर : कृति ओ कीर्ति
संक. एवं संपा. कृष्ण चंद्र प्रधान
पृ. 128, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-5165-6

श्रद्धाकर सुपकर चयनिका
संक. एवं संपा. कृष्ण चंद्र प्रधान
पृ. 272, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5166-3

अनंत पट्टनायक (विनिबंध)
ले. विजय कुमार सत्पथी
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-2503-9 (पुनर्मुद्रण)

अभिनव चंद्रगुप्त
ले. जयशंकर प्रसाद
अनु. कृष्ण चंद्र रथ
पृ. 152, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-2302-8 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

मेघदूत (कालजयी ग्रंथ)
ले. कालिदास
अनु. एवं टीका : चंदर मोहन सुनेजा
पृ. 96, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5091-8

कवाफी दी कविता
ले. सी. पी. कवाफी, अनु. इंदे
पृ. 136, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5090-1

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी, अनु. वरयाम मस्त
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5089-5

क्याप
ले. मनोहर श्याम जोशी
अनु. राजीव सेठ
पृ. 180, रु. 190/-
ISBN: 978-81-260-5088-4

किशन सिंह (विनिबंध)
ले. हरभजन सिंह भाटिया
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5088-8

संतोख सिंह धीर (विनिबंध)
ले. धनवंत कौर
पृ. 150, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5112-0

पढ़ाई
ले. के. कुटुंब राव, अनु. चंदन नेगी
पृ. 216, रु. 210/-
ISBN: 978-81-260-5189-2

मिल जुल मन
ले. मृदुला गर्ग, अनु. नछत्तर
पृ. 340, रु. 310/-
ISBN: 978-81-260-5221-9

मिथिलाक लोककथा संचय
संक. एवं संपा. योगानंद झा
पृ. 410, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-5115-1

उमानाथ झा (विनिबंध)
ले. विजय मिश्र
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5117-5

आधुनिक भारतीय कविता संचयन-सिंधी
संक. एवं संपा. वासदेव मोही
अनु. फूलचंद्र झा 'प्रवीण'
पृ. 208, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5043-7

मलयाळम्

चांडालिका
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. देसमंगलम रामाकृष्णन
पृ. 40
ISBN : 978-81-260-4853-3

रामधन्य चरिते
अनु. एम. रामा
पृ. 40, रु. 55/-
ISBN : 978-81-260-4956-1

सर्वज्ञानंते वचनानकल
संपा. एम. रामा
पृ. 124, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4957-X

नवीन तमिष़ चिरुकथकळ
ले. सा. कंदासामी
अनु. के.एम. वेंकटाचलम्
पृ. 272, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5142-7

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
अनु. सुधांशु चतुर्वेदी
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5192-2

नालापत बालमणि अम्मा (विनिबंध)
ले. सुलोचना नालापत
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5140-3

आर. नरेंद्र प्रसाद (विनिबंध)
ले. पी. शिव प्रसाद
पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5141-0

युगांतम
ले. महेश एलकुंचवार
अनु. कालियत दामोदरन
पृ. 264, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5143-4

अतिक्रमण
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. सुधाकरन रामंचाली
पृ. 632, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-5144-1

वाष़्वे
ले. गीता नागभूषणन
अनु. सी. राघवन
पृ. 528, रु. 480/-
ISBN : 978-81-260-5287-5

आधुनिक मलयाळा कविता
संक. डी. बेंजामिन
पृ. 215, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-5288-2

मणिपुरी

अतोपा लोंगिवारीमचा
संक. एवं संपा. एन. राजमोहन सिंह
पृ. 170, रु. 130/-
ISBN: 978-81-260-3107-8 (पुनर्मुद्रण)

थाबालगी चेइना
ले. करतार सिंह दुग्गल, अनु. सुबराम
पृ. 120, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-5177-9

फुंगतारी शिंगबुल
संक. एवं संपा. बी. जयंत कुमार शर्मा
पृ. 304, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-2651-7 (पुनर्मुद्रण)

अखन्नब मणिपुरी वारैंग
संक. एवं संपा. नोङ्मैथम नीलमणि सिंह
पृ. 416, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-2651-7

आवारा मसीहा
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. आई.एस. काङ्जम
पृ. 512, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5212-7

जुबार छेगी लेईबाक
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. माइबम तोलेन
पृ. 38, निःशुल्क
ISBN : 978-81-260-5160-1

मराठी

स्वातंत्र्योत्तर मराठी कविता (1961-80)
(स्वातंत्र्योत्तर मराठी कविता-संकलन)
संक. एवं संपा. टी.एस. कुलकर्णी
पृ. 244, रु. 155/-
ISBN : 81-7201-544-5 (पुनर्मुद्रण)

श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर (विनिबंध)
ले. एम.एल. वरदपांडे
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5202-8

साने गुरुजी (विनिबंध)
ले. जी.पी. प्रधान
अनु. दिलीप चव्हाण
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5202-8

हे तन्मय धूलि
ले. प्रतिभा सत्पथी
अनु. राधा जोगलेकर
पृ. 100, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5133-5

निबंधमाला (खंड-II)
ले. रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. मामा वरेरकर
पृ. 100, रु. 125/-
ISBN : 81-260-1268-4 (पुनर्मुद्रण)

निवडक फु. भा. भावे
संक. वसंत वरदपांडे एवं राम शेवालकर
पृ. 296, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-5134-2 (पुनर्मुद्रण)

चाफा
ले. चंद्रशेखर कंबार
अनु. संध्या देशपांडे
पृ. 60, रु. 60/-
ISBN: 978-81-260-1260-9 (पुनर्मुद्रण)

भर्तृहरि (विनिबंध)
ले. एम. श्रीमन्नारायण मूर्ति
अनु. श्रीप्रसाद बावड़ेकर
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN: 81-260-1772-4 (पुनर्मुद्रण)

महात्मा जोतिराव फुले (विनिबंध)
ले. भास्कर भोले
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 81-7201-728-6 (पुनर्मुद्रण)

गहण पडलेला रघु
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. कविता महाजन
पृ. 164, रु. 185/-
ISBN : 978-81-260-5268-4

शौर्यगाथा सौराष्ट्रची
ले. झवेरचंद मेघाणी
अनु. अंजनी नरवणे
पृ. 278, रु. 250/-
ISBN : 81-260-1039-8 (पुनर्मुद्रण)

अंतरातील स्फोट (बालसाहित्य)
ले. जयंत नारलीकर
पृ. 136, रु. 100/-
ISBN : 81-7201-422-8 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली

मृत्युंजय (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य
अनु. नवसापकोटा
पृ. 248, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-4931-8

जड़्म (पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. देवेंद्रनाथ आचार्य
अनु. चंद्रमणि उपाध्याय
पृ. 186, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4939-4

नउदाड़िगएको सत्य (नवोदय शृंखला)
ले. ललिता शर्मा
पृ. 96, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5045-1

भारतीय नेपाली नाटक
संपा. लक्ष्मण श्रीमल
पृ. 460, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-6036-9

ब्रह्मर्षि श्री नारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन, अनु. जॉर्ज ताड़तिल
पृ. 140, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5109-0

तिमि गए देखिन त्यो गाँउ (नवोदय)
ले. प्रेमराज मंग्राती
पृ. 88, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-5118-2

ओड़िया

केउंथि नाहिं सेईथि
ले. अशोक वाजपेयी
अनु. विद्युत प्रभा गंतायत
पृ. 165, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5016-1

कान्हू चरण चयनिका
संक. एवं संपा. मनोरंजन प्रधान
पृ. 488, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4215-9

ओड़िया कथा धारा
संक. एवं संपा. प्रतिभा राय
पृ. 336, रु. 200/-
ISBN: 978-81-260-3379-9 (पुनर्मुद्रण)

1950 परवर्ती ओड़िया कविता
संक. एवं संपा. भगवान जय सिंह
पृ. 260, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-4223-4 (पुनर्मुद्रण)

गुरु गोविंद सिंह (विनिबंध)
ले. महीप सिंह, अनु. चंद्र मोहन सुनेजा
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5244-8

सुब्रह्मण्य भारती दियां कवितावां
संक. एवं सं. प्रेमा नंदकुमार
अनु. मोहनजीत
पृ. 244, रु. 350/-
ISBN: 978-81-260-5233-2

धुआँ
ले. गुलजार, अनु. जुगिंदर अमर
पृ. 188, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5236-3

एक सी ठुनठुनिया
ले. प्रकाश मनु, अनु. सर्वजीत कौर सोहल
पृ. 108, रु. 160/-
ISBN: 978-81-260-5246-2

कथा एक प्रांत दी
ले. एस. के. पोटेक्काट
अनु. दविंदर संधु
पृ. 572, रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-5239-4

हरभजन सिंह (विनिबंध)
ले. सतिंदर सिंह
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5220-2

राजस्थानी

म्हानै चांद चाहीजै
ले. सुरेंद्र वर्मा, अनु. रवि पुरोहित
पृ. 602, रु. 650/-
ISBN: 978-81-260-5094-0

पखेरू
ले. रामलाल
अनु. परमेश्वर लाल प्रजापत
पृ. 184, रु. 230/-
ISBN: 978-81-260-4754-3

एक कीरी रो महाभारत
ले. गंगाधर गाडगील
अनु. कृष्णा जाखर
पृ. 732, रु. 590/-
ISBN: 978-81-260-5106-9

अवतार चंद्र, खंड-I
ले. बारहठ नरहरिदास, हिंदी व्याख्या : भँवरधन रतनू
पृ. 742, रु. 700/-
ISBN: 978-81-260-4885-4

अवतार चंद्र, खंड-II
ले. बारहठ नरहरिदास, हिंदी व्याख्या : भँवरधन रतनू
पृ. 820, रु. 765/-
ISBN: 978-81-260-4886-1

रवींद्रनाथ र लेख (खंड 2)
अनु. पूरन शर्मा पूरन
पृ. 378, रु. 425/-
ISBN: 978-81-260-5107-6

पुर्वा की उडीक
ले. सैयद मुहम्मद अशरफ़
अनु. विजय जोशी
पृ. 160, रु. 190/-
ISBN: 978-81-260-5105-2

बगत नई झक नी लेवां देवुंला
ले. एन. गोपी, अनु. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 120, रु. 145/-
ISBN: 978-81-260-5111-3

अंधारलोक
ले. भगवतीकुमार शर्मा
अनु. मदन सैनी
पृ. 432, रु. 400/-
ISBN: 978-81-260-5097-0

मेहा वीठू काव्य संचय
संपा. गिरधरदान रत्नू
पृ. 238, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5108-3

विजयदान देथा (विनिबंध)
ले. धनंजय अमरावत
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5110-6

वंश भास्कर
संपा. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 714, रु. 5000/-
(नौ खंडों का संपूर्ण सेट)
ISBN: 978-81-260-2490-2

संस्कृत

लघुकथासंग्रहः
संपा. जयमंत मिश्र
पृ. 284, रु. 165/-
ISBN: 978-81-7201-944-0 (पुनर्मुद्रण)

साहित्यरत्नकोषः काव्यनाटकसंग्रहः
(खंड 1, काव्य संग्रह)
संक. एवं संपा. वासुदेवशरण अग्रवाल एवं वी. राघवन
पृ. 306, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5226-4 (पुनर्मुद्रण)

साहित्यरत्नकोषः काव्यनाटकसंग्रहः
(खंड 2, नाटक संग्रह)
संक. एवं संपा. वासुदेवशरण अग्रवाल एवं वी. राघवन
पृ. 290, रु. 285/-
ISBN: 978-81-260-5227-1 (पुनर्मुद्रण)

द रघुवंश ऑफ़ कालिदास
संपा. रेवाप्रसाद द्विवेदी
पृ. 820, रु. 800/-
ISBN: 978-81-260-7201-13-8 (पुनर्मुद्रण)

संताली

हांसा रें होर
अनु. कृष्ण चंद्र सोरेन
ले. कालिंदीचरण पाणिग्रही
पृ. 92, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5037-6

आँचर (पुनर्मुद्रण)
ले. गणेश ठाकुर हांसदा
पृ. 144, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-3169-6

छत्रपति किस्कूराज (पुनर्मुद्रण)
ले. श्याम सुंदर हेम्ब्रम
पृ. 148, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2933-4

आकुत (नवोदय शृंखला)
ले. गणेश मरांडी
पृ. 128, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-5038-3

पंचानन मरांडी (विनिबंध)
ले. मदन मोहन टुडु
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-960-2934-1

अषाढ़ बिनती (पुनर्मुद्रण)
ले. नारायण सोरेन तोरेसुताम
संपा. राम सुंदर बास्के
पृ. 92, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-4038-4

संताली कहानी माला (पुनर्मुद्रण)
संपा. महादेव हांसदा
पृ. 280, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-2344-8

सिंधी

ईश्वर चंदर जूं चूंद कहानियूँ
संपा. ईश्वर भारती
पृ. 200, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4927-1

तमिऴ

गंधर्वन (विनिबंध)
ले. जानेसन,
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4831-1

काकीगलुम आयुल तांडनैयुम
(पुरस्कृत हिंदी कहानी-संग्रह कव्वे और कालापानी)
ले. निर्मल वर्मा
अनु. एस.एच. पद्मनाभन
पृ. 240, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4981-3

कदैशी नमस्कारम्
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *शेष नमस्कार*)
ले. संतोष कुमार घोष
अनु. भुवन नटराजन
पृ. 624, रु. 415/-
ISBN : 978-81-260-4982-0

कविज्ञर कन्नदासन (विनिबंध)
ले. एम. बालसुब्रमण्यम्
पृ. 50, रु. 128/-
ISBN : 978-81-260-1721-X

परुवम
ले. एस.एल. भैरप्पा
अनु. पवन्नन
पृ. 928, रु. 550/-
ISBN : 978-81-260-1438-5

थेरिन थेडुथ कंबदासन पुट्टुकल
संक. आर. संपत
पृ. 192, रु. 155/-
ISBN : 978-81-260-4977-6

कविमनि देसीगा विनायकम पिल्लैयिन कवितैगल
संक. एस. श्रीकुमार
पृ. 256, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4817-5

राजाजी (विनिबंध)
ले. आर. वेंकटेश
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5005-5

अलीलैयुम नेरकथिरूम
ले. के. सच्चिदानंदन
अनु. सिर्पी बालसुब्रमण्यम
पृ. ....., रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-5000-0

इद्रैया इंधिया इलक्कियम
(समकालीन भारतीय साहित्य)
अनु. ए.जी. वेंकटाचार्य
पृ. ..., रु. 250/-
ISBN: 978-81-260-1550-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ टैगोर
ले. शिशिर कुमार घोष
अनु. ए.ए. मानववल्लन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0828-5 (पुनर्मुद्रण)

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर
(विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्रराव
अनु. अरु. मरुतदुरै
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0828-5

पम्मल सबंद मुद्लियार (विनिबंध)
ले. ए. एन. पेरुमल
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5004-8 (पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
अनु. टी. वेंकटकृष्णायंगर
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5003-1 (पुनर्मुद्रण)

पेरियालवार (विनिबंध)
ले. एम.पी. श्रीनिवासन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-5003-1 (पुनर्मुद्रण)

वष़ीकट्टी
ले. आर.के. नारायन
टी.आर. श्रीधर धरणीधरन
पृ. 390, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-5007-9 (पुनर्मुद्रण)

नवीन तमिष़ चिरुकथैगल
संपा. सा. कंदास्वामी
पृ. 390, रु. 175/-
ISBN: 978-81-260-0891-1 (पुनर्मुद्रण)

नूरु वदमोष़ी कथैगल
ले. पद्‌म शास्त्री
अनु. अलमेलु कृष्णन
पृ. 256, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5001-7

सिरकादिका असै
ले. डी. सुजाता देवी
अनु. के.एम.के. इलंगो
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5001-7

चेम्मीन
ले. शिवशंकर पिल्लै
अनु. सुंदर रामस्वामी
पृ. 352, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0713-3

अमृतलाल नागर (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
अनु. एच. बालसुब्रमण्यम
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5175-5

पय्यन कथैगल
ले. वदक्के कूट्टल नारायण मूर्ति नायर
अनु. एम. कलैसेलवन
पृ. 752, रु. 365/-
ISBN : 978-81-260-5014-7

कविञ्ञर बाला
ले. सी. सेतुपति
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5198-4

मोहना ओ मोहना मातरुन सिल कवितैगल
ले. के. शिवा रेड्डी
अनु. शांता दत्त
पृ. 112, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-5197-7

किष़क्कु-मेर्कु (खंड II)
ले. सुनील गंगोपाध्याय
अनु. एम. रामलिंग
पृ. 1088, रु. 750/-
ISBN : 978-81-260-5195-3

पदुचेरी मरबु कविञ्ञरकालीन कवितै तोगुप्पु
संक. आर. संबंथ
पृ. 272, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-5006-2

तमिल इलाक्किया वरलरु (तमिऴ साहित्य का इतिहास)
ले. मु. वरदराजन
पृ. 456, रु. 180/-
ISBN : 81-7201-164-4 (पुनर्मुद्रण)

इरांदु पाडी
ले. तकष़ी शिवशंकर पिल्लै
अनु. टी. रामालिंगा पिल्लै
पृ. 144, रु. 85/-
ISBN: 978-81-260-1249-8 (पुनर्मुद्रण)

अय्यलगा तमिष़ इल्लाकियम
संक. सा. कंदास्वामी
पृ. 320, रु. 150/-
ISBN: 978-81-260-5198-4 (पुनर्मुद्रण)

पतुपट्टु अरैची
ले. एम. रसमानिकनर
पृ. 688, रु. 300/-
ISBN: 978-81-260-5198-4 (पुनर्मुद्रण)

अंडाल (विनिबंध)
ले. के.ए. मानवलन
पृ. 688, रु. 300/-
ISBN: 978-81-720-1633-6 (पुनर्मुद्रण)

अव्वैयार (विनिबंध)
ले. तमिष़नल
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-0057-0 (पुनर्मुद्रण)

द्रौपदियन कथै
ले. प्रतिभा राय
अनु. बालाचंद्रन बाला
पृ. 527, रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-5217-2

वड्डराधनै कथै उल्गम
ले. शिवकोट्टाचार
संपा. आर.एल. अममतजा रमैया
अनु. टी.एस. सदाशिवम, पवन्नन और इरैयादियन
पृ. 254, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-5218-9

वंदुल : थानजै वत्तर इषुतक्कल
(परिसंवाद आलेख)
संपा. एवं संकलन : आर. कामरासु
पृ. 240, रु. 115/-
ISBN : 978-81-260-5218-9

कवि का मु. शेरिफिन पदैप्पलुमै
(परिसंवाद आलेख)
संकलन और संचयन : आर. संबथ
पृ. 224, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-5196-0

तोलकप्पियर (विनिबंध)
ले. आर.एम. पेरियकृप्पन
'तमिष़नल'
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0056-2 (पुनर्मुद्रण)

का. अयोतिदास पंडितर (विनिबंध)
ले. गौतम सन्नाह
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2466-6 (पुनर्मुद्रण)

आर. चूड़ामणि (विनिबंध)
ले. के. भारती
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 81-260-5262-2

नकुलन (विनिबंध)
ले. ए. बूमिसेलवन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 81-260-5262-2

मास्ति चिरुकथैगल
ले. मास्ति वेंकटेश आयंगर
अनु. शेषनारायण
पृ. 144, रु. 120/-
ISBN : 81-720-1939-4 (पुनर्मुद्रण)

वा वे. सू. अय्यर (विनिबंध)
ले. को. सेल्वम
पृ. 143, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0827-X (पुनर्मुद्रण)

कु. अष़गिरिसाम्य (विनिबंध)
ले. वेलि रंगराजन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 81-260-2207-8 (पुनर्मुद्रण)

कु. अष़गिरिसाम्य कथैगल
(कु. अष़गिरिसाम्य की कहानियों का संकलन)
संक. की. राजनारायणन
पृ. 816, रु. 550/-
ISBN: 978-81-260-1490-3 (पुनर्मुद्रण)

सूफ़ी मेइज्ञानी गुनणगुडी मस्तान साहिब
(विनिबंध)
ले. यू. अलीबाबा
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-3161-0 (पुनर्मुद्रण)

थेर्नथेडुकपट्टा आनंदरंगपिल्लै नाटकृप्पु
संक. सुबासु
पृ. 256, रु. 180/-
ISBN: 978-81-260-4195-4 (पुनर्मुद्रण)

तमिष़ हाइकू आयिरम
संक. इरा. मोहन
पृ. 144, रु. 120/-
ISBN: 978-81-260-0828-4 (पुनर्मुद्रण)

वा. वू. ची. (विनिबंध)
ले. म. र. आरसु
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN: 978-81-260-1713-2 (पुनर्मुद्रण)

ज़ाकिर हुसैन (विनिबंध)
ले. खुर्शीद आलम ख़ान और
बी. शेख़ अली, अनु. था. सिद्धार्थन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0579-3

तेलुगु

वासिरेड्डी सीता देवी (तेलुगु)
ले. मुदीगंती सुजाता रेड्डी
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4846-8

अविश्रांत भाषा सेवकुडु
तिरुमाला रामचंद्र (शताब्दी, संगोष्ठी आलेख)
संपा. जी.एस. वरदाचारी
पृ. 108, रु. 85/-
ISBN : 978-81-260-4961-6

महा कथाकुडु : चागंति, सोमययुलु - चासो
(शताब्दी संगोष्ठी आलेख)
सं. चागंति तुलसी
पृ. 144, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4962-6

पुरीपांदा अप्पलस्वामी (विनिबंध)
ले. पी. नागेश्वर राव
पृ. 120, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5148-9

वज्जहल्ला चिना सीताराम स्वामी शास्त्री
(विनिबंध)
ले. डी.ए. गोपाल राव
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5149-6

टी. विश्वसुंदरम्मा (विनिबंध)
ले. उमा प्रभावती
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5154-0

नोरी नरसिम्हा शास्त्री (विनिबंध)
ले. अक्किराजु रमापति राव
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5154-0

बट्टिकोटा आलवार स्वामी (परिसंवाद आलेख)
संपा. अम्मांशी वेणुगोपाल
पृ. 132, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-5204-2

महादेवी वर्मा
ले. जगदीश गुप्त, अनु. चागंति तुलसी
पृ. 216, रु. 135/-
ISBN : 978-81-260-5203-5

ब्रह्मराक्षसुडु
ले. ऋषीकेश पंडा, अनु. चागंति तुलसी
पृ. 104, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-5205-9

श्रीकृष्ण देवरायलु (विनिबंध)
ले. अडपा रामकृष्ण राव
अनु. संगनाभटला नरसय्या
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5282-0

वैज्ञानिक कथालु
अनु. नागसूरी वेणुगोपाल और नामिनी सुधाकर नायडु
पृ. 364, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-5285-1

बीरेंद्रराजु रामराजु (विनिबंध)
ले. अक्कीराजु रमापति राव
पृ. 100, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-5292-9

वट्टिकोटा आलवार स्वामी (विनिबंध)
ले. सांगिशेट्टी श्रीनिवास
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5151-9

उर्दू

कबीर की कथाएँ
ले. राम अश्र राज
पृ. 240, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4871-7

बलराज कोमल (विनिबंध)
ले. भूपिंदर अज़ीज़ परिहार
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4874-8

शाहज़ादा दाराशिकोह (खंड-1)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. ख़ुर्शीद आलम
पृ. 640, रु. 500/-
ISBN : 978-81-260-4873-1

1084 की माँ (उपन्यास)
ले. महाश्वेता देवी, अनु. वीकर नासिरी
पृ. 118, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4867-0

मुंतखाब बंगला कहानियाँ
संचयन एवं संपादन : मुश्ताक़ सदफ़
पृ. 259, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-4868-7

आरामकुर्सी
ले. तोप्पिल मोहम्मद मीरान
अनु. श्रवण कुमार वर्मा
पृ. 292, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-4872-4

हिंदुस्तानी मखाजानुल मुहावरात
ले. मुंशी चिरंजी लाल देहलवी
पृ. ....., रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-4869-4

असरारुल हक़ मजाज़ (विनिबंध)
ले. शारीब रुदौलवी
पृ. 144, रु. 60/-
ISBN : 978-81-260-5241-7

मिलजुल मन
ले. मृदुला गर्ग, अनु. हैदर जाफरी सैयद
पृ. 324, रु. 350/-
ISBN : 978-81-260-5241-7

ख़ुतूत-ए-शिबली
संपा. मोहम्मद अमीन ज़ुबैरी
ले. शम्स बदायूँनी
पृ. 240, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5242-4

बातों की फुलवारी
ले. विजयदान देथा
अनु. शीन काफ़ निज़ाम
पृ. 232, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-5243-1

ख्वाज़ा गुलामुस सैयदैन (विनिबंध)
ले. रेयाज़ अहमद
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5228-8

इलियास अहमद गद्दी (विनिबंध)
ले. हुमायूँ अशरफ़
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5223-3

देवेंद्र सत्यार्थी (विनिबंध)
ले. प्रकाश मनु, अनु. हसन मोसन्ना
पृ. 166, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5224-0

ग़यास अहमद गद्दी (विनिबंध)
ले. नसीम अहमद नसीम
पृ. 124, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5229-5

कुर्तुलैन हैदर (विनिबंध)
ले. जमील अख़्तर
पृ. 148, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-5222-6

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2017 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2017 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2018-2019 तक की अवधि के लिए ही लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रिय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।
2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकाण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में है। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, क़ानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।
3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यतः भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की ग़लतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियमों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :
   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।
   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रलय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।
   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।
   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि --

ए. तुलन पत्र

ए. 1 परिसंपत्तियाँ

ए. 1.1 स्थायी परिसंपत्तियाँ (अनुसूची 8) : रु. 16.66 करोड़

ए. 1.1.1 अकादेमी द्वारा शुरुआत से ही अनुसूची 8 के स्थायी परिसंपत्तियाँ शीर्ष के अंतर्गत दर्शाए गए भवन, जिसका मूल्य रु. 362.59 लाख है, पर मूल्यह्रास नहीं लगाया गया है। गत वर्ष की रपट में इस ओर इंगित करने के बावजूद प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।

ए. 1.2 चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि (अनुसूची 11) : रु. 20.06 करोड़

ए. 1.2.1 वर्ष 2016-2017 में साहित्य अकादेमी के केनरा बैंक द्वारा सुमेलित विवरण के अनुसार श्री सुनील शेजाले को सामान्य भविष्य निधि से रु. 4.00 लाख की निकासी हेतु भुगतान सामान्य भविष्य निधि खाते के स्थान पर साहित्य अकादेमी के केनरा बैंक खाते से किया गया। इसके परिणामस्वरूप केनरा बैंक शेष कम तथा सामान्य भविष्य निधि शेष अधिक हो गया है।

बी. आय एवं व्यय खाता :

बी. 1 मार्च 2017 की अवधि के दौरान रु. 3.60 लाख की राशि को चालू वर्ष के खर्च में पूर्व अवधि व्यय के रूप में दर्शाया गया। चूँकि पिछले वर्ष के खातों में पूर्व अवधि व्यय के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया था, इसलिए मार्च 2017 के दौरान किए गए भुगतान के कारण आय और व्यय खाते में अधिक व्यय दर्शाया गया। इसके परिणामस्वरूप पूर्व अवधि व्यय रु. 3.60 लाख कम तथा वर्तमान वर्ष का व्यय रु. 3.60 लाख अधिक है।

सी. सामान्य

साहित्य अकादेमी की महत्त्वपूर्ण लेखानीति है कि, "सेवानिवृत्ति के बाद जो भी देयक एवं लाभ कर्मचारियों को मिलता है जैसे मृत्यु हो जाने पर ग्रेच्युटी, अवकाश के बदले नकद राशि इस संदर्भ में यह आवश्यक नहीं है कि आहरित अनुदान ग़ैर-योजना के रूप में हो, जो राशि कर्मचारियों को देयक के रूप में है जो सेवानिवृत्ति एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों के अनुदान के रूप में है।" एस-15 का आई.एस.ए.आई. यह दर्शाता है कि कर्मचारियों के लाभ एवं लाभांश बीमांकीकी मानक पद्धति के द्वारा ही संभव है। इस प्रकार, सेवानिवृत्ति के लेखाओं के लाभ संगठन लेखा मानक 15 के साथ सामंजस्य रखेगा।

डी. सहायता अनुदान

वर्ष 2016-2017 के लिए प्राप्त एवं उपयोगार्थ सहायता अनुदान का ब्यौरा निम्नलिखित है–

(राशि लाख में)

ब्यौरा	योजनागत	ग़ैर-योजनागत	योग
वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	2295.83	984.54	3280.37
गर्त वर्ष का अव्ययित शेष	436.16	175.02	611.18
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	353.02	65.62	418.64
कुल उपलब्ध पूँजी	3085.00	1225.18	4310.18
वर्ष के दौरान व्यय	2934.50	1225.18	4159.68
अव्ययित शेष	150.51	—	150.51

वित्तीय वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास रु. 150.51 लाख की राशि का अव्ययित शेष है।

(5) पिछले अनुच्छेदों में दिए गए विवरणों को देखने के पश्चात् हम सूचित करते हैं कि इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय प्राप्ति एवं भुगतान लेखा बहियों के अनुरूप सही प्रकार से तैयार किया गया है।

(6) हमारे विचार और हमारी सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और लागू नियमों के अनुरूप है।

(क) यह 31 मार्च 2017 को साहित्य अकादेमी के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है ; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

स्थान : नई दिल्ली — महानिदेशक लेखापरीक्षा

दिनांक : 09 नवंबर 2017 — (केंद्रीय व्यय)

''प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।''

अनुलग्नक

(1) आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा चार्टर-लेखाकार फार्म द्वारा 31 मार्च 2017 तक किया गया तथा उसे उपयुक्त पाया गया।

(2) आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था निम्नलिखित के कारण अपर्याप्त है :–

(i) प्रबंधन द्वारा वैधानिक लेखापरीक्षा की आपत्तियों का उचित प्रत्युत्तर अपेक्षित है। वर्ष 2006-2007 से 2012-2014 तक की कालवधि के 25 अनुच्छेद बकाया हैं।

(ii) 31-03-2017 के रु. 34.73 लाख की राशि के लिए गए अग्रिम बकाया हैं, जिनका शीघ्र समायोजन किया जाना आवश्यक है।

(iii) साहित्य अकादेमी के खातों में गलत/दोहरे भुगतान के मामले पाए गए हैं। भुगतान जारी करने की प्रणाली को मज़बूत किया जाना चाहिए।

(iv) टीए/डीए के भुगतान हेतु विभाग ने निर्धारित प्रारूप का उपयोग नहीं किया। आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई शुरू की जानी चाहिए।

(v) बिलों की फोटोकॉपी के आधार पर भुगतान किए गए, कुछ मामलों में मूल बिल नहीं मिले।

(vi) वाउचर शीर्षों के वर्गीकरण के बिना भुगतान के लिए पारित किए गए (अर्थात् उपभोग्य/ग़ैर-उपभोग्य)। वाउचरों को भुगतान और रद्द के रूप में चिह्नित नहीं किया गया।

(3) स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

(i) केवल 2013-14 तक की स्थाई परिसम्पत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया।

(ii) 31 मार्च 2017 तक अकादेमी के पास रु. 16.66 करोड़ मूल्य की स्थाई परिसम्पत्तियाँ हैं किन्तु अकादेमी द्वारा रखे गए रजिस्टर में खातों में समस्त मदों के विवरणों को दर्शाया नहीं गया तथा खातों में दर्शायी गई स्थाई परिसंपत्तियों के मूल्य की सत्यता को सत्यापित नहीं किया जा सका।

(4) सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

(i) पुस्तकालय की पुस्तकों का प्रत्यक्ष सत्यापन वर्ष 2016-17 तक केवल तीन भाषाओं कन्नड, मलयाळम् तथा तमिल का किया गया।

(ii) 2015-2016 तक लेखन-सामग्री तथा उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया तथा उसे उपयुक्त पाया गया।

(5) सांविधिक देय राशि के भुगतान में नियमितता

31 मार्च 2017 समाप्ति वर्ष लेखाओं के अनुसार छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान बकाया नहीं था।